जून - 2016
वर्ष - 14 अंक - 3

सुगन्ध

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र
की गृह-पत्रिका

संपादकीय

दरारें भर जाएं तो अच्छा है...

भारत देश के ऐतिहासिक और सामाजिक झरोखों में झांकने पर पता चलता है कि उनमें अनेक दरारें मौजूद हैं, जिनकी वजह से सार्वभौमिक विकास के जितने भी कार्यक्रम बनते हैं, वे सफल नहीं हो पाते। जब हम स्वच्छ प्रशासन की बात करते हैं तो सामाजिक वर्गीकरणों के कारण हमारा निष्पादन प्रभावित होता है। जब हम औद्योगिक विकास की बात करते हैं तो हमें कई मोर्चों पर विभिन्न प्रकार की जटिलताओं का सामना करना पड़ता है। जब हम महिला सशक्तीकरण की बात करते हैं तो समाज में महिलाओं की गैर-बराबरी की समस्या खड़ी होकर हमें मुँह चिढ़ाने लगती है और जब हम हिंदी की बात करते हैं तो हमें प्रांतीयता और अप्रासंगिकता की समस्या से दो-चार होना पड़ता है।

इस बात को बस यूँ ही नहीं उठाया जा रहा है, बल्कि इसलिए उठाया जा रहा है कि देश के भाषाई दरार में एक बहुत ही सकारात्मक भराव के लक्षण परिलक्षित हुए हैं। बात हाल ही में समाप्त हुए तमिलनाडु राज्य के चुनाव प्रचार से जुड़ी हुई है। जैसाकि हम जानते हैं कि आज चेन्नई और बैंगलुरु में देश के सभी राज्यों के सॉफ्टवेयर एवं अन्य क्षेत्रों से जुड़े लोग अपनी रोजी-रोटी के खातिर वहाँ रह रहे हैं और बस भी रहे हैं। इसी बात का फायदा उठाने के लिए तमिलनाडु की राजनीतिक पार्टियों ने जहाँ गैर-तमिलभाषी लोगों की संख्या अधिक है, उन क्षेत्रों में अपने चुनावी बैनर हिंदी में भी लगवाए।

इससे राजनीतिक मजबूरी के साथ-साथ चिंतन के स्तर पर सकारात्मकता भी झलकती है। राजनीतिक दलों के इस कदम का कुछ दूरगामी परिणाम होगा या नहीं, अभी स्पष्टत: नहीं कहा जा सकता है। लेकिन दशकों पहले दफन हुई बात अब फिर चर्चा में आ गई है और व्यापक रूप से भाषा प्रेमियों और खासकर हिंदी प्रेमियों को बहुत उत्साहित करने और तमिलनाडु राज्य के माथे पर लगे हिंदी विरोधी होने के कलंक को मिटाने वाली है। हिंदी के विस्तार और प्रचार-प्रसार के संदर्भ में एक बार पंडित नेहरु ने कहा था कि 'हिंदी स्वयं अपनी ताकत से बढ़ेगी।'

संभवत: उस युगद्रष्टा ने उसी समय हिंदी की उस ताकत को महसूस कर लिया था, जो ताकत अब तमिलनाडु राज्य की राज्य स्तरीय राजनीतिक पार्टियों को तमिलनाडु में अपने बैनर हिंदी में लगाने के लिए उद्वेलित किया हो। आज 15-20 वर्ष पहले दूरदर्शन का जब कोई संवाददाता चेन्नई से किसी समाचार का रिपोर्टिंग करता था, तो कई बार उसे हिंदी के बदले अंग्रेजी में रिपोर्टिंग करना पड़ता था। लेकिन तमिलनाडु के इस चुनाव में प्राय: सभी निजी चैनलों के संवाददाताओं को अपनी प्रतिक्रिया देने के लिए हिंदी बोलने वाले लोग मिल ही जा रहे थे। वास्तव में यह एक सकारात्मक और स्वागत योग्य विकास है। साथ ही यह भी सच है कि तमिलनाडु राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी हिंदी का नामोनिशान नहीं है। फिर भी उपरोक्त घटनाओं से 'हिंदी विकासोन्मुख हुई है' - इस तर्क को बल मिलता है। लोकतंत्र की यही खूबसूरती है कि वह जनभावनाओं का आदर करते हुए विकसित होता है।

यह कहना जरूरी है कि लोकतंत्र में मतभेद और असहमति के अंतर को समझते हुए आगे बढ़ना बहुत जरूरी होता है, अन्यथा वर्ग संघर्ष पैदा हो सकता है। राजभाषा हिंदी के मामले में भी देश ने इसी भावना के साथ आगे बढ़ना शुरु किया था। आज ऐसा महसूस किया जा रहा है कि दक्षिण के राज्यों में हिंदी की स्थिति में बहुत प्रगति हुई है और उत्तर के राज्यों में गिरावट आई है, जो वस्तुत: सही भी है। बैंगलुरू, कोचीन, त्रिवेंद्रम जैसे शहरों में हिंदी भाषी ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए दूकानदार हिंदी में बात करने हेतु विशेष प्रयास करते हैं। दक्षिण भारत के उपरोक्त बड़े शहरों में जहाँ पर भी देश के अन्य राज्यों से आए हुए मजदूर निवास करते हैं, वहाँ भी हिंदी बोलने व समझने के उदाहरण मिल जाते हैं।

भारत के इस भाषाई दरार में अब कमी आने से सुगंध परिवार सुखद एहसास करने लगा है और आशा है कि आगे भी इस दरार को पाटने का उपक्रम चलता रहेगा। इससे न केवल भारत की राजभाषा मजबूत होगी, बल्कि भारत का लोकतंत्र और सामाजिक एकता के लिए संजीवनी मिलेगी।

इन्हीं धारणाओं के साथ सुगंध का जून अंक आपको समर्पित करते हुए धन्यवाद देना चाहता हूँ अपने सुधी पाठकों, कलमकारों, सलाहकारों और अपने शीर्षस्थ प्रबंधन का, जिनके निरंतर सहयोग के कारण सुगंध का उत्तरोत्तर विकास हुआ है। शीघ्र ही सुगंध अपने प्रकाशन की 14वीं वर्षगांठ मनाने वाली है, सितंबर 2016 का अंक सुगंध को स्मित् परिहास के साथ उसकी वय:संधि की उम्र में पहुँचा देगा और यहाँ से हम सबकी जिम्मेदारी और बढ़ जाएगी। अपेक्षाओं सहित...

संपादक

'सुगन्ध'

वी एस पी की त्रैमासिक गृह-पत्रिका

वर्ष-14 अंक-3 जून, 2016

संपादक

ललन कुमार

उप-संपादक

वी सुगुणा

गोपाल

संपादकीय कार्यालय

राजभाषा विभाग

कमरा सं.245, पहला तल

मुख्य प्रशासनिक भवन

विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र

विशाखपट्टणम-530 031

दूरभाष व फैक्स: 0891-2518471

मोबाइल: 9989317329 & 9989888457

ई-मेल: vspsugandh@rediffmail.com

vspsugandh@gmail.com

'सुगन्ध' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं और उनके प्रति 'विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र प्रबंधन' जिम्मेदार नहीं है।

'सुगंध' पत्रिका हमारे संगठन के वेबसाइट 'www.vizagsteel.com' के 'Publications' लिंक में भी उपलब्ध है।

सृजनात्मक स्तंभ

कहानी

करवा चौथ	श्री चित्रेश	9
छोटई कहार	श्री सुरेश चंद्र शर्मा	16
बन गया मकान	श्री रतन राहगीर	32
पहल	श्रीमती श्वेता रानी	41

बाल-सुगन्ध

खनन प्रक्रिया के दौरान पर्यावरण संरक्षण...	मास्टर विजय पाल	37
खनन प्रक्रिया के दौरान पर्यावरण संरक्षण...	मास्टर वी वरप्रसाद	37
मेरे जीवन का लक्ष्य	सुश्री शुभांगी अहिरे	38
जल जंगल जमीन व यकीन का स्वाद	सुश्री सुप्रिया	39
पिता हैं तो	सुश्री आकांक्षा कुमारी	39

कविता

श्री राम प्रसाद यादव की कविताएँ		22-23
श्री राजेंद्र तिवारी के गीत व गजलें		24-25

लेख

धमन भट्ठी कास्ट हाउस प्रबंधन	श्री ललन कुमार	5
लखनऊ दस्तरख्वान	श्री सुरेंद्र अग्निहोत्री	12
कितना प्रासंगिक है 'मेक इन इंडिया' अभियान	श्री अशोक दि चिंचोलकर	19
कलम का सजग सिपाही - मुंशी प्रेमचंद	डॉ राम प्यारे प्रजापति	29
तो मेरी ओर से हाँ (व्यंग्य)	डॉ अशोक गौतम	34
भारत में उभरता रक्षा क्षेत्र एवं इस्पात की भूमिका	श्री चंद्रशेखर प्रसाद	45

मानक स्तंभ

अध्यात्म - आत्मसंयम	40
संगीत सरिता	28
वी एस पी के बढ़ते कदम - स्ट्रक्चरल मिल	35-36
आओ भाषा सीखें	48
कार्य-कलाप	26-27

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन

संगठन की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक 10 जून, 2016 को आयोजित हुई। समिति के अध्यक्ष एवं संगठन के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पो मधुसूदन ने अपेक्षा की कि संगठन के सभी विभागों द्वारा शतप्रतिशत हिंदी कार्यान्वयन हेतु आवश्यक उपाय किये जायें। साथ ही उन्होंने राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित वार्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति के प्रयास का भी सुझाव दिया। समिति को सैप सॉफ्टवेअर में 'बीजक', 'कोटेशन' व 'बिक्री आदेश' जैसे प्रपत्रों के द्विभाषी प्रयोग और अन्य प्रपत्रों पर जारी कार्य की सूचना दी गई। समिति ने मार्च, 2016 के दौरान 'मेक इन इंडिया अभियान में इस्पात उद्योग की भूमिका' पर इस्पात मंत्रालय के तत्वावधान में सफलतापूर्वक आयोजित संगोष्ठी के प्रति संतुष्टि व्यक्त की। बैठक में निदेशक (परियोजना) श्री पी सी महापात्रा, निदेशक (कार्मिक) डॉ जी वी एस प्रसाद, निदेशक (वाणिज्य) श्री प्रवीर रायचौधरी, मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री बी सिद्धार्थ कुमार एवं कार्यपालक निदेशक तथा महाप्रबंधक गण उपस्थित थे। बैठक का संचालन सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री ललन कुमार ने किया।

'सुगंध' का अत्यंत आकर्षक मुखपृष्ठ वाला मार्च, 2016 का अंक पाकर बेहद प्रसन्नता हुई। इस अंक के साथ ही 'मेक इन इंडिया' का निर्माण संगोष्ठी विशेषांक भी प्राप्त हुआ। 'मेक इन इंडिया' पर इस्पात उद्योग पर केंद्रित संगोष्ठी विशेषांक में प्रकाशित सभी आलेख महत्वपूर्ण हैं। कहानी 'सीढ़ी' और 'अधूरी जिंदगी' मर्मस्पर्शी हैं और पाठक को प्रभावित करती हैं। सुवेश यादव की कविताएँ अच्छी हैं। भारत के इस्पात उद्योग को रेखांकित करता लेख 'बढ़ता इस्पात उद्योग : बदलता भारत' महत्वपूर्ण है। संयंत्र की विभिन्न गतिविधियाँ एवं राजभाषा विषयक कार्यकलापों की रंगीन चित्रयुक्त प्रस्तुति सराहनीय है। राजभाषा के प्रति यह आकर्षण संयंत्र में लगातार रहे, यही कामना है। कुशल संपादन के लिए संपादक एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। अगले अंक की प्रतीक्षा में...

- श्री विष्णु वर्मा, ककोली

'सुगंध' का मार्च, 2016 अंक प्राप्त हुआ। 'सुगंध' एक संस्थागत पत्रिका है, जिसमें सकारात्मक दृष्टिकोण का साहित्य प्रकाशित किया जा रहा है। इसके लिए आप बधाई के पात्र हैं। बहुत सी संस्थागत पत्रिकाएँ देखी हैं, परंतु 'सुगंध' सबसे ऊपर लगी। दूसरी बात यह कि आज के युग में स्वयं को सकारात्मक बनाये रखना अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। इस सच्चाई ने मुझे आपका कायल बना दिया। डॉ अमिता दुबे एवं श्रीमती सुधा गोयल की कहानियाँ मार्मिक बन पड़ी हैं। बाल-कविताओं के अंतर्गत छात्राओं की कविताएँ प्रकाशित की गई हैं। अच्छा लगा। पत्रिका का मुखपृष्ठ बहुत कुछ कह रहा है।

- श्री रामकुमार आत्रेय, कुरुक्षेत्र

'सुगंध', मार्च-2016 का अंक प्राप्त हुआ। मुखपृष्ठ पर 'घोंसला' का चित्र संग्रहणीय है। 'सुगंध' पत्रिका की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि इसका मुखपृष्ठ सदैव नये संदेश, नई प्रेरणा एवं नई ऊर्जा के साथ पाठकों को जागृत करता है। डॉ अमिता दुबे की कहानी 'सीढ़ी' तथा डॉ रमेश शर्मा की कहानी 'पूर्वाग्रह' में कहानी विधा के महत्वपूर्ण आयामों, कथावस्तु, वातावरण, कथोपकथन एवं संवाद में अत्यंत सुंदर समन्वय है। दोनों कहानियों में एक सशक्त रचनात्मक कौशल एवं रचना-धर्मिता का परिचय दिया गया है। सुश्री आकांक्षा मिश्रा ने अपने आलेख 'शिक्षा प्रणाली में भारतीय संस्कृति' में आधुनिक शिक्षा प्रणाली का अच्छा विश्लेषण किया है। सुश्री प्रिया गोगोई ने अपने यात्रा संस्मरण 'मेरी अविस्मरणीय पर्वतीय यात्रा' में एक अच्छी लेखकीय क्षमता का परिचय दिया है। यात्रा-संस्मरण को शब्दों में उतारना प्रशंसनीय कार्य है। 'सुगंध' के अन्य रचनाकारों ने भी पूरे परिश्रम और निष्ठा के साथ अपनी लेखनी चलाई है।

शुभकामनाओं एवं सद्भावना सहित

'सुगंध' के अगले अंक की प्रतीक्षा में...

- डॉ राजनारायण अवस्थी, हैदराबाद

'सुगंध', मार्च-2016 अंक प्राप्त हुआ। बिना किसी संकोच के कहना पड़ रहा है 'यथा नाम तथा गुण'। 'सुगंध' पत्रिका की सुगंध सीमित न होकर दूर-दूर शहर राज्य को सुवासित कर रही है। विशेष तो यह कि हिंदीतर भाषी क्षेत्र से राजभाषा हिंदी में स्तरीय पत्रिका का प्रकाशन है।

पत्रिका को देखते ही हृदय प्रफुल्लित हो गया। मैं इसे देखने को बहुत उत्सुक था। सच कहूँ तो मुझे ऐसा लग रहा था - इस्पात निगम की पत्रिका है, जिसके इस्पात संयंत्र के साथ थोड़ा साहित्य में कहानी, कविता आदि होगी, जैसा कि कुछ पत्रिकाओं में देखा है। लेकिन जब इस पत्रिका का आवरण पृष्ठ देखा, मुग्ध हो गया। बया पक्षी उसका नीड़ और काव्यमयी पंक्तियाँ - 'सृष्टि के निर्माण का यत्न, न हो कम। चर-अचर सबके लिए सुरक्षा है प्रथम।' वाह-वाह उद्देश्यपूर्ण है। पत्रिका की छपाई, पेपर अति सुंदर।

संपादकीय 'सृजित हो नया वितान' में सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों को जीवित रखने पर जोर दिया गया तो श्री गोपाल जी 'चिंतन से जुड़ती औद्योगिक सुरक्षा' लेख के माध्यम से संगठन सुरक्षा पर बल देते हुए नई सोच देते हैं। दोनों के लेख पत्रिका को महत्वपूर्ण बना देते हैं।

अंक की कहानियाँ, कविताएँ पठनीय हैं। डॉ अमिता दुबे की 'सीढ़ी' कहानी अच्छी है। डॉ रमेश शर्मा की कहानी के साथ-साथ श्रीमती सुधा गोयल की 'तोता, कैंची और मैं' भी ठीक है। रहीम पर लिखा गया लेख संग्रहणीय है। इसी क्रम में श्री पी के महापात्रा का महात्मा गांधी पर लिखा गया लेख भी आता है, जिसमें उनसे जुड़ी कुछ नये प्रसंग हैं। श्री सुवेश यादव की विविध रंग की कविताओं के साथ बाल-स्तंभ में 'शिक्षा प्रणाली में भारतीय संस्कृति' से जुड़ा लेख सुंदर लिखा गया है। कविताएँ भी बच्चों के स्तर से अच्छी बन पड़ी हैं। व्यंग्य लेख साधारण है। 'आओ भाषा सीखें' सराहनीय प्रयोग है। परंतु इसमें यह स्पष्ट नहीं है कि किस भाषा को सिखाया जा रहा है। यदि भाषा का नाम लिख दें तो बेहतर रहेगा। पत्रिका को स्तरीय बनाने में आपका अथक परिश्रम, लगन की जितनी प्रशंसा करूँ, कम है। विशेषकर श्री ललन कुमार, श्री गोपाल जी को हार्दिक बधाई के साथ साथ सुगंध परिवार को साधुवाद। पत्रिका के कार्यकलाप के अंतर्गत राजभाषा की गतिविधियों के चित्र, समाचार देखते हुए लगता है पत्रिका दिन-ब-दिन प्रगति के सोपान कीओर अग्रसर होते हुए लक्ष्य को प्राप्त करेगी।

- श्री शिव डोयले, विदिशा

मान्यवर संपादक महोदय,

बड़े हर्ष की बात है कि आपके जैसे उत्तम संपादक के जरिए 'सुगंध' त्रैमासिक पत्रिका सुचारु रूप से प्रकाशित होकर हिंदी प्रेमियों के दिलों को लुभा रही है। हिंदी के विकास में आपका सहयोग स्मरणीय है।

'आप सुगंध के साथ अपनी सहृदयता बनाये रखेंगे और हिंदी के नये वितान को सजाने-सँवारने में अनवरत संलिप्त रहेंगे।' उक्त संपादकीय आकांक्षा का हृदयपूर्वक अभिनंदन करते हुए हम सहर्ष कह सकेंगे कि आपकी अभिलाषा अवश्य सफल होगी। आपके मार्च, 2016 की पत्रिका 'सुगंध' के मुखचित्र ने चर-अचर सुरक्षा पर ध्यान देने की प्रेरणा सबके मन में जगाई। इसपर जगी स्फूर्ति के चरण भविष्य की ओर सानंद अगसर होते रहेंगे। उक्त सुंदर चित्र के अवलोकन पर जगी स्फूर्ति में प्रस्तुत छोटी सी कविता आपकी सेवा में (पृष्ठ सं.21 में देखें)...

- डॉ एम शिवप्रसाद राव, कोत्तूरु

आर आई एन एल की गृह पत्रिका 'सुगंध' अंक प्राप्त हुआ। साथ ही निर्माण का अंक भी मिला। सुगंध के मुखपृष्ठ का चित्र स्वयं से सृष्टि की सुंदर रचना है। चित्र प्रथम दृष्टि में ही मन को मोहित करनेवाला है। पत्रिका में प्रकाशित इस्पात केंद्रित लेखों से महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। साहित्यिक रचनाओं को आपने इसमें शामिल कर बड़े पाठक वर्ग तक पत्रिका को पठनीय बनाने का पुण्य कार्य किया है। पत्रिका का मुद्रण बहुत सुंदर और स्तरीय है। मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार कीजिए।

- डॉ श्री राम परिहार, खण्डवा

सर्जनात्मक सूक्ति और सांकेतिक आवरण में महमहाती वैचारिक समृद्धि सहेजे 'सुगंध' का मार्च 16 अंक हस्तगत हुआ। स्मरण हेतु हार्दिक आभार।

अंक में हमेशा की भांति सारगर्भित संपादकीय के अलावा मनोज कुमार सिन्हा एवं डॉ दादूराम शर्मा के आलेख विशेष लगे। कविताओं में सुवेश यादव की रचनाएँ सुख देती हैं। कहानियाँ ठीक लगीं। मानक स्तंभ तो सुगंध की विशिष्टता हैं। उत्कृष्ट अंक हेतु बधाई। आपके द्वितीय संपादन सत्र में पत्रिका व्यापकता के नये आयाम स्थापित करेगी, ऐसा विश्वास है।

- श्री राजेंद्र तिवारी, कानपुर

धमन भट्ठी कास्ट हाउस प्रबंधन

- श्री ललन कुमार -

इस्पात संयंत्र में धमन भट्ठी (BF) का कास्ट हाउस जोखिमपूर्ण कार्यक्षेत्रों में से एक होता है। प्रचालकों को विषैली गैसों, धुएँ, धूल से भरे कार्यक्षेत्र में तप्त धातु के समीप स्लैग रनरों व लैडलों के साथ बहुत ही कठिनतापूर्वक कार्य करना पड़ता है। कास्ट हाउस उपस्कर के आविष्कार व स्थापना से पूर्व, टैपहोल हाथ से खोले व बंद किये जाते थे। टैपहोल खोलने के लिए इस्पात के बार व स्लेड्ज हैमर का उपयोग किया जाता था, जबकि टैपहोल बंद करने के लिए उसमें लंबे वजनदार बार के उपयोग के माध्यम से चिकनी मिट्टी अथवा रीफ्रैक्टरी आदि भरा जाता था। इसके अलावा धमन भट्ठी में ब्लॉस्ट आपूर्ति को बंद करना पड़ता था, क्योंकि धमन भट्ठी में दबाव की स्थिति में टैपहोल को ठीक से बंद करना संभव नहीं था। ब्लॉस्ट की आपूर्ति को इस प्रकार बंद करते रहने से लगातार उत्पादन का नुकसान होता था।

संयुक्त राष्ट्र अमेरीका के सैम्यूल डब्ल्यू वॉगेन ने **1895** में प्रथम मडगन का आविष्कार किया। उसने जिस न्युमैटिक मडगन मशीन का आविष्कार किया, वह भाप से प्रचालित होती थी। उसमें अलग किये जाने योग्य नॉजल का उपयोग होता था। वर्ष **1901** में जर्मनी के एर्नेस्ट मेने द्वारा ऑक्सीजन लेंस के आविष्कार से टैपहोल संबंधी कार्य में भारी परिवर्तन आया। $^{1}/_{8}$ इंच के पाइप के माध्यम से ऑक्सीजन भेजकर उसे जलाते हुए टैपहोल खोला जाता था, जो पुरानी हस्तचालित प्रक्रिया की तुलना में आसान था। संयुक्त राष्ट्र अमेरीका के एड्गर ई ब्रोशियस और जोसफ ई जुडी ने **1921** में ड्रिलिंग के माध्यम से टैपहोल खोलने की पद्धति सुझायी। ब्रोशियस ने **1924** में ड्रिलिंग व लॉंसिंग दोनों से युक्त उपस्कर का आविष्कार भी किया।

चूँकि धमन भट्ठी का प्रभावी प्रचालन प्रत्यक्ष रूप से उसके कास्ट हाउस उपस्कर के अबाध गति से प्रचालन पर निर्भर रहता है, अत: धमन भट्ठी में कम लागत पर उच्च उत्पादकता के साथ प्रचालन हेतु उत्कृष्ट कास्ट हाउस की अत्यंत आवश्यकता होती है।

टैपहोल को सुरक्षित व त्वरित गति से खोलने के लिए एक उपयुक्त प्लग जरूरी है, जो टैपहोल मॉस के साथ पूरे टैपहोल चैनल को भर देता है। तथापि, टैपहोल चैनल और टैपहोल ब्लॉक का कार्यकाल बढ़ाने के क्रम में टैपहोल खोलने के लिए बार-बार ड्रिलिंग करने की भी सुविधा होनी चाहिए।

कास्ट हाउस तल के प्रतिकूल कार्य वातावरण में ऐसे उपस्कर की आवश्यकता होती है, जो अधिक ऊष्मा की उपस्थिति में उपयुक्त व दीर्घकालिक प्रचालन को सुनिश्चित कर सके। आधुनिक धमन भट्ठी की टैपिंग प्रौद्योगिकी के अंतर्गत सुदृढ़, उपयुक्त, टिकाऊ व सक्षम कास्ट हाउस उपस्कर की आवश्यकता होती है, जिससे कास्ट हाउस की मौजूदा कठिन परिस्थितियों में उच्च निष्पादन हो सके। उच्च मानकों के अनुरूप बनाये गये एवं कार्यशाला में परीक्षित अत्याधुनिक खिंचाव विश्लेषण उपकरणों के उपयोग के माध्यम से उपस्करों का अभिकल्प एवं विश्लेषण किया जाता है।

बृहद धमन भट्ठी के प्रबंधन को उच्च स्तर के निष्पादन हेतु प्रभावी व उपयुक्त कास्ट हाउस उपस्करों की आवश्यकता होती है। उच्चतम प्रचालन दक्षता एवं प्रचालन लागत में कमी के

> पिछले **125-130** वर्षों से टैपिंग प्रौद्योगिकी में बहुत सुधार हुआ। पहले उपस्कर अभिकल्प के यांत्रिकी पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए उसके विकास हेतु प्रयास किये जाते थे, जबकि हाल ही के प्रयासों में इलेक्ट्रिक व हाइड्रॉलिक कंट्रोल के विकास हेतु ध्यान केंद्रित किया जाने लगा। टैपहोल के लंबे कार्यकाल एवं हर्थ रीफ्रैक्टरी पर हैमर इंपाक्ट ऊर्जा के प्रभाव को कम करते हुए हार्डर टैपहोल मॉस के प्रावधान हेतु भविष्य में प्रयास किये जाने अपेक्षित हैं।

प्रयासों के परिणामस्वरूप कास्ट हाउस उपस्कर प्रौद्योगिकी का विकास करते हुए नई पीढ़ी के कास्ट हाउस उपस्कर बनाये गये, जिनसे विभिन्न स्तरों पर निष्पादन के माध्यम से धमन भट्ठी के टैपहोल व हर्थ का अधिकतम संरक्षण सुनिश्चित किया जाता है।

कास्ट हाउस के मशीनीकरण व स्वचालन से शारीरिक श्रम में पर्याप्त कमी लाई जा सकी। कास्ट हाउस के मशीनीकरण के लिए अपेक्षित है कि कास्ट हाउस के उस तल में फ्लश व फ्लैट रनर कवरों के माध्यम से मोबाइल अनुरक्षण उपस्कर उपलब्ध कराते हुए उस तल के सभी क्षेत्रों तक आसानी से पहुँचा जा सकें। डेडिकेटेड कास्ट हाउस पी एल सी में उपलब्ध सॉफ्टवेयर के रेडियो नियंत्रित टैपिंग उपस्कर के संयोजन के माध्यम से सभी गतिविधियों के स्वचालन, अर्थात डीडस्टिंग डैंपर स्थिति नियंत्रण, टैपहोल ड्रिल एवं मडगन प्रचालन आदि से शारीरिक श्रम कम हुआ है।

प्रमुख कास्ट हाउस उपस्कर निम्नलिखित अनुसार हैं :

टैपहोल ड्रिल :

बेहतर टैपिंग के लिए टैपहोल चैनल का उच्च निष्पादन अपेक्षित है। उपयुक्त टैपहोल मॉस एवं अनुकूल रूप से टैपहोल खोलने की कार्यनीति के विकल्प के अलावा, टैपिंग मापदंडों के अनुकूलतम समायोजन आवश्यक हैं। टैपहोल ड्रिल्स में अधिकतम तन्यता एवं प्रमाणित उच्च क्षमता वाले ड्रिल हैमरों के संयोजन द्वारा प्रभावी ड्रिलिंग को सुनिश्चित किया जाता है।

टैपहोल ड्रिल्स में निम्नलिखित गुण अपेक्षित हैं :

- अविलंब खोलने की सुविधा
- सुचारू प्रचालन के माध्यम से टैपिंग दर को अधिकतम करने की सुविधा
- सुरक्षा व अन्य उपस्कर के संरक्षण हेतु कम से कम ऑक्सीजन लॉंसिंग की आवश्यकता
- उपयोग के उपरांत बार के आसानी से परिवर्तन की सुविधा
- उपस्कर अनुरक्षण लागत में कमी एवं हैमर के कार्यकाल में वृद्धि

इसके अलावा, टैपहोल का कार्यकाल बढ़ाने, टैपहोल की मरम्मतों की संख्या कम करने एवं धमन भट्ठी की उपलब्धता बढ़ाने हेतु महत्वपूर्ण टैपहोल क्षेत्र का अधिकतम संरक्षण सुनिश्चित करना होगा। इस प्रकार अनुकूलतम टैपिंग प्रचालन से टैपहोल एवं धमन भट्ठी हर्थ का संरक्षण सुनिश्चित होता है, जिससे धमन भट्ठी का कार्यकाल बढ़ता है।

उत्कृष्ट अपघर्षण व संक्षारण रोधी क्षमता सहित उच्च गुणवत्ता वाले टैपहोल मॉस के विकास से टैपिंग समय में अब टैपहोल संबंधी समस्याओं में काफी कमी आई है। उच्च गुणवत्ता पूर्ण टैपहोल मॉस से टैपिंग उपस्कर के कार्यकाल में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। न्युमैटिक टैपहोल ड्रिलिंग मशीनों के प्रचालन में कुछ सीमाएँ थीं, जैसे कि टैपहोल खोलने में बार-बार समस्याएँ होती थीं और प्राय: ऑक्सीजन लॉंसिंग का प्रयोग किया जाता था। इससे टैपहोल की क्षति और अनुरक्षण लागत में वृद्धि होती थी। इसके समाधान हेतु पूर्णत: हाइड्रॉलिक टैपहोल ड्रिल्स का उपयोग किया जाने लगा, जो आधुनिक टैपहोल मॉस के सर्वथा अनुकूल है।

आजकल टैपहोल ड्रिल सामान्यत: धमन भट्ठी के कार्य वातावरण के अनुकूल उपयुक्त सेंसरों से लगाये जाते हैं। इन सेंसरों से टैपिंग तकनीक प्रक्रिया के अनुश्रवण एवं स्वचालन हेतु ड्रिलिंग मापदंड फीडबैक प्राप्त होता है। टैपहोल ड्रिल्स की स्वचालन विशेषताओं में सामान्यत: अनुकूलतम ड्रिलिंग (फीड फोर्स व ड्रिलिंग रोटेशन के लगातार अनुश्रवण व समायोजन) और स्वत: टैपहोल लंबाई मापन शामिल हैं।

आम तौर पर टैपहोल ड्रिल में निम्नलिखित तीन प्रकार के ड्रिल रॉड प्रयुक्त होते हैं :

- थ्रेडेड अपसेट फोर्जड ड्रिल बिट के साथ सॉलिड ड्रिल रॉड
- परस्पर बदलने योग्य स्टील ड्रिल बिट युक्त ड्रिल रॉड
- परस्पर बदलने योग्य ड्रिल बिट्स (विंग बिट्स) के साथ ड्रिल रॉड

मडगन मशीन

धमन भट्ठियों में टैपहोल बंद करने हेतु मडगन मशीनों का उपयोग किया जाता है। किसी भी स्थिति में धमन भट्ठी के

टैपहोल को बंद करना सुरक्षा के विचारगत बहुत ही आवश्यक है। आधुनिक धमन भट्ठियों में टैपिंग प्रौद्योगिकी हेतु उच्च गुणवत्ता वाले मडगन की आवश्यकता होती है, जिसमें क्षरण रोधी व त्वरित गति से भरे जानेवाले टैपहोल मॉस के उपयोग की सुविधा हो। आज के उच्च गुणवत्ता पूर्ण टैपहोल मॉस का मडगन मशीन के अनुकूलतम तापमान नियंत्रण के बगैर प्रहस्तन किया जा सकता है।

मडगन मशीन के हाइड्रॉलिक ड्राइव से आधुनिक वजनदार टैपहोलों का प्रभावी व सुरक्षित प्रचालन सुनिश्चित होता है। मडगन मशीनों का निर्माण विशेष रूप से सुचारू प्रचालन हेतु किया जाता है और उनका डिजाइन व तकनीकी मापदंड, धमन भट्ठी की आधुनिक प्रौद्योगिकी प्रक्रियाओं की आवश्यकताओं के अनुरूप होते हैं।

टैपहोल ड्रिल एवं मडगन मशीनों के प्रचालन हेतु नियंत्रण केबिन

टैपहोल ड्रिल व मडगन मशीनों के नियंत्रण केबिन में आपातिक स्थिति में भी प्रचालन की सुविधा होनी चाहिए। तदनुरूप उनमें निम्नलिखित विशेषताएँ अपेक्षित हैं:

- नियंत्रण केबिन ऐसे स्थापित हो, जहाँ ब्रेक आउट एवं विस्फोट के खतरे से कर्मचारियों की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके तथा वे प्रचालन का ठीक से अनुश्रवण कर सके।
- इसके निर्माण में किसी प्रकार के ज्वलनशील पदार्थ का उपयोग न हो।
- कम से कम दो भिन्न व स्वतंत्र प्रवेश मार्गों की सुविधा हो और दोनों मार्गों से बाहर के आपातिक निकास प्लेटफार्म तक पहुँच की सुविधा हो। साथ ही ये दोनों मार्ग हमेशा खाली हों।

तप्त धातु ट्रॉफ कवर हेतु मैनिपुलेटर

तप्त धातु के शीतलन से बचने के लिए उसके तप्त धातु लैडलों में निकास से पूर्व तप्त धातु के प्रमुख व सहायक ट्रॉफ को निश्चित व निकालने योग्य कवरों से ढका होना चाहिए। ये कवर कास्ट हाउस में धूल व फ्यूम निष्कर्षण हेतु भी उपयोगी हैं। हालाँकि, टैपिंग प्रक्रिया व टैपहोल अनुरक्षण हेतु रनर के अग्रभाग तक बिना किसी अवरोध के पहुँच की आवश्यकता होती है। मैनिपुलेटरों द्वारा सामान्यतया ये कवर निकाल दिये जाते हैं। साथ ही टैपहोल ड्रिल व मडगन मशीन खोले जा सकते हैं।

मैनिपुलेटरों के उपयोग से मुख्य ट्रॉफ को पूर्णत: ढकने में सुविधा होती है एवं इससे अनुरक्षण कर्मचारियों की सुरक्षा भी बढ़ती है।

टिल्टिंग रनर

बड़े आकार की धमन भट्ठियों के कास्ट हाउस में सामान्यतया तप्त धातु को लैडल में भरने के लिए टिल्टिंग रनरों की अत्यंत आवश्यकता होती है। आम तौर पर टिल्टिंग रनर दो तप्त धातु ट्रैकों के बीच लगाया जाता है। रनर को पहले एक पटरी पर तप्त धातु लैडल भरने के लिए एक ओर झुकाया जाता है और पुन: दूसरी पटरी पर लैडल भरने के लिए उसे दूसरी ओर झुकाया जाता है। दूसरा लैडल भरते समय पहले भरे हुए लैडल की जगह फिर एक खाली लैडल रखा जाता है, ताकि विभिन्न लैडलों को अबाध गति से भरने का कार्य जारी रहे।

तप्त धातु को लैडल में डालने के लिए आवश्यक झुकाव हेतु फैबिकेटेड टिल्टिंग रनरों में हाइड्रॉलिक ड्राइव लगे होते हैं। ये सुरक्षित प्रचालन को सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक नियंत्रण प्रणालियों से पूर्णत: लैस होते हैं। तप्त धातु लैडल हेतु स्तर मापन प्रणाली के संयोजन से टिल्टिंग रनर का प्रचालन स्वचालित किया जाता है।

बार चेंजर

बार चेंजर एक रोबोटिक मशीन है, जिसका उपयोग रॉड के प्रहस्तन व स्थापना एवं टैपहोल ड्रिल में लगाने हेतु किया जाता है। बार चेंजर में साधारणतया विभिन्न प्रकार के व्यास के बार व रॉड से लैस बार मैगजीन लगा होता है। ड्रिलिंग मशीन में प्रयुक्त बार को हटाकर मैगजीन में उपलब्ध बार को ड्रिल चक में लगाया जाता है।

मडगन फिल्लिंग मशीन

ये मशीन मडगन भरने हेतु प्रयुक्त होते हैं। मडगन मशीन भरने की प्रणाली दिये गये चित्र में प्रस्तुत है:

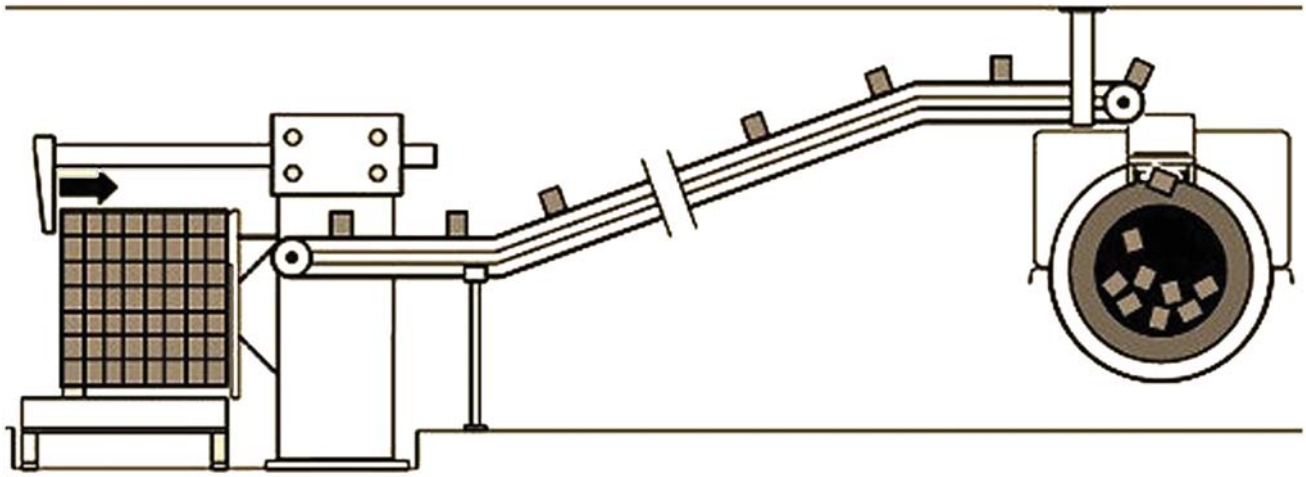

जैक डैम ड्रिल

धमन भट्ठी के स्किमर प्लेट/मुख्य ट्रॉफ की दीवार में छेद बनाने के लिए जैक डैम ड्रिल का उपयोग किया जाता है। इससे भट्ठी से प्राप्त तप्त धातु की पूर्ण निकासी सुनिश्चित होती है। ड्रिल खासकर धमन भट्ठी के प्रत्येक कास्ट हाउस के मुख्य ट्रॉफ स्थान, फाउंडेशन, कॉलम और स्थापित उपस्कर जैसी विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु बनाये जाते हैं। उपस्कर ड्राइव हाइड्रॉलिक अथवा न्युमैटिक होते हैं, जिनमें उपस्कर प्रणाली के सामान्य पंप यूनिट अथवा स्वतंत्र रूप से विद्युत की आपूर्ति की जाती है। ये पोर्टबुल अथवा स्टेशनरी तौर पर तैयार किये जाते हैं। इस प्रकार जैक डैम ड्रिल किसी भी धमन भट्ठी कास्ट हाउस के लिए उपयोगी है।

कास्ट हाउस में प्रयुक्त अन्य प्रमुख उपकरण व उपस्कर

कास्ट हाउस में प्रयुक्त होनेवाले अन्य प्रमुख उपकरणों व उपस्करों में विभिन्न आकार एवं लंबाई के पोकिंग बार, ऑक्सीजन लॉंसिंग उपस्कर, सैंपलिंग सुविधाएँ और तापमान मापन सुविधाएँ आदि आते हैं। ये क्रेन व प्रहस्तन सुविधाओं के अतिरिक्त धमन भट्ठी कास्ट हाउस की विभिन्न प्रचालन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रयुक्त होते हैं।

कास्ट हाउस उपस्करों का विकास

पिछले 125-130 वर्षों से टैपिंग प्रौद्योगिकी में बहुत सुधार हुआ। पहले उपस्कर अभिकल्प के यांत्रिकी पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए उसके विकास हेतु प्रयास किये जाते थे, जबकि हाल ही के प्रयासों में इलेक्ट्रिक व हाइड्रॉलिक कंट्रोल के विकास हेतु ध्यान केंद्रित किया जाने लगा। टैपहोल के लंबे कार्यकाल एवं हर्थ रीफ्रैक्टरी पर हैमर इंपाक्ट ऊर्जा के प्रभाव को कम करते हुए हार्डर टैपहोल मॉस के प्रावधान हेतु भविष्य में प्रयास किये जाने अपेक्षित हैं। ड्रिलिंग व प्लगिंग के विकल्प, वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उपयुक्त नहीं पाये गये। धमन भट्ठी के प्रचालक का धमन भट्ठी के 'टैपिंग वॉल्व' का सपना आज भी सपना ही बना हुआ है। मैग्नेटिक करेंट द्वारा धातु के प्रवाह को रोकने व जारी रखने जैसे विचार औद्योगिक स्तर पर कारगर नहीं हो पाये हैं।

विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र में कास्ट हाउस प्रबंधन

वी एस पी में 90 के दशक की शुरुआत में स्थापित दो धमन भट्ठियों के कास्ट हाउस में प्रौद्योगिकी स्तर पर कई परिवर्तन किये गये हैं। जल आधारित टैपहोल मॉस से वाशवाइल आधारित टैपहोल मॉस के प्रयोग के लिए मडगन एवं ड्रिलिंग मशीन में बदलाव किये गये। उत्पादन की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए धमन भट्ठी की प्रक्रियाओं में परिवर्तन लाया गया, जिसके लिए बॉक्साइट मिश्रित टैपहोल मॉस का उत्पादन किया गया। इलेक्ट्रिक प्रचालित मडगन एवं ड्रिलिंग मशीन से हाइड्रॉलिक प्रचालित उपर्युक्त उपकरण इसी सिलसिले की एक कड़ी है। इसी प्रकार कास्टेबुल का मुख्य रनर, स्लैग रनर, टिल्टिंग रनर के प्रयोग से कास्ट हाउस की उत्पादकता में काफी बढ़ोत्तरी लाई जा सकी। हाल ही में स्थापित धमन भट्ठी-3 का कास्ट हाउस सभी अद्यतन प्रौद्योगिकी युक्त उपस्कर से लैस है। आज कास्ट हाउस प्रचालन पहले की तुलना में काफी बेहतर स्थिति में है। फिर भी नई सुविधाओं पर अनुसंधान व विकास कार्य जारी है। वी एस पी के कास्ट हाउस प्रबंधन में पर्यावरण संरक्षण, प्रचालकों की सुरक्षा, प्रचालन की बेहतर सुविधा आदि क्षेत्रों में अधिक ध्यान केंद्रित किया गया है।

- सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)
राजभाषा विभाग
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम-530031
मोबाइल: +91 9989317329

करवा-चौथ

- श्री चित्रेश -

आज एक बार फिर साफ आकाश से चौथ का चंद्रमा झाँकने लगा है। दादी की कोठरी और सामनेवाली नीम दूधिया चाँदनी में नहा उठी है। हवा की अठखेलियों के साथ पोखर में उठनेवाली लहरें रूपहली हो गई हैं, लेकिन चलनी की ओट से चंद्रमा को देखकर व्रत पूरा करने की सुधि दादी को नहीं है। वे अपने छोटे से ओसारे में खटिया डाले अस्त-व्यस्त पड़ी हैं। उनको तो पता भी नहीं है कि उनका चिर प्रतीक्षित चाँद उग आया है।

एक तो अस्सी-बयासी साल की बूढ़ी देह, दूसरे हफ्ते भर की लंबी बीमारी - उनका शरीर एकदम लट गया है। करवा चौथ की बात थी, वरना उन्हें क्या पड़ी थी बीमारी से उठने के बाद इतनी हाड़तोड़ मेहनत करने की। अब भी शरीर का पोर-पोर दर्द से भरा है।

आज सवेरे हाथ-मुँह धोकर उठते ही, उनका ध्यान सफाई की तरफ गया था, बिना एक क्षण गँवाये उन्होंने लोटा-बाल्टी ओसारे में रख दिया और धुँधलाई निगाह से कोठरी में देखने लगीं - सारी कोठरी धूल, राख और बेतरतीब सामान से अँटी पड़ी थी। कोई देखता तो कबाड़खाना ही समझता। उनकी परिष्कृत रुचि को धक्का लगा। उधर से निगाह हटाकर वे ओसारे में चारों ओर देखने लगी, जगह-जगह छप्पर के टपकने से फर्श असमतल हो गया था। सीलन की वजह से कई स्थानों पर हरी काई-सी जमी हुई थी।

दादी ओसारे से बाहर निकल आई। कोठरी के चारों तरफ घनी घास उग आयी थी। दीवारें बौछारों की मार झेलते-झेलते खुरदरी हो गई थीं। हमेशा आइने की तरह चमकने वाले अपने घर की ऐसी दुर्दशा देख, उनके पीले-झुर्रीदार चेहरे पर विषाद झलकने लगा। वे मन ही मन खीज उठीं - आखिर यह सब मैंने पहले ही क्यों नहीं देख लिया? अब आज ऐन मौके पर मेरा बूढ़ा-जर्जर शरीर यह सब दुरुस्त करने के लिए कहाँ से ताकत लाये?

फिर उनका मन चंचल होने लगा...। उन्होंने सोचा - अगर आज मेरी तपस्या पूरी हो जाती है और वे उस डायन औरत के चंगुल से मुक्त होकर आ जायें तो यह कूड़ा-कबाड़ा देखकर मन में क्या सोचेंगे? कितनी चिढ़ थी उन्हें गंदगी से...।

दादी इससे अधिक सोच न सकी। पूरब में ललछौहाँ सूरज निकल रहा था। वे कोठरी में जाकर खुरपा ले आयीं और घास छीलने में जुट गयीं। अभी उनको पथ्य लेते कुल दस दिन हुए थे। शरीर में ताव तो थी नहीं, लेकिन फिर भी किसी अलौकिक सी शक्ति के सहारे वे घिसटती हुई साफ-सफाई में लगी रहीं। हर साल करवा चौथ के दिन वे सारी सफाई खुद करती हैं। किसी का सहारा लेना उन्हें ठीक नहीं लगता। नहीं तो चार-पाँच दिन पहले गाँव के प्रधान ने आकर कहा था - 'दादी, इस बार की बीमारी से तू एकदम लट गयी है, करवा चौथ आनेवाली है। तुझसे कुछ हो नहीं पाएगा। नौकर भेजूँगा, उसी से सफाई वगैरह करवा लेना।'

'नहीं! परधान बेटा', दादी ने तुरंत प्रतिवाद किया। 'बेटा मैं तेरे दादा को डायन के चंगुल से छुड़ाने के लिए व्रत और पूजा के जरिए तपस्या कर रही हूँ। इसमें किसी का सहयोग ठीक नहीं होता। अब मैं ठीक भी हो गयी हूँ। सारा काम खुद देख लूँगी।'

प्रधान चुप लगा गया था, क्योंकि उसे पता था कि दादी अपनी धुन की पक्की हैं। किसी का कहा-सुना नहीं मानतीं। वैसे सवेरे ढेरों सफाई का काम देखकर वे विचलित जरूर हुई थीं, लेकिन एक बार शुरू करने के बाद उनकी हिम्मत बढ़ सी गई थी। हालांकि काफी मेहनत करनी पड़ी, लस्त शरीर का हाड़-हाड़ दुखने लगा, पर वे जी कड़ा करके जुटी रहीं और दोपहर होते-होते उनके घर का बाहर-भीतर पहले की तरह चमकने लगा था। कोठरी में चारों तरफ की एक-एक घास उन्होंने चुन ली थी, ओसारे और कोठरी में गोबरी हो गई थी। दीवारें पिड़ोर से लीप-पोत कर चिकनी कर दी गई थीं।

यह सब कर लेने के बाद उनकी अंदर को धंसी मटमैली आँखों में संतुष्टि के भाव तैर गये थे। मन उड़ान पर आ गया था। उन्होंने जाकर सामने वाले पोखर में हाथ धोया और कोठरी में चली गयीं। अपना वर्षों पुराना बड़ा-सा पिटारा सरकाकर किवाड़ के सामने ले आयी। उसे खोलकर वे एक-एक चीज देखने लगी। जिस चीज की जरूरत होती, उसे निकालकर

> उनका शरीर अब भी थकान से टूट रहा था। वे लेट गयीं। तंद्रा ने फिर आ घेरा। कुछ देर बाद चंद्रमा निकला, सब तरफ दूधिया रोशनी बिखर गयी। ओरउती के नीचे पूरे चौक और पानी से भरे गेडुए चाँदनी में चमकते रहे, पर वे अचेत पड़ी रहीं...। दादी को लगा कि कोई हल्के से उनके कंधे पर हाथ रखकर बोला - 'राधिका, उठोगी नहीं।' यह आवाज... इसे ही तो सुनने के लिए साल-दर-साल मौत को खिसकाती जिंदा बैठी हैं। वे हड़बड़ाकर उठ बैठती हैं... पर वहाँ कोई न था, वह तो निरी मृग-मरीचिका थी। उनका धैर्य टूटने लगता है। आँखों से आँसू बह चले। सात को कौन कहे, एक भाई भी नहीं है जो आँसू पोंछकर कहता - 'रो मत बहन, मैं जाता हूँ जीजा जी को खोज लाने।'

एक तरफ रखती जा रही थीं, शेष पुन: पिटारे के हवाले कर देती। टिकुली, सिंदूर, लाख की लाल चूड़ियाँ, मेहाउर का रंग, कंघी, चोटी और आइना निकालने के बाद साड़ी के चुनाव में वे झिझक गईं - इस उमर में भला कौन-सी साड़ी पहनूँ? तभी कोई उनके अंतर्मन में फुसफुसा उठा - 'अरी पति की पसंद ही तेरा सब कुछ है, वही गुलाबी साड़ी निकाल, जिसे उन्होंने पाँड़े बाबा के दशहरे के मेले से लाकर दिया था।'

सारा सामान सहेजने के बाद, उन्होंने अपनी सूखी देह में तेल-मालिश की। फिर कुछ देर आसमान तले बैठी रहीं। जब धूप चुभने लगी तो वापस छाया में आ गयीं। जल्दी ही गर्मी शांत हो गयी। अब उन्होंने जाकर पोखर में स्नान किया और बैठ गयीं शृंगार करने। सन हो चुके बालों का जूड़ा बनाकर उन्होंने माँग में खूब चटक सिंदूर भरा। माथे पर टिकुली, पैरों में महाउर और हाथों में भर कलाई चूड़ियाँ चढ़ाकर उन्होंने आइने में स्वयं को निहारा। पता नहीं क्यों उनको लाज-सी लगी और उनकी नजरें नीचे झुक गयीं।

अब तक दिन का तीसरा पहर आधा ही बीता था। दादी ने झटपट ओरउती के नीचे छोटे-छोटे चार चौक पूर दिये। गोबर से गौरी की मूर्ति बनाकर रख दी। दो गेडुओं में जल लेकर उसमें सात-सात करवे की सीकें डाल दीं, फिर मिट्टी के दो कसोरों में घी और बाती रखकर दीपक बनाया और आम की एक-एक पल्लव दोनों गेडुओं पर रखकर उसके ऊपर दीपक सजा दिये। अब चंद्रमा देखकर पूजा करना बाकी था - बस।

इसके बाद उन्होंने आसमान की ओर देखा, एक पहर से कुछ ऊपर ही दिन शेष था। अब क्या करें? करवा-चौथ की कहानी सुनने गाँव की सुहागिनें भी शाम से पहले नहीं आयेंगी। उनसे बैठे न रहा गया। वे ओसारे में खटिया खींचकर लेट गयीं। थकान से उनका बुरा हाल था ही, लेटते ही आँख मुंदने लगी। वैसे वे सोई न थीं। सिर्फ तंद्रिल भाव से अतीत की तमाम खट्टी-मीठी स्मृतियाँ चक्रवात-सी उनके आगे नाच रही थीं...।

... वह उनके जीवन की पहली करवा-चौथ थी। पूरा साल भी नहीं बीता था उनकी शादी को। उन दिनों वे गोरे रंग की, बड़ी-बड़ी नर्गिस के फूल जैसी सपनीली आँखों वाली, मक्खन-सी नरम छरहरी नवयुवती थीं, माँ-बाप की इकलौती और पति की दुलारी। भूख-प्यास झेलने की नौबत कभी न आयी थी। करवा-चौथ का निर्जला व्रत उन्हें अखर गया। शाम को दादा खेत से लौटे, उस समय वे खटिया पर निस्तेज पड़ी थी। दादा से उनका मुरझाया हुआ मुखड़ा देखा न गया। उन्होंने बेचैन होकर कहा - 'राधिका, तू इस जानलेवा व्रत के पीछे क्यों पड़ी है? अगर तुझे कुछ हो... चल अभी खत्म कर इसे।'

दादा के प्रेम से वे अभिभूत जरूर हुई थीं, लेकिन पहले उन्होंने चंद्रमा देखा, गौरी-पूजन किया। तब जाकर पानी पिया और करवा-चौथ का पहला व्रत संपन्न हुआ।

वह स्याह रात... उसकी याद आज भी उनको अंदर तक मथ जाती है, दादा तीन मील दूर वाले गाँव में नौटंकी देखने जा रहे थे। वे मना करना चाहती थीं, पर उनको दादा के शौक का पता था। इसलिए चुप लगा गयीं। वे मना करतीं तो दादा रुक जाते, यह बात पक्की थी। मगर उनको क्या पता था कि यह काली रात उनके जीवन में अंधेरा बिखेरने आयी है।

सवेरा हुआ। रात के गये दादा नहीं लौटे। इंतजार करते-करते एक पहर दिन चढ़ आया। दादी चिंतित हो उठीं। उन्होंने गाँव में पूछताछ शुरू की। नौटंकी देखकर वापस लौटे लोगों से पता चला, आधी रात के करीब दादा पंडाल से निकलकर पेशाब करने गये थे। उसी समय जोरों की आंधी आ गयी थी। भक्क्... भक्क्... करके गैस बत्तियाँ बुझ गयीं। पंडाल उखड़ने लगा। ऐसी भगदड़ में कौन किसका ख्याल रखता। काफी समय बाद जब आंधी रुकी तो जैसे-तैसे लोग घर पहुँचे।

दादा के गुम होने की खबर पूरे गाँव में फैल गयी। कुछ लोग रिश्तेदारियों में दौड़ा दिये गये। एक आदमी आस-पास के गाँवों में पता करने निकल गया। दादा की हुलिया बताकर दूर-दूर तक खोज हुई, किंतु पता न चला। दादा हवा की तरह गायब थे। निराश होकर लौटते खोजियों ने अगल-बगल पड़े कुआँ-पोखरों में भी झाँक कर देख लिया। क्योंकि यह संभावना भी थी कि आंधी में भटककर किसी कुएँ में ही न गिर पड़े हों। परंतु ऐसी कोई बात नजर न आयी। अगले दिन रिश्तेदारियों में गये लोग भी वापस आ गये। वहाँ भी उनका पता न चला था।

एक-एक करके तीन-चार दिन बीत गये। इसी बीच गाँववालों ने दादा की खोज में आस-पास के जंगलों और घाटियों की खाक छान डाली, लेकिन निराशा के सिवा कुछ हाथ न आया। दादी बिना कुछ खाये-पिये रो-रोकर बेहाल थी। गाँव के बड़े-बूढ़े उन्हें ढाढ़स देने आते, किंतु शोकाकुल दादी को देखकर हिम्मत जवाब दे जाती। धीरज देने के लिए शब्द ही न सूझते।

हफ्ते भर बाद एक नई अफवाह सुनने में आयी। लोगों का कहना था - रात में पंडाल से निकलकर दादा उत्तर की तरफ गये थे। उधर थारुओं का डेरा था। उसी डेरे की एक औरत उन्हें फँसाकर ले गयी, तभी तो पूरा डेरा रातों-रात चंपत हो गया था। वह अफवाह थी ही ऐसी, जिस पर दादी विश्वास न कर सकतीं। भला वे किसी थारु औरत के साथ क्यों जाने लगे? वे सबसे प्रतिवाद करतीं, पर करमराजी बुआ ज्यादा जानकार थीं। दादी के प्रतिवाद पर उन्होंने समझाया - 'बहू! ये थारु औरतें पूरी डायन होती हैं, डायनों का न कोई नेम न धरम। जिस मरद पर फिदा हो गयीं, उसे जादू के जोर से भेड़ा-बकरा बनाकर साथ रख लेती हैं।'

वह पहले भी ऐसी बातें सुन चुकी थीं। दादा थे भी ऐसे ही बाँके जवान। भरा-पूरा लंबा शरीर, गेहुआँ रंग, छोटे-छोटे पहलवानी कट के बाल, चौड़ी छाती पर कसी मिरजई और दो कच्छी धोती पहने, अपनी काली वाली लंबी लाठी कंधे पर धरे मस्तानी चाल से चलते थे तो देखते ही बनता था। ऐसे मर्द को जादू जाननेवाली कोई भी मनचली औरत अपना गुलाम बनाने के लिए भेंड़ा या बकरी बना ही सकती थी। दादी को करमराजी बुआ की बात पर विश्वास करना ही पड़ गया।

दादी बावली-सी रहने लगी, न उन्हें खाने की चिंता, न पीने की फिकर। जहाँ जी में आता, बैठ जातीं और टकटकी बांधकर शून्य में घूरा करतीं। उन्हीं दिनों गाँव में एक महात्मा जी आये थे। गाँव के बड़े बूढ़ों ने आपस में सलाह किया और दादी को समझा-बुझाकर उनके पास ले गये। सारी व्यथा सुनने के बाद महात्मा ने कमंडल से जल लेकर दादी के ऊपर छिड़कते हुए कहा - 'बेटी! तू जिसकी याद में पागल है, वह बंधन में पड़ा है। अपनी तपस्या से उसका बंधन काट दे। वह दौड़ा चला आएगा। बेटी समझ ले - दुखियों की सेवा, पूजा और व्रत ही कलजुग की तपस्या है।'

उसी दिन से वे साध्वी और सेविका दोनों बन गयीं। परभू को शीतला माई निकलने पर छींटा देने वाली, रघूवीर की टांग टूटने पर अपनी स्नेहसिक्त हथेलियों से सहलाकर ममता उड़ेलते हुए दर्द हरने वाली, प्रसव-वेदना से छटपटाती झिनकू बहू के सिरहाने बैठकर पीठ सहलाने वाली, नवजात शिशुओं की नजर-टोना, फूँक मारकर उड़ा देने वाली, ऊपरी बाधाओं से निजात के लिए गंडा-तावीज बांधने वाली और गाँव की औरतों को विभिन्न व्रतों के महात्म्य की कथायें सुनानेवाली दादी आज साठ साल के बाद भी महात्मा जी की बात से आश्वस्त हैं...।

...सहसा उनके सामने चक्रवात सा घूमता अतीत थम गया। आँख खोलने पर पता चला कि शाम हो चुकी थी। गाँव की औरतें करवा-चौथ की कहानी सुनने आ गयी थीं। उन्हीं में से प्रधान की बहू ने खटिया के पास आकर उन्हें पुकारा था। वे उठ खड़ी हुईं। दिया जलाकर उन्होंने कोठरी खोली और औरतों से बड़ी दरी निकलवायी। औरतें दरी बिछाकर बैठ गयीं। दादी भी सबके बीच जा बैठीं। 'सात भाइयों की दुलारी बहिन' वाली कहानी शुरु हो गयी। सुहागिनें चुपचाप कथा सुनती रहीं। जब कथा समाप्त हुई तो गाढ़ा अंधियारा फैल चुका था, औरतों ने दरी समेट कर रख दी और जाने लगीं। दादी फिर खटिया पर आ बैठीं। उनका शरीर अब भी थकान से टूट रहा था। वे लेट गयीं। तंद्रा ने फिर आ घेरा। कुछ देर बाद चंद्रमा निकला, सब तरफ दूधिया रोशनी बिखर गयी। ओरउती के नीचे पूरे चौक और पानी से भरे गेडुए चाँदनी में चमकते रहे, पर वे अचेत पड़ी रहीं...।

दादी को लगा कि कोई हल्के से उनके कंधे पर हाथ रखकर बोला - 'राधिका, उठोगी नहीं।'

यह आवाज... इसे ही तो सुनने के लिए साल-दर-साल मौत को खिसकाती जिंदा बैठी हैं। वे हड़बड़ाकर उठ बैठती हैं... पर वहाँ कोई न था, वह तो निरी मृग-मरीचिका थी। उनका धैर्य टूटने लगता है। आँखों से आँसू बह चले। सात को कौन कहे, एक भाई भी नहीं है जो आँसू पोंछकर कहता - 'रो मत बहन, मैं जाता हूँ जीजा जी को खोज लाने।'

कुछ देर में आँसू अपने आप थम गये। वे चंद्रमा की तरफ देखने लगती हैं, प्रश्न कचोटता है - क्या सात भाइयों की दुलारी बहन की तरह मैं भी कभी झूठे चंद्रमा के धोखे में आ गयी? अगर नहीं तो मेरे जीवन में चौथ का चंद्रमा क्यों नहीं उग रहा? आखिर क्यों नहीं...? अनुत्तरित प्रश्न मन की सूनी वादियों में भटकता रह जाता है...।

दादी एक ठंडी साँस खींचकर खटिया से उतरती हैं। चलनी से चंद्रमा देख, विधिवत् गौरी पूजन कर डालती हैं। प्रतिवर्ष की तरह एक बार फिर वे गौरी माँ से अपना सुहाग माँग लेती हैं। रात सरकती जा रही है, चंद्रमा दूर जाते-जाते छोटा हो गया है। वे लोटे में पानी उड़ेलकर घुट्ट-घुट्ट करके तीन-चार घूँट पानी पी लेती हैं। करवे से निकलकर शीत फैलने लगा है। हवा का झोंका आकर उन्हें अंदर तक कंपा जाता है, वह खटिया पर पहुँच जाती हैं और सिरहाने के नीचे से पुराना कंबल निकाल, उसे ओढ़ते हुए लेट जाती हैं।

- डाकघर-जासापारा
गोसाईगंज-228119
सुलतानपुर, उत्तरप्रदेश
मोबाइल: +91 9450143544, 7379100261

लखनऊ दस्तरख्वान

- श्री सुरेंद्र अग्निहोत्री -

लखनऊ के अवधी व्यंजन जगप्रसिद्ध हैं। यहाँ के नवाबों ने खानपान के बहुत से व्यंजन चलाये हैं। व्यंजन खुशरंग, सुगंधित और स्वादिष्ट होता है तो उससे पेट ही नहीं भरता, बल्कि वह लज्जत और स्वाद के उस मापदण्ड पर खरा उतरता है, जो कोई न कोई संस्कृति शताब्दियों के बाद उत्पन्न करती है। मुगलकाल में अवध प्रांत अपनी समृद्धि के लिए विख्यात था। यहाँ के नवाब वाजिद अली शाह अपने शाही अंदाज और शानो-शौकत के लिए मशहूर थे। उन्हें लजीज खाने का बेहद शौक था। शाही रसोई में उनके खानसामे तरह-तरह के मुगलई लजीज पकवान बनाया करते थे और आज भी ये पारंपरिक पकवान वहाँ बेहद पसंद किये जाते हैं। गरम मसालों की खुशबू से भरपूर लज्जतदार अवधी व्यंजन पूरी दुनिया में मशहूर हैं। पाक कला के माहिर अवध के बावर्चियों और रकाबदारों ने मसालों के अति विशिष्ट प्रयोग से अवध की खानपान परंपरा को अद्वितीय लज्जत बख्शी और इसे कला की ऊँचाइयों तक पहुँचाया। अवध के बावर्ची खाने ने जन्म दिया पाक कला की दम पद्धति को, जिसमें व्यंजन कोयले की धीमी आँच पर पकाए जाते थे, पकाते समय भाप पतीली से बाहर न निकले, इसके लिए सने हुए आटे की लोई को पतीली के ढक्कन के किनारों पर चिपका दिया जाता था। लखनऊ की बिरिआनी का खास स्वाद दम शैली से बिरिआनी बनाने के कारण आता है और यही इसे हैदराबादी बिरिआनी से अलग भी करता है। अवधी खाने की विशेषता मसालों और अन्य सामग्रियों के एक खास संतुलन से उत्पन्न स्वाद से जानी जाती थी और आज भी यह परंपरा जीवित है।

> अवध एक ऐसी जगह है, जहाँ पुलाव की ईजाद हुई। पुलाव और बिरिआनी में फर्क है। यह दोनों डिशेज देखने में भले ही लगभग एक जैसी लगते हों, लेकिन स्वाद में बिल्कुल अलग होती हैं। दिखने में नफीस और खूबसूरत चीज है। बिरिआनी में मसाले आदि सामने ही दिखायी दे जाएँगे, जबकि पुलाव में मसाला का फ्लेवर मिलेगा। मसालों की रंगत नहीं दिखायी देगी, जबकि स्वाद मिलेंगे।

महान विद्वान टी.एस.इलियट के अनुसार जब किसी सभ्यता का पतन होने को होता है तो सबसे पहले उसका दस्तरख्वान उलटता है। दस्तरखान केवल शाही दरबार, अमीरों के महलों और रईसों के दरबारों एवं ड्योढ़ियों तक सीमित नहीं थी। सामान्य घरों में भी लखनऊ का दस्तरख्वान अपनी बेमिसाली के लिए मौजूद था। तबाखीर के फनकारों का एक वर्ग था, जिसने नमकीन और मीठे व्यंजनों की तैयारी और उपलब्धता में अपनी फनकारी के कमाल दिखाये थे। लखनऊ की रीतियों की जानकारी रजबअली बेग सुरूर और अब्दुल हलीम शरर की तहरीरों (रचनाओं) से भी मिलती है, जिसे पंडित रतननाथ ने अपनी पुस्तकों में इंगित किया है। पुस्तकों में इसका प्रत्यक्ष कम, लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से संदर्भ और उद्धरण अधिक मिलते हैं। शायद लखनऊ के दस्तरख्वान की खोया इतिहास, इसकी स्वच्छता, कोमलता व मृदुलता का स्तर इतिहास के बिखरे हुए पृष्ठों में तलाश करने की बात है। इनके मूल्यांकन करने के उपरांत जरूर इसी खोई हुई चीज को प्राप्त करने का पता चल सकता है। इससे कहीं ज्यादा उत्साहवर्धक बात यह है कि बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में भी लखनऊ वालों के मिले-जुले स्मरण में अपने दस्तरख्वान की अनुपमता और परख की चेतना बाकी है, बावर्चियों और तबाखों के गुजरे हुए फन के उत्तराधिकारी आज भी मौजूद हैं, जो बहुत माहिर बावर्चियों एवं तबाखों की सब से बड़ी विशेषता एवं पहचान (अनुपमता) है। पकाने की विधि, मसालों का चयन और उनके प्रयोग में एक विशेष अनुपात का ध्यान आज भी लखनऊ के दस्तरख्वानों की अलग पहचान है। बुजुर्ग पीढ़ी की बेगमों, महिलाओं और घरवालियों को दुनिया से बिदा होते हुए देखा है, जो अपने हाथ से हाँडी पकाने को अपना परम कर्तव्य समझती थीं। खाने को स्वादिष्ट एवं मजेदार बनाने के गुर जानती थीं। उनकी रुचि नफासत और लताफत को नित्य प्रति के पकवान में भी बरकरार रहती थी। हमारी नानियों, दादियों और माताओं तक अपनी संस्कृति की परंपरा जीवित रही। किसी के पकाये हुए खाने में लज्जत, स्वाद और मृदुलता न हो तो बड़ी बूढ़ी औरतें घृणित स्वर से कहती थीं कि 'छछुंदर मारी थी कि हाथ में जायका ही नहीं।' अरब व गैरअरब से लेकर भारत तक तंदूर की गर्म बाजारी शताब्दियों से चली आ रही है। तंदूरी रोटी, नान खमीर की परंपरा शताब्दियों से चली आ रही है। ऐसी ही रोटियाँ यहाँ के पुराने बाजार में आज मिलती हैं, बल्कि ये बाजार रोटियों का बाजार ही है। अकबारी गेट से नक्खास चौकी के पीछे तक यह बाजार है, जहाँ फुटकर व सैकड़े के हिसाब से शीरमाल, नान, खमीरी रोटी, रूमाली रोटी, कुल्चा जैसी कई अन्य तरह की रोटियाँ मिल जाएँगी। पुराने लखनऊ के इस रोटी बाजार में विभिन्न प्रकार की रोटियों की लगभग 15 दूकानें हैं, जहाँ सुबह नौ से रात के नौ बजे तक गर्म

रोटी खरीदी जा सकती है। कई पुराने नामी होटल भी इस गली के पास हैं, जहाँ मनपसंद रोटी के साथ मांसाहारी व्यंजन भी बिकते हैं। रोटियों में शीरमाल, कुल्चा, रूमाली की माँग सबसे ज्यादा होती है, अन्य तरह की रोटियों की माँग मोहर्रम व रमजान में बढ़ जाती है। आर्डर तैयार करने में कारीगरों को 12 घंटों के बजाय 18 घंटे या उससे अधिक काम करना पड़ता है, क्योंकि रमजान के महीने में बिक्री का समय दिन में न होकर देर शाम से पूरी रात चलता है, यानी शाम चार बजे से सुबह चार बजे तक। इस इलाके में बनने वाली तमाम रोटियों में से सर्वाधिक बिक्री शीरमाल की ही होती है। केसरी रंग वाली शीरमाल मैदे, दूध व घी से बनती है, जो बहुत ही खास्ता और सुस्वादु होती है। तंदूर में पकाने के बाद इन पर खुशबू के लिए घी लगाया जाता है। शीरमाल 'कबाब' और 'कोरमे' की लज्जत बढ़ाती है। शीरमाल के वजन के हिसाब से रेट तय होता है। इस गली के बाहर ही कई नामी होटल हैं, जहाँ स्पेशल शीरमाल तैयार की जाती है। विशेषज्ञ के अनुसार शाही खाने में गिनी जाने वाली बाकरखानी रोटी अमीरों के दस्तरख्वान की बहुत ही विशिष्ट रोटी थी। इसमें मेवे और मलाई का मिश्रण होता है। ये नाश्ते में चाय का आनंद बढ़ा देती है। कारीगर बताते हैं कि बाकरखानी व ताफतान की माँग अब कम हो चली है। नान की माँग आम दिनों में कम रहती है। लोग शादी-ब्याह या खास अवसर पर आर्डर देकर नान बनवाते हैं। नान को नर्म व स्वादिष्ट बनाने के लिए मैदे में दूध, दही, घी और रवा मिलाया जाता है। एक उक्ति के अनुसार लखनऊ के व्यंजन विशेषज्ञों ने ही परतदार पराठे की खोज की है, जिसको तंदूरी पराठा भी कहा जाता है। इन पराठों को तंदूर में तैयार किया जाता है। पराठे नर्म रहे, इसलिए इन्हें पानी की छीटें देकर उस पर घी से तर किया जाता है। ईरान से आई रोटी, यानी कुलचा पर स्थानीय प्रभाव रहता है। इसी तरह लखनऊवालों ने भी कुलचे में विशेष प्रयोग किये। कुलचा नाहरी के विशेषज्ञ कारीगर हाजी जुबैर अहमद के अनुसार कुलचा अवधी व्यंजनों में शामिल खास रोटी है, जिसका साथ नाहरी बिना अधूरा है। लखनऊ के नामी गिरामी कुलचे, यानी दो भाग वाले कुलचे उनके परदादा ने तैयार किया था। कुलचे रिच डाइट में आते हैं और जुबैर साहब के अनुसार अच्छी खुराक वाला आदमी भी तीन से अधिक नहीं खा सकता है। कुलचे गर्म खाने में ही मजा है, यानी तंदूर से निकले और परोसा जाये।

कुलचा ईरान और अफगानिस्तान से आया था और हिंदुस्तान में हर जगह फैल गया था। लखनऊ वालों में भी कुलचे में विशेष प्रयोग किये और उसका तिकोना आकार सुनिश्चित किया। इसके अंदर परत पैदा की और इस प्रकार इसको नहारी से जोड़ा। लखनऊ का कुलचा पूरे हिंदुस्तान में अपनी व्यक्तिगत पहचान रखता है, इसकी लज्जत और नफासत दोनों बेमिसाल हैं। निहारी भी अपने विशेष मसालों और उनके सम्मिश्रण से भिन्न स्वाद रखती है, जो अन्य स्थानों की निहारी में नहीं मिलती। लखनऊ की निहारी अपने विशेष मसालों और गोश्त की बोटियों से तैयार होती है। लखनऊ के दस्तरख्वान ने कोरमा और चपाती की नफासत और लाल चित्तीदार होना जरूरी शर्त थे। निपुण बावर्ची पावभर आटे की सोलह चपातियाँ तवे से उतार लेते थे, जो ठंडी होने पर भी नर्म रहती थीं। इनका जोड़ कोरमा था, जो बेहतरीन गोश्त से तैयार किया जाता था। कोरमा में तैयारी के बाद भी शोरबा बिल्कुल नहीं होता था। इसके विशेष मसाले, गोश्त के गुण और घी के तार के कारण कोरमा अधिक स्वादिष्ट होता था। रस पैदा करने में धीमी आँच में पकने का भी दखल था। लखनवी दस्तरख्वान पर शोरबादार सालन भी नजर आते हैं। उनका स्वाद अलग शान रखता है। कोरमे में हल्दी नहीं पड़ती थी। सालनों के मसाले में हल्दी शामिल थी। दरबारों से ज्यादा आम घरों में सालन का चलन था। फिर भी तरकारीदार सालन सभी पसंद नहीं करते थे। तली अरुई और तले आलू के सालन का विशेष महत्व था। उनके पकाने में बड़ी निपुणता और देखरेख से काम लिया जाता था। कीमा, कोफ्ता और कबाब खासोआम के दस्तरख्वान की शोभा होते थे। पिसे हुए चावल कम मात्रा में डालकर इस प्रकार पकाया जाता है कि वह मिलकर एक हो जाय और ठंडा होने पर जम सके। फीरीनी मिट्टी के प्यालों में सोंधेपन और लताफत की वजह से लखनवी इच्छा की पूरी तरह तरकीत

करती थी और गलीकूचों और बाजारों में बालाई (मलाई) की तरह सामान्य तौर पर मिलती थी। यह परंपरा अब भी है और बालाई व फीरीनी की कद्र दानी में लखनऊ वाले सबसे आगे हैं। लखनऊ में मिठाइयों, मुरब्बों और हलुवों की तैयारी पर भी ध्यान दिया गया। यहाँ की बर्फी, कलाकंद, गुलाबजामुन, जलेबी, नुक्ती और लड्डू जैसी सामान्य मिठाइयों की लज्जत, रंगत और स्वाद का मापदण्ड कारीगर हलवाइयों ने ऐसा उठाया कि समस्त अवध ही नहीं, बल्कि पूरे उत्तर भारत के साथ-साथ दक्षिण तक उनके नाम की तूती बोलने लगी। इन विशेषज्ञों की बड़ी संख्या लखनऊ से निकलकर देश में फैली और लखनऊ का नाम रोशन किया। इन मिठाइयों की तरह मुरब्बा-सब्जी भी लखनऊ में महत्व रखती थी। जब लखनऊ चरमोत्कर्ष दौर में था, तब बावर्चियों, दवाखों, मुरब्बासाजों के घराने, मुहल्ले और क्षेत्र ख्याति रखते थे। वह अपने खानदानी फन व पेशे के विकास पर पूरा ध्यान देते थे। साथ ही नयी-नयी विधियों की खोज से काम लेकर हर एक को प्रभावित करते थे। मुरब्बासाजी के क्षेत्र में सेब, बही, ऑवला जैसे मुरब्बों को दिलो-दिमाग की ताजगी और पाचनशक्ति बढ़ाने में लखनऊ के विशेषज्ञ बावर्चियों ने अपने फन में निपुणता से काम लिया। हर एक तरकारी को अनेक ढंग से पकाने की विधि, सब्जियों के पकवान में एक नया स्वाद पैदा किया। हामिद अली खाँ बैरिस्टर ने इस शताब्दी के पहले दशक में अपने एक माहिर बावर्ची का उल्लेख किया है, जो केवल भिंडी की सब्जी को अस्सी विभिन्न तरीकों से पकाता था और हर हाँडी का स्वाद अलग होता था।

लखनऊ का दस्तरख्वान सैकड़ों किस्म के नमकीन और मीठे खाने से सुसज्जित था। दास्ताने अमीर हमजा, तिलिस्मे होशरुबा और दूसरी दास्तानों में पकवानों के सैकड़ों नाम मिलते हैं और हर व्यंजन की अनेक किस्मों की ओर इशारा मिलता है।

लेकिन मूल अवधी खाने की खुशबू से अभी लोग उतने ही दूर हैं, जितनी दूर अवध का दौर गुजर चुका है। मैंने ढेर सारी रिसर्च और गुजरे वक्त की बहुत सी किताबों को खंगालने के साथ-साथ ही ढेरों एक्सपर्ट्स से बातचीत की और पूछा कि क्या है, अवधी खाना?

ज्यादातर लोग अवधी खाने को मुगलई खाना के इर्द-गिर्द की चीज मानते हैं। लेकिन यह बिल्कुल गलत है। दरअसल ईरानी और अवधी कायस्थों के बावर्चीखाने से मिलकर निकली खाने की खुशबू को अवधी दस्तरख्वान कहा जाता है। अवधी खाना मुगलई खानों की तुलना में कम इस्तेमाल किया जाता है, जिससे इसे हजम करना आसान होता है और यह जल्दी हजम होनेवाले खानों में शुमार किया जाता है। अवधी खानों में ड्राई-फ्रूट, जाफरान, जड़ी-बूटियाँ, लहसुन, अदरक, काली मिर्च, प्याज, छोटी और बड़ी इलायची का इस्तेमाल होता है। अवधी खाने की खास बात यह होती है कि इसमें मसाले नहीं, बल्कि मसालों के जूस को डाला जाता है। अवधी खाने शोरबेदार होता है और इसमें पोटली बना कर अदरक-लहसुन आदि डाला जाता है। यही नहीं, खाना बनाते समय मलाई और दूध का भी इस्तेमाल किया जाता है।

तले आलू का सालन

तले आलू का सालन अवध की बहुत ही मशहूर डिश है। इसे बड़ी महफिलों और बड़े आयोजनों में बनाया जाता है। इसको बनाने में ख्याल यह रखना होता है कि जो आलू खरीदे गये हैं, वे साइज में बड़े हों। आलू को दो टुकड़ों में काट दिया जाता है और उसको सरसों के तेल में तला जाता है। सबसे बड़ी कला आलुओं को तलना है। हल्की आंच पर आलू को तब तक तले, जब तक वह हल्के सुर्ख न हो जाएँ। हल्के हाथ से तले, जिससे आलू न टूटे, न जले। आलू के सालन की खूबसूरती इसकी लालिमा लिए रंगत और आलुओं का ठोस होना है। उसके बाद गोश्त को अच्छी तरह से धोकर मसालों में पकाया जाता है। निहारी में ग्रेवी गाढ़ी होती है तो तले आलू के सालन में पतली। पतला सालन बना कर आलू उसमें डाल दिये जाते हैं। मसाले सभी निहारी वाले ही पड़ते हैं, लेकिन यह पोटली वाले नहीं होते। तले आलू का सालन गर्म-गर्म खाया जाए और कोशिश करें कि इसे लखनवी खमीरी रोटी के साथ खाएँ।

अरहर की दाल

21वीं सदी में अरहर की दाल पानी में बनाई जाती है। लेकिन दौरे अवध में अरहर की दाल दूध के साथ बनाई जाती थी। दाल को धोकर हल्की आंच पर पतीली में चढ़ा दिया जाता था। उसमें इतना दूध डाला जाता था, जितने में दाल डूब जाए। दाल को पकने में कम से कम चार घंटे लगते हैं। हाँ आप भी ट्राई करें तो बीच-बीच में इसमें मलाई डालना मत भूलिये। इसके लिए निम्नलिखित चीजें जरूरी हैं।

.मसाले, अदरक, लहसुन, प्याज, नमक-मिर्च स्वादानुसार, हल्की सी सफेद मिर्च, हल्की सी काली और लाल मिर्च, भुना हुआ जीरा, हल्का सा गरम मसाला, खुशबूदार मसाले, इलायची, जावित्री और लौंग।

बावर्ची की सलाह

अरहर की दाल बनाते समय टोंड मिल्क का इस्तेमाल करें तो बेहतर है। अगर ऐसा संभव नहीं है तो दूध में पानी मिला लें। दाल दूध पी लेती है, इसलिए बीच-बीच में हल्के हाथ से चलाते रहें। हाँ पतीली पर ढका ढक्कन पूरा न हटाएँ। बस

उतना ही हटाएँ, जितने से कफगीर (उबाल) पतीली में चली जाए। मलाई का इस्तेमाल करेंगे तो दाल सोंधी बनेगी और टेस्टी होगी। एक बात का ख्याल रहे कि दाल परोसते समय बघार असली घी और लहसुन का लगाएँ। पतीली में इतना दूध हो कि दाल उसमें पूरी तरह से डूब जाए।

इतिहास के झरोखे से

अवध के दौर का यह ऐसा किस्सा है, जिसकी चर्चा लगभग सभी जगह होती है। नवाब आसिफुद्दौला को अरहर की दाल बहुत पसंद थी और खानसामे (वह जगह जहाँ खाना बनता है) में इस दाल को पकाने के लिए विशेष रसोइया हुआ करता था। बाबा काजमी अपनी किताबों के हवाले से बताते हैं कि नवाब साहब को परोसी जानेवाली दाल के बघार में, सोने की गिन्नी बुझा दी जाती थी और नवाब साहब उस दाल को चमचे से खा लिया करते थे। किस्सा यह है कि बावर्ची को दाल बनाने के लिए एड्वांस में 200 गिन्नियाँ दी जा चुकी थीं। जैसा कि होता है, किसी ने नवाब साहब के कान में यह बात डाल दी कि बावर्ची गिन्नी अपने पास रख लेता है, उसे खाने में नहीं डालता! नवाब साहब ने यह बात जब बावर्ची से पूछी तो बावर्ची को गुस्सा आ गया और उसने एक करिश्मा नवाब साहब के सामने पेश किया। थाल में बुझाई जा चुकी गिन्नियाँ रखी थी। उसने दाल में सारी बुझाई गई गिन्नियों को नवाब साहब के सामने पेश कर दिया। नवाब साहब ने जैसे ही उन गिन्नियों में एक गिन्नी को छुआ वह बुरादा बन गयी। नवाब साहब समझ गये कि असलियत क्या है? लेकिन इस घटना के बाद उस बावर्ची ने शाही बावर्ची खाना छोड़ दिया और नवाब साहब ने अरहर की दाल को।

ऐसा माना जाता है कि चांदी, दिल को मजबूत करती है और सोना मर्दानी ताकत को इजाफा करता है। अवधी खानों में मोती भी पीस कर मिलाए जाते हैं।

ताफतान

मैदे में खमर पैदा करके हल्की मिठास के साथ बनायी जाती है ताफतान। यह अफगानी रोटी है। किसी जमाने में लखनऊ में इसका बहुत चलन था। इसे मैदे से बनाया जाता है। मैदे में खमर पैदा करके हल्की मिठास के साथ बनाया जाता है, इसे घी में गूंधा जाता है। इसे तंदूर में बनाय जाता है।

शीरमाल

शीरमाल की शुरुआत गाजीउद्दीन हैदर के जमाने में हुई थी। नवाब गाजीउद्दीन हैदर ने रोटियाँ बनाने की कला की प्रतियोगिता कराई थी। उसी प्रतियोगिता में शीरमाल अपने अस्तित्व में आई। शीरमाल में शीर का मतलब दूध और माल का मतलब घी। इन दोनों चीजों को मैदे में अच्छी तरह से गूंधा जाता है और गूंधे हुए मैदे से बनी रोटी को शीरमाल कहते हैं। सबसे पहले मैदे और दूध को घी में गूंध लिया जाता है। फिर अलग अलग पेड़ों (लोईया) में बाँट दिया जाता है। फिर कच्ची घास से बनी हुई कपड़े की गद्दी पर रखकर इस पर दूध या फिर जाफरान का छिड़काव होता है। जिसने भी शीरमाल को खाया है, वह यह बात जानता होगा कि शीरमाल के ऊपरी हिस्से में एक हल्का सा कट लगा होता है। इस कटे हुए हिस्से की भी अपनी पुरानी कहावत है। नवाब साहब ने जब प्रतियोगिता के बाद रोटियों को चखा और शीरमाल को पहला प्राइज मिला तो जिस हिस्से को काट कर छोड़ा था उसकी याद में आज भी शीरमाल में यह कट लगाया जाता है।

पुलाव

अवध एक ऐसी जगह है, जहाँ पुलाव की ईजाद हुई। पुलाव और बिरिआनी में फर्क है। ये दोनों व्यंजन देखने में भले ही लगभग एक जैसे लगते हों, लेकिन स्वाद में बिल्कुल अलग होते हैं। ये दिखने में नफीस और खूबसूरत हैं। बिरिआनी में मसाले आदि सामने ही दिखायी दे जाएँगे, जबकि पुलाव में मसाला का फ्लेवर मिलेगा। मसालों की रंगत नहीं दिखायी देगी, जबकि स्वाद मिलेंगे। लखनवी पुलाव की शुरुआत नवाब आसिफुद्दौला के जमाने में की गयी। उस समय का फेमस बावर्ची सज्जू की यह ईजाद है। जब बड़ा इमामबाड़ा बन रहा था, उस समय जरूरत ऐसे खाने की थी, जो बल्क में तैयार हो जाए और नवाब भी खा सकें। नवाब अपने ही किसी खास डिश को बनवाना नहीं चाहते थे।

इसमें गोश्त की मसालों के साथ भुनाई की जाती है। दूध के अंदर मसाले डालकर झोल तैयार किया जाता है। मसालों का दूध और पसारे हुए चावल तीन चरण में पुलाव को दम किया जाता है। सबसे पहले गोश्त के साथ यकनी होती है। फिर दूसरे स्टेप में मसालेदार दूध डालना होता है। तीसरा स्टेप पासरे हुए चावल को यकनी और दूध के ऊपर डालकर आटे से ढक्कन को सील कर दिया जाता है और दम के लिए रख दिया जाता है। दम का मतलब हल्की आग में पकाना।

मसाले

तकरीबन 42 तरह के मसाले पड़ते हैं। मुख्य रूप से इलायची, जावित्री, जायफल, तेजपत्ता, छोटी इलायची, कालीमिर्च, लाल मिर्च, खड़ा नमक, संदल बुरादा, बालझड़ इसी तरह के मसाले होते हैं।

- ए-305, ओ सी आर
विधान सभा मार्ग, लखनऊ
मोबाइल: +91 9415508695

कहानी

छोटई कहार

- श्री सुरेश चंद्र शर्मा -

मेरे घर के पश्चिम में, लगभग दो सौ मीटर की दूरी पर एक छोटी सी कहरौटी है, जिसमें चार-पाँच घर कहारों के हैं। उन्हीं में एक घर है पाँचू कहार का। पाँचू कहार का परिवार छोटा है। पत्नी के अलावा दो पुत्र और दो पुत्रियाँ हैं पाँचू के। पाँचू के बड़े लड़के का नाम छोटई है। 'छोटई' नाम इसलिये शायद रखा गया होगा, क्योंकि छोटई अपनी दोनों बहनों के बाद पैदा हुए थे। छोटई का कद सामान्य, रंग साँवला, सिर गोल, आँखें कुछ दबी-दबी सी और नाक तो छोटी चिलम जैसी, ओंठ थोड़ा मोटा और दांत सघन तथा पान की पीक से सराबोर। जाड़े के चारों माह को छोड़कर बाकी के आठ माह छोटई पापलीन की सिली हुई गंजी और जांघिया पहन कर बिताते हैं। आस-पास के चार-पाँच गाँवों में छोटई महरा के रूप में भी जाने जाते हैं।

पढ़ाई-लिखाई से छोटई की मानो पुश्तैनी दुश्मनी थी। इसलिए मात्र दस-पाँच दिन के अलावा उन्होंने बचपन में स्कूल का मुँह नहीं देखा। पिता भी उनके अनपढ़ और मजदूर थे, लिहाजा बेटे की पढ़ाई पर ध्यान नहीं दिया। छोटई को मानो सबसे बड़ी सजा से मुक्ति मिल गयी हो। जीवन के लंबी उतार-चढ़ाव में छोटई तीन-चार तक गिनती सीख पाये, जैसे डेढ़ सौ, दो सौ या अढ़ाई सौ। इन संख्याओं में दस, बीस या पचास अथवा सौ के कितने नोट होंगे, इसे छोटई बचपन से लेकर आज की जीवन संध्या तक भी बताने में पूर्णतया असमर्थ हैं। बचपन से जवानी की दहलीज तक छोटई गुल्ली-डंडा, कबड्डी, झाबर और कुढ़ी के कुशल कलाकार के रूप में जाने जाते थे। ये खेल उन्हें बहुत प्रिय थे। जब गाँव के चरवाहों के साथ छोटई अपनी गायों को लेकर बाग-बगीचे या मैदान में पहुँचते तो तुरंत ही कोई न कोई खेल शुरु कर देते। दो-दो घंटे तक तो एक ही खेल में मस्त रहते। आषाढ़-सावन के महीने में छोटई कुढ़ी कूदते। नागपंचमी के दिन गाँव के सभी लोग पांडे की बड़ी बाग में इकट्ठा होते और प्रात: आठ-नौ बजे से लेकर दोपहर बाद तक कुढ़ी और कुश्ती में मस्त रहते। छोटई लाल लंगोट पहन कर मैदान में उतरते। कुश्ती में वह बेजोड़ थे। अपने से दुगने को पल भर ही पटकनी दे देते। कुढ़ी में भी वह नंबर एक पर रहते थे। उस समय नागपंचमी के दिन छोटई वाह-वाही के साथ दस-बीस रुपया इनाम भी पा जाया करते थे।

कार्तिक महीने की चाँदनी रात में छोटई रात-रात भर झाबर खेला करते थे। रात में आठ बजे तक खाना खा कर अथवा लेट होने पर वैसे ही अपने संगी-साथियों के साथ छोटई झाबर खेलने के लिये निकल पड़ते। खेत पहुँचते ही छोटई अपने साथियों के साथ बड़े जोर-जोर से 'झबर-झबरिया-झाबर' का सामूहिक स्वर में नारा लगाते। उनके समूह नाद को सुनकर दूसरे पास-पड़ोस के गाँव के खिलाड़ी भी उस स्थान पर आ जाते। सारी रात खेल मचा रहता। प्रात: मुँह अंधेर छोटई चुपके से आ कर अपनी खाट पर सो जाते।

किशोरावस्था से ही छोटई ने हलवाही या फुटकर मजदूरी का काम करना शुरु कर दिया था। खेती के काम को छोटई बड़े मनोयोग से किया करते। छोटई बड़े मेहनती थे। अपनी कार्यनिष्ठा और मेहनत के बदौलत गाँव में उनकी माँग बहुत थी। छोटई मियाना, डोली ढोने का भी काम किया करते थे। कुआर से लेकर अगहन तक और फागुन से लेकर आषाढ़ तक छोटई विवाह की सभी तिथियों पर मियाना ढोने के लिये बयाना लिये रहते थे।

हमारे गाँव की संस्कृति में मियाने (पीनश) का बड़ा महत्व था। दूल्हा या दुल्हन इसी मियाने द्वारा ही ले आये और ले जाये जाते थे। आज के वैज्ञानिक युग में पीनश का अस्तित्व नष्ट हो गया। आज तो टैक्सी मोटर सब ओर दिखाई पड़ते हैं। छोटई अपनी मंडली के साथ मियाना ढोया करते थे। मांगलिक उत्सवों के बाद के समय में छोटई खेती का काम किया करते थे। मेहनत-मजदूरी और कहारगीरी के साथ-साथ उनमें जो सबसे अनोखा गुण था, वह था, उनका लोकगायक और लोकनर्तक का होना। सावन और फागुन के महीने में छोटई के ऊपर जो दीवानगी चढ़ती, वह देखने लायक होती थी। सावन के महीने में छोटई काले-काले बादलों के क्रीड़ा व्यापार के साथ उन्मादित हो जाते थे। सावनी गीतों (कजरी) को गाने और झूला झूलने और झुलाने में छोटई को खूब मजा आता था। छोटई सभी प्रकार के लोकधुन वाले गीत गाने में कुशल थे। चाहे कजरी हो या फाग, चाहे कहरवा हो या पूर्वी, छोटई को सभी में महारत हासिल थी।

सावन के महीने में जब आकाश में काले-काले बादल छा जाते और बिजुरी चमकने लगती तो छोटई गाँव के चार-छ: छोकरों को लेकर किसी पेड़ की मोटी और मजबूत डाल पर पटोहा (झूला) डाल आते और स्वयं ही घर-घर जाकर सूचना भी दे

> छोटई की इस दशा को सुनकर होली में अपने गाँव गया। एक दिन देखा कि छोटई गाँव के मध्य से होकर जानेवाली पक्की सड़क के बीचों-बीच खड़े होकर आने-जाने वाली गाड़ियों को रोक रहे थे। कंकड़-पत्थर फेंक रहे थे। गाड़ी चालक या तो अपनी गाड़ी बगल कर लेते या खड़ी करके उन्हें दूर करने का प्रयास करते। छोटई को जब इस प्रकार के काम से रोका जाता है तब वे और आउ-बाउ बकते हैं।

आते कि 'डाल पर झूला पड़ गया है, जिसको खेलना हो, आ जाओ।' उनका झूला झूलने और झुलाने का यह क्रम महीने-डेढ़ महीने तक चलता रहता। तीज तक हिंडोले का आनंदोत्सव चलता है। झूला झुलाने में उनके पैरों की कला निराली थी। गाँव में दो-चार लोगों को छोड़कर बाकी उनसे सभी हारी मान लेते थे। छोटई घंटे-आधे घंटे तक झूला झुलाने के बाद खुद झूले पर बैठ जाते और मदमस्त होकर कजरी गाने लगते। साथ के संगी साथी भी छोटई के गीत को किसी प्रकार से पुराते थे। छोटई की एक कजरी तो पूरे गाँव में प्रसिद्ध है। गाँव के छोकरे उनसे यह गीत अवश्य सुनते। सबकी इच्छा और अपनी गायकी की प्रशंसा सुनकर छोटई बड़े ही सुरीले कंठ से यह कजरी शुरू कर देते -

'सखी खेलिला अबहीं सवनवा वा
फिर नैहर सपनवा बा नाऽ।
लगि हैं माह कुआर
अइहैं सजना तोहार,
उनके संग सगरौ बजनवा बा,
फिर नैहर सपनवा बा नाऽ।'

छोटई बड़े ही मिलनसार मिजाज के हैं। सभी के दु:ख-सुख के पक्के साथी हैं। गाँव देश में किसी के यहाँ कुछ भी पड़ जाए, छोटई वहाँ जरूर मिलेंगे। सभी काम के लिए दौड़े रहते हैं। चाहे पतरी दोना-लाना हो या कुम्हार के यहाँ से कुल्हड़ और अन्य मिट्टी के पात्र। चार-पाँच गाँव से मट्ठा, छोटई अकेले ढो लाते हैं। चारपाई बिस्तर आदि भी ढोने को तैयार रहते हैं। लोग उनकी सेवा भी बीच-बीच में करते हैं। गांजा, तमाखू, बीड़ी और रस-दाना बराबर लेकर छोटई के लिए तैयार रहते हैं। छोटई नशा-पताई, रस-दाना, चबैना करते हुए अपने काम में मगन रहते हैं। यही उनकी विशेषता है। शादी-विवाह के उत्सव पर या अन्य मांगलिक कार्यों पर छोटई नाच-गाने वालों या बाजा बजाने वालों के साथ बड़ी जल्दी घुल-मिल जाते हैं। जब नाच-गाना शुरु होता है, तब छोटई नाचनेवालों के साथ थिरक-थिरक कर नाचते और गाते हैं। उस समय उनके शरीर की भाव-भंगिमा कुशल नर्तकों को भी शर्मिंदा कर देती है। पैरों की थिरकन और कमर की लचकन का क्या कहना? दर्श क छोटई को खूब शाबाशी देते रहते हैं और छोटई अपने आप में खोये रहते हैं। भगवान ने उन्हें अच्छा स्वर भी दिया है। गाँव में जब किसी की बारात विदा होने लगती है या लड़कियों की शादी में द्वार पूजा के समय छोटई पहले से ही अपना तन-मन नृत्य-कला के प्रदर्शन हेतु तैयार किए रहते हैं। विवाहोत्सव पर गाने वाले छोटई के गीतों में एक गीत तो बहुत ही लोकप्रिय है, जिसको लोग छोटई से याद दिला-दिलाकर सुनते हैं। छोटई का वह गीत उनके मधुर कंठ के साथ लोगों को रसमय कर देता है। वह गीत इस प्रकार है -

'झकोर मारै झुलनी, झकोर मारै झुलनी
साड़ी लहराई हो,
झकोर मारै झुलनी।'

छोटई जहाँ एक ओर कुशल लोकगायक, लोकनर्तक और मेहनती हैं, वहीं बहुत ही सीधे-सादे और मोटी बुद्धि के भी हैं। पहले ही बताया जा चुका है कि छोटई को पढ़ाई लिखाई से कुछ वास्ता नहीं था। उन्हें तीन-चार गिनतियाँ भी जो याद हुई, वह लोक व्यवहार में सुन सुनाकर। शादी-विवाह में दूल्हे को ले जाने के लिए और दुल्हन को ले आने के लिए छोटई की मंडली को सबसे पहले लोग याद करते थे। मेहनत और छोटई की ईमानदारी भी लोगों को बरबस उनकी ओर खींच लाती थी। जब उनके पास कोई साई देने वाले आते, तो छोटई प्राय: मेरे पास या गाँव के किसी अन्य पढ़े-लिखे के पास दौड़कर आते थे। पास पहुँचते ही कहते 'हे भइया हमारि एक ठे साई चलिके लिखि देत्या। तू तो जनबै करतय्या कि हम मूरख होई, कुछ पढ़े-लिखे नाहीं बाटीं।' छोटई की इस प्रकार की मीठी और सहज वाणी को सुनकर और उनकी साफगोई पर मैं अपना काम छोड़कर उनके साथ चल पड़ता। वहाँ उनके घर पहुँचने पर कभी-कभार मैं बहुत आश्चर्य चकित हो जाया करता था। छोटई के अज्ञान और उनकी मूर्खता पर होने वाले घाटे से मैं उनकी यदाकदा रक्षा भी कर दिया करता था। डोली चाहे चार कोस दोने को हो या आठ कोस, उन्हें अपनी मजदूरी माँगने का सहूर नहीं था। मुँह से उनकी रटी-रटाई गिनतियों में जो गिनती आगे निकल जाती, वही भक्क से कह जाते। मैं अवाक और

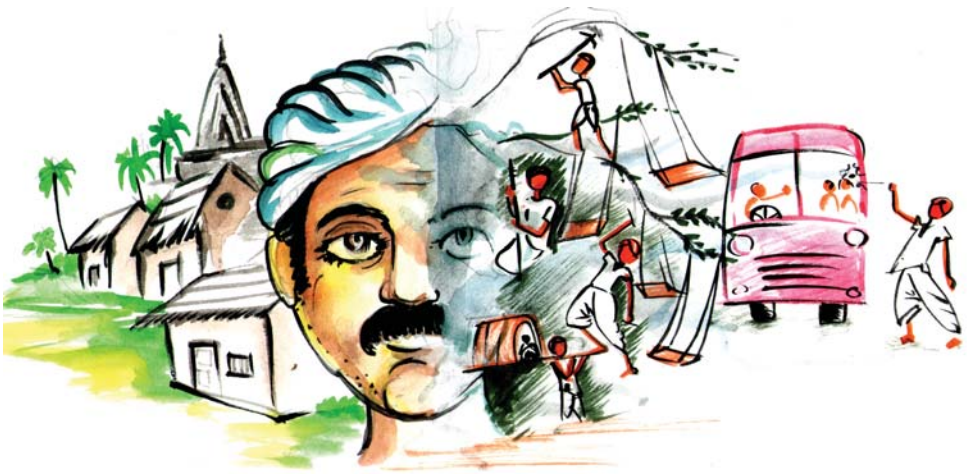

विस्मय में डूब जाता कि छोटई को दुनिया का उतार-चढ़ाव, छल-छद्म नहीं प्रभावित कर पाया। चालाकी उनमें रंच मात्र भी नहीं समा सकी। चार कोस की दूरी तक डोली ले जाने की मजदूरी यदि छोटई डेढ़ सौ माँगते तो कभी-कभी आठ कोस की दूरी तक डोली ढोने की मजदूरी भी वही डेढ़ सौ ही बता जाते। मैं स्थिति को सामान्य करके उनका घाटा नहीं होने देता। मैंने बहुत बार बताया कि 'इतना-इतना माँगा करिए।' किंतु छोटई तो पोंगा पंडित ही थे, कुछ समझते और जानते नहीं थे। छोटई लंपट, अज्ञानी, मूरख तो थे ही नंबर एक के नशेड़ी और भुलक्कड़ भी थे। गांजा और भांग ही तो उनका प्रिय भोग था।

साई लिखवाते समय कागज पर अपनी मजदूरी के साथ चार तोला गांजा, चार बंडल बीड़ी और चार माचिस लिखाना न भूलते। छोटई अपने खाने-पीने की बात पहले ही कह जाते थे। साई देनेवाले से साफ-साफ कहते कि 'हम बरात मा कच्चा खाना आपन अलगै बनाउब, पक्का खाना हम लोग बहुत कम खाइत अहै, ओसे पेट खराब होइ जात है। हमका दाल, चावल, आटा, खटाई, नमक और देसी घी जरूर मिलैके चाही। दो ठे हड़िया जरूर दई देहा, उही मा खाना बन उबै।' साई देनेवाले छोटई की सभी माँगों को स्वीकार कर लेते। बरात में जनवास वाली जगह पर पहुँचते ही छोटई अपनी खान-पान की व्यवस्था शुरू कर देते। छोटई अपने इसी देसीपन और संयम की बदलौत हमेशा रोगमुक्त रहते हैं।

छोटई बीस-बाईस साल की उमर तक गबरू जवान बने घूमते थे। शादी-विवाह की चिंता से मुक्त थे। लोगों के कहने पर जब उन्होंने विवाह का मन भी बनाया तो उस चढ़ती उम्र में कोई उनके विवाह के लिए तैयार नहीं हुआ। दो-तीन साल तक छोटई देखते रहे, फिर निराश होकर घर से लगभग बीस-पच्चीस कोस दूर पूरब में जौनपुर और आजमगढ़ की सरहद के किसी गाँव से एक सोलह-सत्रह साल की लड़की जो अपंग थी, पत्नी के रूप में ब्याह कर ले आये। वह लड़की खड़ी नहीं हो पाती थी। बैठे-बैठे ही चलती और सब काम भी करती। वक्त की रफ्तार के साथ छोटई के जीवन की भी गति बढ़ती गई। आज छोटई दो पुत्र और तीन पुत्रियों के पिता हो गए हैं। दो पुत्रियाँ तो अपने घर आने-जाने लगी हैं। तीनों बच्चे अभी दस-पंद्रह बरस के ही हैं। पारिवारिक जीवन में भी छोटई ने खूब संजोया-संभाला। कोई जान नहीं पाया कि उनके ऊपर क्या गुजर रही है। छोटई पक्के किसान और मेहनती मजदूर भी थे। समय और हवा के साथ अपनी चाल-ढाल बदलने में वह माहिर थे। इसी से उनकी गृहस्थी कभी नहीं बिगड़ी।

छोटई बचपन से ही बड़े भोरहरे उठा करते थे। रात में चार बजे ही उठ जाना उनका बारहों महीना का काम था। रात में खाट के अगल-बगल एक छोटे गड्ढे में आग दबाये रहते थे। जब मन होता रात में उठकर तमाखू या गांजा पीते और फिर लेट जाते। इधर-उधर, घूमते-टहलते। भोर में टहलते हुए छोटई एक प्रभाती प्राय: गाते और मानो आस-पास के लोगों को जग जाने का संकेत भी करते। उनका वह जागता गीत मुझे बहुत ही रुचता है -

'जागा हो शिव दानी सबेरा भया,
जागा हो शिव बाबा सबेरा भया।'

छोटई प्रात:काल खेत-खलिहान तथा बाग-बगीचों में एक घंटा जरूर घूमते। कभी-कभी तन्मय होकर कहीं बैठकर भी अपने प्रिय भजन गाया करते। उनके भजनों में एक गीत तो हृदय तंत्री को झकझोर देता था। वह गीत इस प्रकार से है -

'खाया हमरे मथुरा कै दाना-पानी हो,
नदानी जिन दिखाया मोहना।
किहा मथुरा से जल्दी लौटानी हो,
नदानी जिन दिखाया मोहना।'

हमारे गाँव की संस्कृति का एक जीवंत रूप छोटई में समाहित है। अपनी जीवन-शैली के निरालेपन के कारण उन्होंने एक अलग पहचान बना ली है। छोटई अब साठ साल के ऊपर हो गए हैं। गाँव से आने वालों ने बताया कि अब वे पागल हो गए हैं। सबके सामने नाचते और कूदते रहते हैं। महीनों नहाते-धोते नहीं। हफ्तों बिना खाए-पिए इधर-उधर घूमते रहते हैं। खाना देने पर भी कुछ खाते हैं और कुछ इधर-उधर फेंक देते हैं। कुछ लोग यह भी बताते हैं कि छोटई के ऊपर किसी पहलवान या ब्रह्म की छाया पड़ गई है। छोटई की इस दशा को सुनकर होली में अपने गाँव गया। एक दिन देखा कि छोटई गाँव के मध्य से होकर जानेवाली पक्की सड़क के बीचों-बीच खड़े होकर आने-जाने वाली गाड़ियों को रोक रहे थे। कंकड़-पत्थर फेंक रहे थे। गाड़ी चालक या तो अपनी गाड़ी बगल कर लेते या खड़ी करके उन्हें दूर करने का प्रयास करते। छोटई को जब इस प्रकार के काम से रोका जाता है तब वे और आउ-बाउ बकते हैं।

मुझे छोटई की वर्तमान दशा पर तरस आ गई। प्रकृति और ईश्वरीय क्रूरता पर मन बिदक गया। मन में यही भाव जगा कि 'प्रभु! छोटई को ठीक कर दो।' देखिए, हमारी ग्रामीण संस्कृति के पोषक और संवाहक छोटई इस धरती पर अब कितने दिन के मेहमान हैं।

- ग्राम: मिसरौली
लंभुआ, सुलतानपुर-222302
उत्तर प्रदेश
मोबाइल: +91 7379736426

कितना प्रासंगिक है 'मेक इन इंडिया अभियान'

- श्री अशोक दिगंबर चिंचोलकर -

भारत की नई सरकार ने सत्ता संभालने के बाद कुछ नए कदम उठाने के उद्देश्य से कई कार्यक्रमों की घोषणा की है। इन सभी घोषणाओं में 'मेक इन इंडिया' अभियान का नाम सबसे ऊपर है। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य विनिर्माण क्षेत्र में चीन को पछाड़कर भारत को दुनिया का सबसे बड़ा विनिर्माण हब बनाना है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की प्रबल इच्छा है कि भारत में उपलब्ध मानवशक्ति को कौशलपूर्ण बनाकर उसे 'मेक इन इंडिया' अभियान से जोड़ा जाए, ताकि देश में व्याप्त बेरोजगारी की समस्या से निजात पाया जा सके। हालांकि देश में ऐसी पहल पहली बार नहीं हुई है। इससे पहले भी सरकारें आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए विनिर्माण क्षेत्र में निवेश पर ध्यान देती रही हैं। **2011** में पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह ने राष्ट्रीय विनिर्माण नीति की घोषणा कर इस महत्वपूर्ण क्षेत्र पर ध्यानकेंद्रित करने के लिए पहली बार प्रयास किया था। लेकिन इसका प्रचार-प्रसार कम था और इसका ज्यादा प्रभाव नहीं दिखाई दिया।

'मेक इन इंडिया' अभियान की आधिकारिक वेबसाइट पर एक नजर डालने से यह पता चलता है कि जिन **25** क्षेत्रों को निर्माण हेतु चयनित किया गया है, उनमें से **22** भारी उद्योग से जुड़े हुए हैं और विशेष तकनीक पर निर्भर हैं। वर्तमान में भारत इन विशेष तकनीकों के लिए दूसरे देशों पर निर्भर है। सरकार द्वारा चयनित क्षेत्रों के कम से कम नौ उद्योगों जैसे ऑटोमोबाइल, ऑटोमोबाइल के कलपुर्जों, निर्माण, रक्षा विनिर्माण, विद्युत मशीनरी, रेलवे, अक्षय ऊर्जा, थर्मल पॉवर, तेल तथा गैस आदि में महत्वपूर्ण प्रतिस्पर्द्धा और इस्पात की खपत बढ़ने की बहुत संभावना है।

> हालांकि वास्तविकता यह है कि आपूर्ति और माँग के बीच के फासलों ने कीमतों पर इतना दबाव बनाया है कि भारत का इस्पात बाजार खरीदारोन्मुख बन गया है। फिर भी भारतीय बाजार में इस्पात की बढ़ती माँग के कारण निर्यातक देशों के लिए एक आकर्षक जगह बना हुआ है। जैसा कि हम जानते हैं, 'मेक इन इंडिया' अभियान का उद्देश्य देश को वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में रूपायित करने और यहाँ लाखों रोजगार के अवसर पैदा करना है। हमें यह भी पता है कि हमारा प्रतिस्पर्द्धी चीन निर्यात की दिशा में बहुत आगे है और हमसे आगे बढ़ने की कोशिश हमेशा करता रहेगा, जिसे टक्कर देना एक बड़ी चुनौती है।

सरकार की 'मेक इन इंडिया' अभियान की चमक विदेश में भले ही हो, लेकिन भारत में कहानी अलग है। देश में इस्पात के उत्पाद बनाने में निर्माताओं को कई मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। प्राथमिक परेशानी यह है कि देश में कच्चेमाल की कीमतें अधिक होने की वजह से भारतीय इस्पात की कीमत वैश्विक कीमतों की तुलना में अधिक है।

इसी प्रकार आयातित इस्पात की कीमतों की तुलना में घरेलू इस्पात उत्पादन की कीमतें अधिक होने की वजह से इस्पात उत्पादकों को अपनी मिलों को कम क्षमता पर प्रचालित करना पड़ रहा है। इसी क्रम में विदेशी उत्पादकों, विशेषत: चीन द्वारा अपने उत्पादों की डंपिंग करने की वजह से भारत को वित्त वर्ष **2015** के दौरान **9.31** मिलियन टन इस्पात का आयात करना पड़ा, जो पिछले वर्ष की तुलना में **71%** अधिक है। साथ ही लौह अयस्क खनन पर लगे प्रतिबंध के कारण वित्त वर्ष **2010** के **218** लाख टन खनन की तुलना में वित्त वर्ष **2015** में लौह अयस्क खनन घटकर **115** लाख टन हो गया।

वैश्विक स्तर पर वर्ष **2013** में जिस लौह अयस्क की कीमतें अधिकतम **152** डालर/टन थी, वह अब गिरकर लगभग **50** डालर/टन से भी कम हो गई है। लेकिन भारत में लौह अयस्क की कीमतों में महज **650** रुपये प्रति टन की गिरावट ही दर्ज हुई है। जेएसडब्ल्यू स्टील समूह के संयुक्त प्रबंध निदेशक और मुख्य वित्तीय अधिकारी श्री शेषगिरि राव इस स्थिति को अजीबोगरीब मानते हैं और उनका कहना है कि अपनी घरेलू मंदी की वजह से चीन इस्पात के एक बड़े निर्यातक के रूप में उभर रहा है और वैश्विक स्तर पर अन्य मुद्राओं के अवमूल्यन के कारण चीन के लिए निर्यात बहुत उपयोगी सिद्ध हो रहा है। भारत में इस्पात उत्पादन पर अधिक लागत और आयात पर कम शुल्क (टैक्स) के कारण यहाँ इस्पात का आयात बहुत बढ़ गया था और भारतीय इस्पात उद्योग की हालत दिन-ब-दिन खराब होती जा रही थी। लेकिन अभी सरकार द्वारा लगाए गए शुल्क के कारण स्थिति में कुछ बदलाव दीख रहा है। भारत के अलावा कई देशों ने चीन से सस्ते इस्पात के आयात के विरुद्ध कुछ व्यापारिक प्रतिबंध लगा दिए हैं।

आज चीन प्रतिवर्ष कुल **1.16** अरब टन इस्पात का उत्पादन कर रहा है, जो दुनिया की इस्पात उत्पादन क्षमता का लगभग **50%** है। चीन में आई मंदी की भरपाई के लिए चीनी इस्पात मिलों ने सस्ते दाम पर दुनिया के बाजार में अपने इस्पात उत्पादों को झोंक दिया है। अमेरीका ने नवंबर **2014** में चीन से उत्पादित इस्पात

की चादरों, क्वॉयलों और रेल पटरियों के आयात पर **25.2%** और ताइवानी उत्पादों पर **12%** शुल्क लगाया।

भारत में लंबे उत्पादों पर **7.5** प्रतिशत और फ्लैट उत्पादों पर पाँच फीसदी का आयात शुल्क लगता है। मुक्त व्यापार समझौते के कारण कोरिया और जापान से आयातित इस्पात पर शुल्क नगण्य है। भारत का इस्पात उद्योग पहले ही समस्याग्रस्त है, ऊपर से अभी चीन, रूस और कोरिया से इस्पात की डंपिंग को रोकने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदम पर्याप्त नहीं है। अभी भारतीय इस्पात उद्योगों को घरेलू स्तर पर बहुत सहयोग की जरूरत है। उत्तम गल्वा स्टील के उप प्रबंध निदेशक, अंकित मिगलानी कहते हैं कि 'लौह अयस्क की कमी के कारण भारत में इस्पात संयंत्र बंद हो रहे हैं। हालांकि स्थिति को काबू में करने के लिए कई कदम उठाए गए हैं, लेकिन लौह अयस्क खदानों पर से खनन पर लगी रोक कब हटेगी, यह स्पष्ट नहीं है।' इसी प्रकार कर्नाटक में कई स्पंज आयरन इकाइयाँ बंद हो गई हैं। ज्यादातर बड़ी कंपनियाँ अपनी वास्तविक क्षमता से कम क्षमता पर प्रचालन कर रहे हैं। वीजा स्टील के प्रबंध निदेशक श्री विशाल अग्रवाल का मानना है कि 'मेक इन इंडिया अभियान के मामले में यदि सरकार गंभीर है, तो उसे चीन पर निरंतर नजर रखना होगा और उसकी गतिविधियों के अनुरूप तेजी से काम करना होगा।'

कच्चेमाल की कीमतों में बढ़ोत्तरी और कमी के कारण कई तरह की समस्याएँ एक साथ उत्पन्न हो रही हैं। उदाहरण के लिए भारत में हॉट रोल्ड क्वॉयल की कीमत **30,000** रुपए प्रति टन से ऊपर है, जबकि चीन से आयातित हॉट रोल्ड क्वॉयल की कीमत सभी करों के बाद अधिकतम **28,000** रुपए प्रति टन है। वर्तमान में चीन प्रतिवर्ष **120** लाख टन इस्पात का निर्यात कर रहा है, जिससे विश्व में इस्पात की कीमतों पर दबाव बहुत बढ़ गया है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लौह अयस्क की कीमतों में **60%** गिरावट आई है, लेकिन भारत में यह उसी अनुपात में कम नहीं हुई। पेट्रोलियम उत्पादों के मामले में भी ऐसा ही हुआ है। गैस की कीमतें भी बहुत अधिक हैं। भारत में लौह अयस्क की कीमत अधिक से अधिक **1000-1500** रुपए प्रति टन होनी चाहिए, लेकिन ये अभी भी **2500** से **3000** रुपए/टन के बीच में बनी हुई है। असंगत क्षेत्रीय गतिविधियों एवं कमजोर माँग की वजह से इस्पात निर्माताओं की वित्तीय स्थिति पर बुरा असर पड़ रहा है।

टाटा स्टील के कार्पोरेट कम्यूनिकेशन और नियामक मामलों के समूह निदेशक चाणक्य चौधरी ने कहा है कि 'भारतीय इस्पात उद्योग देश के विकास की कहानी लिखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है और 'मेक इन इंडिया' अभियान इस उद्योग की क्षमता को निखारने का अवसर प्रदान करता है।' इस संदर्भ में एन सी ए ई आर के नए अनुसंधान से पता चला है कि भारतीय इस्पात उद्योग वर्तमान में कच्चेमाल की अनुपलब्धता तथा भारी आर्थिक समस्याओं से जूझ रहा है। हालाँकि रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि भारतीय इस्पात उद्योग भारत के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग **2%** और औद्योगिक हिस्सेदारी में लगभग **16%** का योगदान करता है, जो एक स्वस्थ अर्थव्यवस्था और विशेष रूप से विनिर्माण और निर्माण क्षेत्र के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। साथ ही एन सी ए ई आर के नए अध्ययन में यह भी कहा गया है कि 'मेक इन इंडिया' के प्रति उत्साह तो है, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि इस्पात उद्योग को दरकिनार किया गया है।

वर्तमान में भारतीय इस्पात उद्योग की हालत यह है कि इस उद्योग में मुनाफा बहुत कम रह गया है। इसकी वजह से इस क्षेत्र में नए निवेश नहीं हो रहे हैं, जिसके कारण इस क्षेत्र में संभावनाएँ कम होती जा रही हैं और देशी एवं विदेशी बाजार में निराशा बनी हुई है। पिछले वित्त वर्ष की शुरुआत भारतीय बंदरागाहों पर चीन, जापान और कोरिया जैसे देशों से आयातित इस्पात की लदान में काफी बढ़ोत्तरी हुई है। भारतीय बंदरगाहों पर लौह व इस्पात की लदान **1.9** मिलियन टन से बढ़कर अब **4.1** मिलियन टन हो गयी है, अर्थात इसमें **117%** बढ़ोत्तरी हुई है। इन परिस्थितियों ने घरेलू इस्पात कंपनियों को अग्नि परीक्षा के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। लेकिन सवाल यह उठता है कि इन देशों की ओर से भारतीय बाजार में अचानक ऐसी दिलचस्पी क्यों दिखाई जा रही है? वैसे तो जापान और दक्षिण कोरिया बहुत हद तक मोटर वाहन ग्रेड के इस्पात का निर्यात करते हैं। क्योंकि भारत में ऑटोमोबइल का बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जाता है और ये देश पहले भी भारत को ऑटोमोबाइल ग्रेड के इस्पात का निर्यात करते रहे हैं। जापान और दक्षिण कोरिया से इस्पात लदान में बढ़ोत्तरी कोई नई बात नहीं है। क्योंकि वहाँ की इस्पात उत्पादक कंपनियों के साथ भारत का मुक्त व्यापार समझौता (एफ टी ए) है और वे इस समझौते के तहत भारत में निर्यात करते हैं। लेकिन चीन से हॉट रोल्ड क्वॉयल का निर्यात हमारे लिए सीधे प्रतिस्पर्द्धा और चिंता का विषय है। भारत सरकार के इस्पात मंत्रालय की संयुक्त संयंत्र समिति (जेपीसी) के अनुसार देश में वित्तवर्ष **2015** के दौरान **9.3** मिलियन टन परिसज्जित इस्पात का आयात किया गया, जो पिछले साल से **71.1%** अधिक है, जबकि भारत द्वारा निर्यात की गई मात्रा केवल **5.5** मिलियन टन ही थी। इस बढ़े हुए आयातित इस्पात का बड़ा हिस्सा चीन से आयात किया गया।

भारत में चीन से किसी भी तरह के इस्पात का आयात भारतीय इस्पात कंपनियों के लिए एक बड़ी चिंता का कारण बनने

जा रहा है। चीनी इस्पात के आयात में पिछले वित्तवर्ष के दौरान लगभग 70% की वृद्धि हुई है। इसकी दो वजहें हैं, पहली यह कि चीनी इस्पात की कीमतें भारतीय इस्पात की कीमतों से काफी कम हैं और दूसरी यह कि एक भारतीय आयातक यदि चीन से इस्पात का सस्ता आयात करता है और उससे कुछ इस्पात की सामग्री तैयार करके किसी विदेशी व्यापार समझौते वाले देश को निर्यात करता है तो उसे निर्यात शुल्क में छूट मिल जाती है। इस प्रकार चीन से आयातित यह कम कीमत वाला इस्पात जापान, दक्षिण कोरिया और यहाँ तक कि घरेलू इस्पात की तुलना में ज्यादा फायदेमंद बन जाता है। वर्ल्ड स्टील एसोसिएशन के अनुसार वर्ष 2015 के दौरान विश्व में इस्पात की माँग 0.4% बढ़ी और आशा है कि 2016 में यह 1.4% तक बढ़ेगी। जबकि भारत में यह माँग लगभग 5-6% बढ़ने की संभावना है। वैसे तो यह भी कयास लगाया जा रहा है कि भारतीय इस्पात उद्योग की विकास दर देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी), जो दिसंबर की तिमाही में 7.5% थी, उससे मेल खाते हुए बढ़ेगी।

हालांकि वास्तविकता यह है कि आपूर्ति और माँग के बीच के फासलों ने कीमतों पर इतना दबाव बनाया है कि भारत का इस्पात बाजार खरीदारोन्मुख बन गया है। फिर भी भारतीय बाजार में इस्पात की बढ़ती माँग के कारण निर्यातक देशों के लिए एक आकर्षक जगह बना हुआ है। जैसा कि हम जानते हैं, 'मेक इन इंडिया' अभियान का उद्देश्य देश को वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में रूपायित करने और यहाँ लाखों रोजगार के अवसर पैदा करना है। हमें यह भी पता है कि हमारा प्रतिस्पर्द्धी चीन निर्यात की दिशा में बहुत आगे है और हमसे आगे बढ़ने की कोशिश हमेशा करता रहेगा, जिसे टक्कर देना एक बड़ी चुनौती है। ऐसी विषम परिस्थिति में हमारा महँगा घरेलू इस्पात चीन के साथ स्पर्द्धा कैसे कर पाएगा? जब देश में पूँजी निवेश के सारे दरवाजे खोले जा रहे हैं, तो इस्पात के आयात पर रोक लगाना सरकार के लिए आसान नहीं होगा। हालाँकि घरेलू उत्पादकों के दबाव में सरकार ने इस्पात के आयात को हतोत्साहित करने के लिए आयात शुल्क को बढ़ाया और एंटी डंपिंग शुल्क भी लगाया है। हालांकि इसमें कोई दो राय नहीं है कि वर्तमान सरकार के स्मार्ट सिटी, मेक इन इंडिया और 2022 तक सबके लिए आवास जैसे महत्वाकांक्षी अभियानों में गतिशीलता आने से आगामी वर्षों में इस्पात की प्रतिव्यक्ति खपत में काफी वृद्धि होगी।

- वरिष्ठ प्रबंधक (सतर्कता)
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम - 530031
मोबाइल:+91 9646444360

सत्यमेव जयते

(पत्रिका के मुखचित्र को देखकर
श्री एम शिव प्रसाद जी के मन में जगी स्फूर्ति से उत्पन्न कविता)

अपनी सुरक्षा की खोज में रही
इक नन्हीं सी चिड़िया
सबसे बढ़कर सुंदर औ' सुदृढ़
इक आवास बनाने बढ़िया
मन की उमंग ने पंख पसारे
दिन-रात की चिंता किये बिना
शीत गरमी से लड़ते-लड़ते
तृण-तृण की खोज में हँसते-गाते
खेलते-नाचते, कानन की सैर करते-करते
बड़ी उमंग से गुनगुनाते
तिनकों पर नजर डालते-डालते
दरख्त की मजबूत डाली पर
झूले-से लटकते-लटकते
अपना हुनर दिखाते-दिखाते
तिनकों को बुनते-बुनते
अपना एक घोंसला
सबसे निराला सबसे सजीला
चिड़िया ने बना लिया।

उसने चाचा नेहरू की याद दिलाई
आराम हराम का नारा सच बनाया।
उसे न आंधी की चिंता
न चोरी की धमकी
न मिट जाने का भय
सृष्टि ने दिया उसे अभय
सबको अपनी कला से रिझाते-रिझाते
मौन भाषा में कहा
'हँसो और हँसाओ'
जीवन में हमेशा कुदरत का रौनक
बढ़ाते जीना चाहिए
विनाश नहीं, विकास चाहिए।
अपनी जान की सुरक्षा
अंडों को फुदकने की आकांक्षा
सृष्टि विकास में योगदान
जियो और जीने का वरदान
उस नन्हीं चिड़िया की आकांक्षा को
सुगंध पत्र ने सुंदर रूप दिया
सबके मन को लुभाया सुगंध ने
सबके दिल को जगाया सुगंध ने।

श्री राम प्रसाद यादव की कविताएँ

ऐसा कहा जाता है

चाँद रौंद कर चला गया
मछली जीती तो कैसे जीती
बिना पानी के
(बिन पानी सब सून)
सुना है कहीं ईश्वर रहता है
वह तो चीखती चिल्लाती
अनुनय विनय करती रही
मदद की गुहार लगाती रही
मगर कहीं कोई मदद नहीं थी
सो मदद नहीं मिली
कटघरा खाली का खाली रहा
दूर दूर तक उसके हक में
कहीं कोई गवाह न था
सत्यमेव जयते की आर्षवाणी
बंद कमरे में पंखे से लटकी
लाश की तरह झूलती रही
मगर सत्य उससे दूर ही रहा
सत्य के लिए वह तरसती ही रही
न्याय की देवी की आँख पर पट्टी थी
काश कि वह
गूंगी और बहरी भी होती
कहते हैं ईश्वर
एक स्थापित सत्य है
मुझे नहीं मालूम
ऐसा कहा जाता है
कहानी लंबी हो सकती थी
लेकिन मैं यहाँ विराम देना चाहूँगा
बस गुजारिश है
कि आप विचार करें
क्योंकि जो है
और जो हो रहा है
क्या आप सहमत हैं
या कुछ नये की तलाश
और पुराने के बदल की जरूरत है
सत्य के रोज रोज की बली
देखी नहीं जाती
यह अकेली दिल्ली की बेबसी नहीं है
हर दारुलसलाम की त्रासदी है
सब कुछ ऊपर वाले के भरोसे
तो छोड़ा नहीं जा सकता।।

जिन्हें मेरे हक में

जिन्हें मेरे हक में
बोलना था
खामोश रहे
मैं क्या सफाई देता
अपनी सफाई में
तकरीर चलती रही
और मैं
सजायाफ्ता हो गया
सितारों की
इस महफिल में
एक मैं
टूट भी जाता हूँ
तो क्या फर्क पड़ता है
शोहरत में
उनकी शानो शौकत में
मैं आज
धूल बनकर
जान पाया
कि धूल
कैसे बनती है
आसमान
अपने आँसू
संभाल कर रखो
लोगों को तुम्हारी
बहोत जरूरत है

गुलाब

गुलाब
कांटों के बीच
कैसे रह लेते हो
यह चुभन
यह दंश
कैसे सह लेते हो
यह दर्द
यह तड़प
यह बेजार जिंदगी
न जाने तुम
कैसे गह लेते हो

एक अश्लील पोर्नो

मैं भी कितना पागल हूँ
बंद मकानों को कविता सुनाता हूँ
अक्सर आता जाता रहता हूँ
कि दरवाजा कभी तो खुला मिले
पलाश मुतासिर
गुलमोहर ख्वाब
ताजा जर्द
सरसों के फूल की बूटिक लिए
सामने दरवाजे उसके
पीले पीले फूले अमलतास की
अंगूरी सजधज में खड़ा हूँ
मैं जानता हूँ उसकी अपनी रवायत है
उसके अपने कानून के धर्मशास्त्र हैं
मेरे तर्क सुने तो क्यों सुने
माना वहाँ लैला मजनू
हीर रांझे के रेशमी मुलायम किस्से हैं
त्याग और तपस्या की प्रेरणा है
आदर्श की एक से बढ़कर एक मिसालें हैं
कल्पित अकल्पित महानायकों के
लंबे और असमाप्त आख्यान हैं
तंग बेमकां लोग, तुम तो सुनो
मगर तुम क्यों सुनो
तुम तो मशरूफ हो
कल के निवालों के जुगाड़ में
मेरी नज्म तुम्हारे लिए
रोटी नहीं एक गाली है
एक अश्लील पोर्नो
माफ करना
गट्टर में फेंक अब सारी नज्में
मैं लौट जाना चाहता हूँ
कटते पलाश
बुढ़ाते बरगद के अपने
बेदफन लाशों के गाँव में।

आमार सोनार बांगला

पेट में अकूत कोयले
पीठ पर पसरे हैं सुनहले धान के खेत
कहाँ है आमार सोनार बांगला
आजू बाजू पलाशों के जंगल

जिस पर पलते हैं लाह के कीट
फिर भी जिंदगी कोकून की व्यथा है
सुबह शाम परछाई लंबी बनी रहती है
रोशनी बस ऊँची इमारतों का रिसाव है
अब तक पेट खाली
बदन नंगा थरथराता रहा
बोलो गुरुदेव
बोलो नजरुल, तुम्हारे गीतों की आग
क्यों नहीं जला पा रही है
कंटीली झाड़ियों का फैलता विस्तार
क्यों नहीं खौलता है खून में: सुकांत
माइकल, बहुत शालीन व वैभवपूर्ण है
तुम्हारा रावण का यह दरबार
मेरी प्रियतमा, धीरज रखो
बस चलती रहो कदम ताल-दर-ताल
बिना थके, बिना रुके
रात की उस भोर तक
अभी तो खोंसे रखो अपने जूड़ों में
कनेर के पीले फूल
फिर कभी पढ़ लेंगे
सेल्फ पर रखी किताब
कि अभी तो कुल्हाड़ी से ही
कलम का काम चला लेते हैं
थक रही है दामोदर ढोते ढोते
कोल वाशरी की अवैध काली कालिमा
किनारे इसके अब भी लगते हैं मेले
और लोकल ट्रेन में बिकती झालमूड़ी के साथ
यदा कदा सुन लेते हैं टूटे फूटे बाउल गीत
कहाँ है आमार सोनार बांगला
तालाब में तैरती बत्तकें, तुम कहाँ
किस गली ले आई मुझे
खिड़की खिड़की तैर रही है
रवींद्र संगीत की सोनजुही महक
मीलों मील दूर हत्प्रभ मैं
महसूसता हूँ आज भी तुम्हें
मोगरे की टक टक सफेद
लाल पाढ़ की साड़ी में
कहाँ हो! आमार सोनार बांगला
मैं अब तक बचा रखा हूँ
मेहंदी गाछ
असबसटस छूते आरोही मोगरे

हम एक कबायली दौर में हैं

अभी वे आँखें
नींद से जगी नहीं
जो तुम्हें देख सके
अभी उन कानों की गंदगी
साफ नहीं हुई
जो तुम्हें सुन सके
अभी वह समझ
बन नहीं पाई
जो तुम्हें समझ सके
देश के प्रख्यात बुद्धिजीवी
जिनसे तुम्हें मिलना था
महामहिम के प्रीतिभोज में शामिल
आमंत्रित अतिथि हैं
वह महानायक
जिसका तुम्हें वर्षों इंतजार है
शहर सुंदरीकरण के
उद्घाटन समारोह में
दीप प्रज्वलित कर रहा है
हम दूध में
पानी की तरह हैं
लेकिन कभी पश्चिम
तो कभी उत्तर
नींबू की कुछ बूँदें डालकर
हमें फाड़ देता है
वजूद की अपनी यायावरी में
हम एक कबायली दौर में हैं।

मैं सिंप्ली कनफ्यूज हूँ

तुम्हारे दर्द का सलीका
अच्छा नहीं लगा
दर्द देते हो
दर्द देकर
दर्द सहलाते हो
जैसे बाघ का बच्चा
मेमना से खेल रहा हो
मैं मातम करूँ
या दर्द का जश्न
मैं सिंप्ली कनफ्यूज हूँ

रिसाइकल बिन

ठंड जाने को है
और गर्मी दस्तक दे रही है
मुझे एक कांटेदार झाड़ी की तलाश है
जहाँ उतार सकूँ सुभीते से
अपने बदल की केंचुल
लंबी शीत निद्रा बाद
शरीर दुर्बल और जर्जर है
भूख की तलब हो रही है
विष दंत की तीक्ष्णता जांच बाकी है
रिसाइकल बिन से रिट्रीव हो रहे हैं
एक बार फिर अंबेडकर, भगत सिंह...
फाइलें खंगाली जा रही हैं सुभाष की
विजय चौक पर भीड़ ही भीड़ है
बच्चे दौड़ रहे हैं राष्ट्रीय एकता की दौड़
गंभीर सूखा के बावजूद
शाकाहारी बने बगुलों के सब्जबाग में
एक पानी भरा तालाब का आश्वासन है
बेचारी मछलियाँ मचल मचल कर
दुबली हुई जा रही हैं

अब चलना चाहिए

लगता है
किसी महंगे मॉल में हूँ
अंगुलियाँ
जेबें टटोलती हैं
मंडी में भीड़ ही भीड़ है
विकल्प की कोई कमी नहीं
बेचने खरीदने की
गजब की होड़ है
रंग बिरंगी छतरियों के रंग
साफ पढ़े जा सकते हैं
माफ करना
मेरा आखरी मेट्रो का
समय हो रहा है
न मैं कद में हूँ
न केंद्र में
मुझे
अब चलना चाहिए।

- सेवानिवृत्त प्रबंधक (प्रचालन), आर आई एन एल
फ्लैट नं.501, एस जे जे एंक्लेव
डोर नं.3-58, अगनंपूडि, विशाखपट्टणम-530046
मोबाइल: +91 9441472859

श्री राजेंद्र तिवारी के गीत व गजलें

गीत

(1)

अंजुरी भर रेत हुए दिन कसमे-वादों के।
स्वप्नों के भित्ति-चित्र, रंगमहल यादों के।
दर्पन में विन उगा, साथ कोई बहकी फिर
चंद की बाँहों में निशिगंधा महकी फिर
मलयानिल हौले से मन-वंशी छेड़ गई,
गूँजे स्वर प्राणों में स्नेहिल संवादों के।
लहर उठी सहसा ही, धुंधलाई तस्वीरें
कांप गईं सौगंधें, पाँवों की जंजीरें
कोई स्वर अंतस् से उभरा फिर डूब गया,
पलकों पर ठहरे हैं घन सावन-भादो के।

(2)

नदिया के भीतर इक नदिया बहती है संगीत की।
जैसे गजलों की धारा में अंतर्धारा गीत की।
प्यास बुझाना धर्म नदी का, धारा भेद नहीं करती
कविता दुनियादारों जैसा स्याह-सफेद नहीं करती
लय की लहरों पर बहती है रीत निभाती प्रीत की।
सबने कोई कसर न छोड़ी, चोरी-सीनाजोरी में
खुशबू कैद कहाँ होती है मुट्ठी और तिजोरी में
सबको महकाती है उसको चिंता हार न जीत की।
चाँद और सूरज ने खींची कब कोई लक्ष्मण रेखा
उजियारे को साजिश करते हमने कभी नहीं देखा
अंधियारे ने केवल षड़यंत्रों में आयु व्यतीत की।

गजलें

(1)

पड़े हैं जब भी कलम के निशान कागज पर।
सिमट के आ गया सारा जहान कागज पर।
करें तो कैसे करें इत्मीनान कागज पर।
न जाने कितने हैं झूठे बयान कागज पर।
हमारे दिन तो गुजरते हैं आसमान तले,
बने हैं रोज हजारों मकान कागज पर।
अभी तो लगी तेरा इम्तेहान दुनिया भी,
दिये हैं तू ने अभी इम्तेहान कागज पर।
जमाने वाले मेरे बाद मुझको समझेंगे,
मैं छोड़ जाऊँगा अपनी जबान कागज पर।

(2)

उसने इल्जाम लगाया कि बाल आया क्यों।
आईना चीख के बोला तो दिल दुखाया क्यों।
दिल जो बतलाना भी चाहे बता नहीं सकता,
वो जो अपना था वही हो गया पराया क्यों।
हाथ आया जो कभी तो उसी से पूछूँगा,
छोड़ जाता है बुरे दिन में साथ साया क्यों।
देखते बनते है... चेहरे तमाशबीनों के,
डूबने वाले को दरिया ने खुद बचाया क्यों।
लाख समझाया गया वक्त कब पलटता है,
तुमको जो मिला था उसे गँवाया क्यों।

(3)

सब्र है तो निबाह कर लेगा।
वर्ना गम बेपनाह कर लेगा।
जितनी ज्यादा हवस बढ़ायेगा,
उतने कम खैरख्वाह कर लेगा।
तू लड़ेगा अगर जो सूरज से,
अपना चेहरा स्याह कर लेगा।
तोड़ देगा वो फिर मेरी तौबा,
दिल मेरा फिर गुनाह कर लेगा।
दर्द हो जायेगा दवा जब भी,
वो गजल से निकाह कर लेगा।

(4)

जिंदगी में जिंदगी जैसा मिला कुछ भी नहीं।
देने वाले से... मगर हमको गिला कुछ भी नहीं।
उम्र भर सब को तय करना है साँसों का सफर,
जिंदगी और मौत में यूँ फासिला कुछ भी नहीं।
मैं हूँ, मेरा रास्ता है और... इक उम्मीद है,
कोई संगे-मील, रहबर, काफिला, कुछ भी नहीं।
हमने दे-देकर लहू सींचा कि महकेगा चमन,
और बहार आई तो शाखों पर खिला कुछ भी नहीं।
खून में अपने वफादारी है, इसको क्या करें?
वैसे दुनिया में वफाओं का सिला कुछ भी नहीं।

(5)

हो जियादा चाहने वाला या कम कोई तो है।
हाँ! वो पत्थर का सही, मेरा सनम कोई तो है।
दर्द को राहत है दिल को है सुकूँ इस बात से,
फिक्र है मेरी किसी को, आँख नम कोई तो है।
हौसला देता है, समझाता है, तेरी ही तरह,
राम जाने तू है या तेरा भरम कोई तो है।
तू नजर आता नहीं महसूस करता हूँ मगर,
जिंदगी के रास्तों पर हमकदम कोई तो है।
चाँद-सूरज और सितारों को चमक देता है कौन,
कौन है? किसके हैं सब दैरो-हरम, कोई तो है।

(6)

पर्वत के शिखरों से उतरी सज-धज कर अलबेली धूप।
फूलों-फूलों मोती टांके, कलियों के संग खेली धूप।।
सतरंगी चादर में लिपटी जैसे एक पहेली धूप।
जाने क्यों जलती रहती है छत पर बैठ अकेली धूप।।
छाया आगे पीछे नाचे खुद से दूर न होने दे,
जैसे बरसों बाद मिली हो बिछुड़ी कोई सहेली धूप।।
मुखिया के लड़के सी दिन भर मनमानी करती घूमे,
आंगन-आंगन ताके-झांके फिर चढ़ जाए हवेली धूप।।
शायद कोई चाँद-सितारे रख दे उसके हाथों पर,
कब से दर-दर घूम रही है खोले यार हथेली धूप।।

(7)

प्यास को भटका रहा है इश्तहारों का तिलिस्म।
जैसे भटकाये हिरन को रेगजारों का तिलिस्म।।
कौन सुख देगा न जाने कौन दुख दे जायेगा,
हम समझ पाये न किस्मत के सितारों का तिलिस्म।।
उस से बिछुड़े हो गया अर्सा न टूटा आज तक,
सिलसिला चाहत का उसकी यादगारों का तिलिस्म।।
प्यास, गागर, कश्तियाँ रुकती हैं साहिल पर मगर,
कब नदी को रोक पाया है किनारों का तिलिस्म।।
भीगने के बाद भी जलता रहा कोई बदन,
जाने कैसा था वो सावन की फुहारों का तिलिस्म।।
रूठ कर जैसे अचानक खिलखिला उठे कोई,
यूँ खिजाँ के बाद खुलता है बहारों का तिलिस्म।।
देखकर दुनिया को बस इतना समझ पाया हूँ मैं,
ये निगाहों का है धोखा या नजारों का तिलिस्म।।

(8)

अकेला जंग में था खुद को लश्कर कर लिया मैंने।
गजब था हौसला भी, मोर्चा सर कर लिया मैंने।
जब आईना था लोगों को बड़ी तकलीफ होती थी,
इसी से दिल के आईने को पत्थर कर लिया मैंने।
किसी का कद घटाने में लगा रहता तो क्या होता,
जो अपना कद बढ़ाया उस से बेहतर कर लिया मैंने।
ये नासमझी कहो, फितरत कहो, गलती कहो दिल की,
न करना था भरोसा जिस पे, अक्सर कर लिया मैंने।
बिछुड़ कर तुझसे दिल 'राजेंद्र' खण्डहर सा अकेला था,
बसा कर तेरी यादों को, उसे घर कर लिया मैंने।

(9)

मुफलिस की सदाओं सा सुनाई नहीं देते।
बुनियाद हैं हम लोग... दिखाई नहीं देते।
हालात से लड़ने का हुनर जिनको अता है,
वो लोग... मुकद्दर की दुहाई नहीं देते।
सेहत की बड़ी फिक्र है सब चारागरों को,
बीमार को लेकिन... ये दवाई नहीं देते।
वो दौर था, लक्ष्मण थे, खड़ाऊँ थे, भरत थे,
अब साथ सगे भाई का... भाई नहीं देते।
खामोशी कोई जुर्म का इकरार नहीं है,
तुम होते न मुजरिम तो सफाई नहीं देते।

(10)

जिंदगी में यूँ तो दुश्वारी बहुत है।
इसलिए जिंदा हूँ खुद्दारी बहुत है।
आदमी में अब ये बीमारी बहुत है।
हौसला थोड़ा है होशियारी बहुत है।
उसकी नासमझी का अंदाजा लगाओ,
कह रहा है खुद समझदारी बहुत है।
बस जरा सा साथ मिल जाये हवा का,
आग भड़काने को चिंगारी बहुत है।
काश! होती ये वफादारी की मूरत,
वैसे सूरत आपकी प्यारी बहुत है।
दिल हमें 'राजेंद्र' समझाता है अक्सर,
कम करो इतनी रवादारी बहुत है।

- तपोवन
38-बी, गोविंद नगर
कानपुर
मोबाइल: +91 9369810411

संगठन में अप्रैल-जून, 2016 तिमाही के दौरान संचा

इस्पात सचिव द्वारा 'कौशल विकास केंद्र' का उद्घाटन

इस्पात मंत्रालय के सचिव सुश्री अरुणा सुंदरराजन, भा.प्र.से. ने 1 अप्रैल, 2016 को संगठन के तकनीकी प्रशिक्षण केंद्र में स्थापित 'कौशल विकास केंद्र' एवं संगठन की प्रमुख उत्पादन इकाइयों के नमूनों से सुसज्जित 'वाइजाग स्टील म्यूजियम' का उद्घाटन किया। संगठन के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पो मधुसूदन ने विद्यार्थियों को इस कौशल केंद्र से लाभ उठाने की सलाह दी। कार्यक्रम में सभी निदेशक गण, मुख्य सतर्कता अधिकारी, कार्यपालक निदेशक गण, वरिष्ठ प्राधिकारी, स्टील एक्जेक्यूटिव असोसिएशन, श्रमिक संघों एवं अनुसूचित जाति व जनजाति संघ के प्रतिनिधि, विप्स के प्रतिनिधि एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

स्वच्छ भारत पखवाड़ा

संगठन के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पो मधुसूदन ने 1 मई, 2016 को उक्कुनगरम के महात्मा गांधी पार्क में स्थित महात्मा गांधी की प्रतिमा को पुष्पमाला पहनाते हुए स्वच्छ भारत पखवाड़े का उद्घाटन किया। पखवाड़े के दौरान आयोजित स्वच्छता अभियान के अंतर्गत 'स्वच्छता वाकथान' चलाया गया, जिसमें निदेशक गण, विभागाध्यक्ष, कर्मचारी एवं उक्कुनगरम के निवासियों ने भाग लिया। इस अवसर पर संयंत्र के परित: गाँवों में बेहतर स्वास्थ्य पद्धतियों व स्वच्छता के प्रचार-प्रसार हेतु 'स्वच्छता रथ' के माध्यम से स्वच्छता जागृति अभियान चलाये गये।

संगठन को आई आई आई ई निष्पादन उत्कृष्टता पुरस्कार

आर आई एन एल को 'संगठन की श्रेणी' में 'भारतीय औद्योगिक अभियंता संस्थान' द्वारा निष्पादन उत्कृष्टता पुरस्कार प्राप्त हुआ। अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पो मधुसूदन ने नागपुर में 24 जून, 2016 को आयोजित 20 वें मुख्य कार्यपालक अधिकारी (CEO) सम्मेलन में यह पुरस्कार ग्रहण किया। कार्यक्रम में श्री पो मधुसूदन को अपने श्रेष्ठ नेतृत्व कौशल के माध्यम से संगठन को उत्कृष्ट ऊँचाइयों पर ले जाने हेतु वैयक्तिक श्रेणी में 'आई आई आई ई निष्पादन उत्कृष्टता पुरस्कार 2015' से सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि वाइजाग स्टील को संगठन की उत्कृष्टता हेतु लगातार तीसरी बार यह पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

उक्कुनगरम में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

संगठन के खेल विभाग द्वारा पतंजलि व आर्ट ऑफ लिविंग के सहयोग से 21 जून, 2016 को उक्कुनगरम के गुरजाडा कलाक्षेत्रम में 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं निदेशक (कार्मिक) डॉ जी वी एस प्रसाद ने कहा कि योग के अभ्यास से मानसिक व शारीरिक शांति प्राप्त होती है। उन्होंने कर्मचारियों व गृहिणियों को पिछले 14 वर्षों से संचालित योग की कक्षाओं का लाभ उठाने का सुझाव दिया। कार्यक्रम में महाप्रबंधक (मानव संसाधन)-गैर संकर्म व प्रशिक्षण एवं वी एस पी खेल परिषद के अध्यक्ष श्री टी सुंदर, सहायक महाप्रबंधक (खेल) श्री एम एस कुमार, श्रमिक संघों के सदस्यों ने भाग लिया।

लित विभिन्न गतिविधियों का विवरण नीचे प्रस्तुत है।

संगठन को राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु नराकास शील्ड

विशाखपट्टणम में स्थित सार्वजनिक उद्यम की श्रेणी में राजभाषा के श्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु आर आई एन एल को वर्ष **2015-16** के लिए नराकास शील्ड का प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। संगठन के कार्यपालक निदेशक (निगमित सेवा) श्री आर पी श्रीवास्तव ने **7** जून को आयोजित नराकास की बैठक में मंडल रेल प्रबंधक श्रीमती चंद्रलेखा मुखर्जी से यह पुरस्कार ग्रहण किया। कार्यक्रम में महाप्रबंधक (मानव संसाधन) श्री टी सुंदर, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री ललन कुमार, राजभाषा विभाग के प्राधिकारी उपस्थित थे।

संसदीय राजभाषा समिति की प्रश्नावली संबंधी कार्यशाला

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) एवं राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड द्वारा संयुक्त रूप से नराकास के सदस्य कार्यालयों के लिए प्रबंधन विकास केंद्र के सम्मेलन कक्ष में **11** मई, **2016** को एक-दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण के दौरान प्रस्तुत की जानेवाली प्रश्नावली भरने संबंधी आवश्यक जानकारी दी गयी। कार्यक्रम का उद्घाटन कार्यकारी मंडल रेल प्रबंधक श्री राकेश तिवारी ने किया। तत्पश्चात उन्होंने संगठन की गृह-पत्रिका 'सुगंध' के अद्यतन अंक का विमोचन भी किया। कार्यक्रम में संगठन के कार्यपालक निदेशक (निगमित सेवा) श्री आर पी श्रीवास्तव, महाप्रबंधक (मानव संसाधन) श्री टी सुंदर, नराकास की सचिव श्रीमती एम रमादेवी के साथ-साथ विविध कार्यालयों के **25** प्रतिनिधियों ने भाग लिया। संगठन के सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री ललन कुमार ने कार्यक्रम का संचालन किया।

हिंदी कार्यान्वयन दिवस का आयोजन

कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी के प्रयोग हेतु अभिप्रेरित करने के उद्देश्य से **29** अप्रैल एवं **29** मई को क्रमश: सामग्री प्रबंधन एवं ई टी एल विभागों में हिंदी कार्यान्वयन दिवस मनाया गया। सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री ललन कुमार ने कर्मचारियों की जानकारी हेतु राजभाषा नीति के विविध प्रावधानों एवं कंप्यूटर में यूनिकोड के अनुप्रयोग से संबंधित प्रस्तुतीकरण दिये। तत्पश्चात कर्मचारियों के लिए हिंदी में प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। कार्यक्रम में सामग्री प्रबंधन विभाग के लगभग **49** कर्मचारियों ने भाग लिया। समापन समारोह में कार्यपालक निदेशक (सामग्री प्रबंधन) श्री एम एम के मूर्ती ने राजभाषा विभाग के सहयोग से कर्मचारियों को अपने कार्यालयीन काम में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को सुनिश्चित करने का सुझाव दिया। ई टी एल में आयोजित कार्यक्रम में करीबन **22** कर्मचारियों ने भाग लिया। उप महाप्रबंधक (ई टी एल) प्रभारी श्री एम वी आर कृष्णाराव ने कर्मचारियों को संगठन में हिंदी के प्रभावी प्रयोग हेतु बढ़चढ़कर प्रयास करने हेतु अभिप्रेरित किया। प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती जे रमादेवी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

संगीत सरिता

की बोर्ड सीखने की प्रविधि

इस अंक में 'दिलवाले' फिल्म के 'जनम जनम साथ चलना यूँ ही' गाने का नोटेशन नीचे प्रस्तुत है। यह राग 'जौनपुरी' पर आधारित गाना है। फिल्म 'टैक्सी ड्राइवर' का 'जाएँ तो जाएँ कहाँ समझेगा कौन यहाँ', 'मदहोश' का 'मेरी याद में तुम न आँसू बहाना' और 'स्वदेश' से 'पल पल है भारी' गाने इसी राग पर आधारित हैं। यह थाट असावेरी पर आधारित है। इसके सुर हैं 'स रे म प ध नि सं'। इसमें 'ग', 'ध' और 'नि' कोमल स्वर हैं। यह गाना 'B-Minor' में बजता है।

आरोह: स, रे, म, प, ध, नि, सं   अवरोह: सं, नि, ध, प, म, ग, रे, स   पकड़: स रे म प, नि ध, प, म प, ग रे स

प गा ग रे रे सा   सं नि प धा ध नि प धा   म रे रे सा सं नी   नि ध म पा प ध म पा
जनम जनम जनम   साथ चलना यूँ ही   कसम तुम्हें कसम   आके मिलना यूँ ही
प म ग सा नी नि धा   ध प ग मा म प ग मा   नि सं रें नि प प ध नि सं नि   सं रें सं रें गं रें गं मं गं मं पां मं पां
एक जान है भले   दो बदन हो जुदा   मेरी होके हमेशा ही रहना   कभी न कहना अलविदा
प गा ग रे रे सा   सं नि प धा ध नि प धा   म रे रे सा सं नी   नि ध म पा प ध म पा
मेरी सुबह हो तुम्हीं   और तुम्हीं शाम हो   तुम दर्द हो   तुम ही आराम हो
प म ग सा नी नि धा   ध प ग मा म प ग मा   नि सं रें नि प प ध नि सं नि   सं रें सं रें गं रें गं मं गं मं पां मं पां
मेरी दुआओं से   आती है बस ये सदा   मेरी होके हमेशा ही रहना   कभी न कहना अलविदा
सं रें सं गां   गं रें सं धा मं रें...   रें सं नि पां...   पं नि पां मं पं मां गं मं गां   सं रें गं पं धं पां मं पं मां
अहा ह हा ....

धा प ग मा म प ग मा   नि सं रें नि प प ध नि सं नि सं रें सं रें गं रें गं मं गं मं पां
मेरी होके हमेशा ही रहना   कभी न कहना अलविदा...

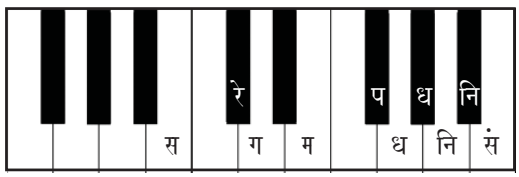

पा प पा प पा   स ग प नी ध प मा   मा म मा म मा   म प धा रे रे ग
तेरी बाहों में   है मेरे दोनों जहाँ   तू रहे जिधर   मेरी जन्नत वहीं
पा प पा प पा   स ग प नी ध प मा   मा म मा म मा   म प धा रे रे ग
जल रही अगन   है जो ये दो तरफा   न बुझे कभी   मेरी मन्नत यही
ध प म पा ग सा   ध प म पा ग सा   ध प म पा ग सा   पा प पा धा स पा
तू मेरी आरज़ू   मैं तेरी आशिकी   तू मेरी शायरी   मैं तेरी मौसिकी
प गा प रे प सा   स नि प धा ध नि प धा   म रे रे सा सं नी   नि ध म पा प ध म पा
तलब तलब तलब   बस तेरी है मुझे   नसों में तू नशा   बनके घुलना यूँ ही
प म ग सा नी नि धा   ध प ग मा म प ग मा   नि सं रें नि प प ध नि सं नि   सं रें सं रें गं रें गं मं गं मं पां मं पां
मेरी मुहब्बत का   करना तू हक ये अदा   मेरी होके हमेशा ही रहना   कभी न कहना अलविदा...
प गा ग रे रे सा   सं नि प धा ध नि प धा   म रे रे सा सं नी   नि ध म पा प ध म पा
मेरी सुबह हो तुम्हीं   और तुम्हीं शाम हो   तुम दर्द हो   तुम ही आराम हो
प म ग सा नी नि धा   ध प ग मा म प ग मा   नि सं रें नि प प ध नि सं नि   सं रें सं रें गं रें गं मं गं मं पां मं पां
मेरी दुआओं से   आती है बस ये सदा   मेरी होके हमेशा ही रहना   कभी न कहना अलविदा...
सं रें सं गां   गं रें सं धा मं रें...   रें सं नि पां...   पं नि पां मं पं मां गं मं गां   सं रें गं पं धं पां मं पं मां
अहा ह हा ....

इस गाने के राग व स्वरों की जानकारी सी आर जी (रीफ़ैक्टरी) के सहायक महाप्रबंधक श्री रविदास एस गोने और नोटेशन विज्ञान इंजीनियरिंग कालेज की छात्रा सुश्री वी नंदिता ने दिया है।

कलम का सजग सिपाही - मुंशी प्रेमचंद

- डॉ राम प्यारे प्रजापति -

उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद कथा जगत के ऐसे सशक्त ऊर्जावान स्रोत हैं, जहाँ से आधुनिक हिंदी कहानियों को जीवन मिलता है। उनकी कहानियाँ मानदंड के रूप में कथा जगत का तुलनात्मक परिशीलन प्रस्तुत करती है। महाजनी सभ्यता, जमींदारी की जबर्दस्त ठसक, चमड़ी उधेड़ सूदखोरों का व्यवहार, दलितों एवं मजदूरों का पानी की तरह बहता श्रम, रग-रग में निर्धनता का किसानों के रोम-रोम में चुभता दंश, जातीयता के नाम हो रहे जगह-जगह अपव्यवहार, शूद्र के नाम से जिसे कदम-कदम पर अपमान का घूंट पीना पड़ता रहा, ऐसी बहुसंख्यक जातियों पर ढाये जाते अमानवीय व्यवहार और जुल्म, शब्द-शब्द में बोलती नारी पीड़ा, यौनिक दुराचरण, कुछ मित लोगों द्वारा 'खाँ साहब' बनने का अहम् पूर्ण दंभ आदि साहित्य के माध्यम से जनजीवन की तरफदारी करनेवाले मुंशी प्रेमचंद मानव मूल्यों की स्थापना के लिए जीवन पर्यंत कटिबद्ध रहे।

प्रेमचंद की साहित्यिक रचना जीवन और युग का सात्विक प्रतिबिंब है। जहाँ एक तरफ सामाजिक कुरीतियों पर करारा प्रहार किया, वहीं जन-जीवन के लिए एक दरवाजा भी खोला। जहाँ समस्याएँ उठायीं, वहीं समाधान भी प्रस्तुत किये। यही कारण था कि उनका कालखंड एक युगांतर के रूप में साहित्य में दर्ज हुआ। उनकी कहानियाँ जन-जीवन की अमर गाथायें हैं। उनके चरित्र मध्य और निम्न वर्ग से ही लिये गये हैं। कथानकों में भारतीय ग्रामीण संस्कृति मुखरित होती है। लोक साहित्य, लोक शिल्प ही लोक कथानकों का प्राण है।

> प्रेमचंद के पुत्र अमृतराय अपनी रचना 'कलम का सिपाही' में अपने पिताश्री के व्यक्तित्व का वर्णन करते हुए लिखते हैं - '...क्या तो उनका हुलिया था। घुटनों से जरा ही नीचे पहुँचने वाली मिल की धोती, उनके ऊपर गाढ़े का कुर्ता और पैर में बंददार जूता, यानी कुल मिलाकर आप उसे देहाती ही कहते - 'गवइयाँभुज्ज' जो अभी गाँव से चला आ रहा हो, जिसे कपड़ा भी पहनने की तमीज नहीं, यह भी नहीं मालूम कि धोती-कुर्ता पर चप्पल पहनी जाती है। आप शायद उन्हें प्रेमचंद कहकर पहचानने से इंकार कर देते। ...अब मुझे उनके दोनों पैरों की कानी उंगली भी अच्छी तरह याद है, जो जूते को चीरकर बाहकर निकली रहती थी। सादगी इसके आगे नहीं जा सकती।'

मुंशी प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई, सन् 1880 को लमही नामक गाँव में एक साधारण मध्यवर्गीय कायस्थ कृषक परिवार में हुआ। आठ वर्ष की अल्पायु में माता तथा चौदह वर्ष की आयु में पिता का देहांत हो गया। उनकी सौतेली माँ एवं उनके छोटे दो पुत्रों का भार भी इन्हीं के कंधों पर आ पड़ा। सौतेली माँ का प्रखर व्यवहार होते हुए भी प्रेमचंद ने कभी कटुता उत्पन्न नहीं होने दी। प्रेमचंद का विवाह तेरह वर्ष की उम्र में उनसे अधिक उम्र वाली लड़की के साथ हुआ था, जो सूरत शक्ल से भयावनी और वाणी से पूरी कर्कशा थी। प्रेमचंद को कभी भी उनसे पत्नी सुख न मिला। अंत में पारिवारिक कलह से तंग आकर प्रेमचंद ने पत्नी को उसके मायके सदा के लिए छोड़ दिया।

जब परिवार जनों द्वारा पुनः विवाह का प्रस्ताव आया, तब प्रेमचंद उसे सिरे से खारिज करते गये। अंत में उन्होंने विधवा से विवाह करने की मंशा जाहिर की। जब घर वाले इस प्रस्ताव से सहमत न हुए, तब प्रेमचंद ने स्वयं तीन-चार माह पूर्व विधवा हुई ऐसी स्त्री, जिसके पास बच्चे नहीं थे, सत्रह वर्ष वाली शिवरानी नामक विधवा से विवाह कर लिया। प्रेमचंद अपनी पहली पत्नी की मौत बताकर बहुत दिनों तक शिवरानी देवी को भ्रमित करते रहे। काफी समय बाद जब पहली पत्नी का भाई घर आया, तो उसके मुँह से सुनकर - 'दीदी हमारे यहाँ ही तो पड़ी हैं, जीजा ने उन्हें त्याग दिया है।' शिवरानी देवी आश्चर्य में पड़ गयीं। उन्होंने अपनी सौत को घर लाने के लिए प्रेमचंद पर जी भर दबाव डाला। परंतु प्रेमचंद की आत्मा ने उसके कटु व्यवहार से घर लाने के लिए इजाजत न दी। जब प्रेमचंद नहीं गये तब शिवरानी देवी ने एक वाहक को पत्र लिखकर भेजा। वाहक पत्र लेकर गया और दूसरा पत्र लेकर लौटा, जिसमें लिखा था - '...जब वे खुद आयेंगे, तब मैं चलूँगी।' परंतु वह दिन कभी न आया। पति की मृत्यु के बाद शिवरानी देवी ने एक रचना सृजन

की 'प्रेमचंद घर में', जो उनकी मनोवृत्तियों का विवरण प्रस्तुत करती है।

प्रेमचंद के बचपन का नाम 'धनपतराय' था, जिन्हें गाँव के लोग 'नवाब बच्चा' कहते थे। ठहाके पर ठहाके लगाकर हँसने वाले, धोती-बंडी पहनकर खेत में काम करनेवाले, चेहरे पर मोछें, सिर पर कभी-कभी टोपी, अंतुर्मुखी व्यक्तित्व के धनी, मिरजयी कुर्ता, घुटने तक धोती और पंप का जूता पहनने वाले थे। समय के साथ उनकी दो संतानें अमृतराय (पुकार का नाम बन्नू) और श्रीपति राय (धन्नू) हुए, जिनके बचपन भर प्रेमचंद कुएँ की चौकी (पत्थर की पटिया) पर बैठकर बच्चों की तरह 'आला-बाला खेला करते। जीवन भर हिंदी साहित्य की सेवा करने वाले मुंशी प्रेमचंद ने 8 अक्टूबर, 1936 को हिंदी साहित्य का स्वर्णाक्षरों वाला इतिहास रचकर सदा के लिए आँखें मूँद लीं।

प्रेमचंद का साहित्यिक दौर 1901 से प्रारंभ होता है, जहाँ से उन्होंने उपन्यास लेखन का कार्य प्रारंभ किया। सन् 1907 ईस्वी में प्रेमचंद ने अपनी पहली कहानी 'दुनिया का सबसे अनमोल रतन' लिखी। सन् 1915 में उनकी पहली कहानी 'सौत' सरस्वती के दिसंबर अंक में प्रकाशित हुई। तब से लेकर वे अनवरत कथा सृजन से जुड़े रहे। प्रथमतया आरंभ के दिनों में वे उर्दू में 'नवाबराय' के नाम से कहानियाँ लिखते रहे। परंतु 1909 में 'सोजे-वतन' को अंग्रेज सरकार ने जब्त कर लिया। प्रेस में आगजनी आदि की घटना हुई। तभी उनकी सोच में परिवर्तन हुआ और उन्होंने प्रेमचंद के नाम से हिंदी कथा-लेखन के क्षेत्र में पदार्पण किया। उनकी सृजनशीलता से हिंदी की गौरवमयी श्रीवृद्धि हुई। प्रेमचंद ने जहाँ 'मर्यादा', 'माधुरी' और 'हंस' नामक पत्रों का संपादन कार्य किया, वहीं 'सप्तसरोज', 'प्रेमद्वादशी', 'प्रेमपचीसी', 'प्रेमपूर्णिमा', 'प्रेमप्रतिभा', 'अग्नि समाधि', 'घासवाली', 'नमक का दरोगा', 'दो बैलों की कथा', 'ईदगाह', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'बूढ़ी काकी', 'प्रेमप्रसून', 'प्रेमतीर्थ', 'मंत्र', 'पूस की रात' आदि लगभग तीन सौ कहानियाँ लिखकर हिंदी साहित्य की समृद्धि की, वहीं 'गोदान', 'गबन', 'सेवासदन', 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि', 'प्रेम की वेदी', 'वरदान' इत्यादि उपन्यास लंबे कथानकों से भरे पड़े हैं, जो सर्वकाल में प्रासंगिक रहेंगे। 'मंगलसूत्र' नामक उपन्यास प्रेमचंद की अधूरी कृति है।

प्रेमचंद गवई परिवेश में पले। उन्होंने गरीबी, अव्यवस्था और सामाजिक विषमता को देखा ही नहीं था, बल्कि उसके भुक्तभोगी भी रहे हैं। इसीलिए उनका साहित्य दीन-हीन, गरीब मजदूर किसान की पैनी पीड़ा का दस्तावेज है। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन से सामाजिक आंदोलन को ज्यादा महत्वपूर्ण समझा। इसीलिए उनकी रचनाओं में नारी विमर्श, दलित विमर्श, कृषक समस्याएँ, सामंती ठाठ, जमींदारी का नखरा और सूदखोरों का तांडव नृत्य प्रमुखता से उठाया गया है। जातीयता के रहते कभी भी समाजवाद की स्थापना नहीं हो सकती तथा नारी अधिकारों के लिए शिक्षा आवश्यक है, ऐसा उनका विचार है - वे नारी में कोई जाति नहीं देखते। प्रेमचंद का 'कायाकल्प' प्रथम उपन्यास है तो 'मंगलसूत्र' अंतिम। प्रेमचंद ने बचपन से जो कुछ देखा था, कालांतर में वही उपन्यासों में प्रतिबिंबित हुआ। छुआछूत, अंग्रेजी सरकार की भ्रष्ट व्यवस्था, कुराज, बहुजन समाज का निर्मम शोषण, यौन शोषण, वेश्यावृत्ति से त्रस्त नारियों की मुक्ति ही उनका साहित्यिक आंदोलन था, जिसके लिए जीवन भर वे अथक प्रयास करते रहे और साहित्य के मोर्चे पर डटे रहे। उन्होंने अपने सूदखोर मामा को भी कथा पात्र बनाया, जिसके कारण उन दोनों में काफी दिनों तक मनमुटाव चलता रहा। पर प्रेमचंद ने कभी उसकी परवाह न की।

प्रेमचंद के साहित्य में हिंदुस्तान की पीड़ा बोलती है। नस-नस में भ्रष्ट कुव्यवस्था की विकलांगता मुखरित होती है। जहाँ वे स्त्री को परंपरागत लीक से आगे बढ़ने का संकेत करते हैं, वहीं कुरीतियों, कुसंस्कारों, अव्यवहारों को तोड़ने का पुरजोर समर्थन भी करते हैं। मुंशी प्रेमचंद ने स्वयं कहा है - 'हमारी कहानियों में आपको पदाधिकारी, महाजन, वकील और पुजारी गरीबों का खून चूसते हुए दिखेंगे और गरीब किसान, मजदूर, अछूत और दरिद्र उनके आघात सहकर भी अपने धर्म और मनुष्यता को हाथ से न जाने देंगे, क्योंकि हमने उन्हीं में सबसे ज्यादा सच्चाई और सेवाभाव पाया है।'

प्रेमचंद ने साहित्य को धारदार औजार के रूप में प्रयुक्त किया है। सत्याग्रह, वरदान, दो सखियाँ, बड़े घर की बेटी, प्रतिज्ञा, सुहाग की साड़ी, दफ्तरी, रंगीले बाबू, वज्रपात, बेटों वाली विधवा, इस्तीफा ऐसी ही कहानियाँ हैं। वे समाज को दो पृथक खेमों में बंटा मानते हैं। एक तरफ सेठ साहूकार, पूँजीपति, सामंत, राजे-महाराजे, अधिकारी हैं तो दूसरे वर्ग में देश की समस्त गरीब शोषित, पीड़ित जनता कतारबद्ध है। तभी उन्होंने लिखा है - 'साहित्य का उद्देश्य हमारी करुण भावना को उत्तेजित करना, हमारी मानवता को जगाना है।' वे साहित्यकारों के बारे में लिखते हैं, 'साहित्यकार हमेशा प्रगतिशील होता है।'

डॉ रामविलास शर्मा का कथन है कि 'प्रेमचंद अपनी रचनाओं से देश की मुक्ति में सहायता करना चाहते थे। समाज की रूढ़ियों और अंधविश्वासों को दूर करना चाहते थे। यह उनकी सामाजिक विचारधारा थी। इसी विचारधारा के कारण उन्होंने किसानों के जीवन को गहराई से देखा। अपनी कला को लोकप्रिय रूप देने की कोशिश की। धनी वर्गों के चित्रण में उन्होंने कठोर आलोचना से काम लिया। गरीबों के चित्रण में उन्होंने विशेष सहानुभूति का परिचय दिया।'

आचार्य हजारी प्रसाद ने प्रेमचंद के बारे में लिखा है - 'प्रेमचंद शताब्दियों से पददलित और अपमानित कृषकों की आवाज थे। परदे में कैद, पद-पद पर लांछित और अपमानित, असहाय,

नारी जाति की महिमा के जबर्दस्त वकील थे।'

प्रेमचंद के पुत्र अमृतराय अपनी रचना 'कलम का सिपाही' में अपने पिताश्री के व्यक्तित्व का वर्णन करते हुए लिखते हैं - '...क्या तो उनका हुलिया था। घुटनों से जरा ही नीचे पहुँचने वाली मिल की धोती, उनके ऊपर गाढ़े का कुर्ता और पैर में बंददार जूता, यानी कुल मिलाकर आप उसे देहाती ही कहते - 'गवइयाँभुज्ज' जो अभी गाँव से चला आ रहा हो, जिसे कपड़ा भी पहनने की तमीज नहीं, यह भी नहीं मालूम कि धोती-कुर्ता पर चप्पल पहनी जाती है। आप शायद उन्हें प्रेमचंद कहकर पहचानने से इंकार कर देते। ...अब मुझे उनके दोनों पैरों की कानी उंगली भी अच्छी तरह याद है, जो जूते को चीरकर बाहकर निकली रहती थी। सादगी इसके आगे नहीं जा सकती।'

स्वयं प्रेमचंद ने अपने 'महाजनी सभ्यता' नामक निबंध में लिखा है - 'महाजनी सभ्यता में तो सारे कार्यों की गरज महज पैसा होती है। किसी देश में राज्य किया जाता है तो इसलिए कि महाजनों, पूँजीपतियों को ज्यादा से ज्यादा नफा हो। इस दृष्टि से आज की दुनिया में महाजनों का ही राज्य है। मनुष्य समाज दो भागों में बंट गया है। बड़ा हिस्सा तो मरने और तपने वालों का है और बहुत ही छोटा हिस्सा उन लोगों का है, जो अपनी शक्ति और प्रभाव से बड़े समुदाय को अपने बराबर में किया हुआ है। उन्हें इस बड़े भाग के साथ किसी तरह की हमदर्दी नहीं, जरा भी रूरियायत नहीं... शासक वर्ग के विचार और सिद्धांत शासित के भीतर भी समा गये हैं, जिसका फल यह हुआ कि हर आदमी अपने को शिकारी समझता है और उसका शिकार है समाज।'

लंदन में रह रहे मुल्कराज आनंद की प्रेरणा से मुंशी प्रेमचंद ने सन् **1936** में भारत में भी 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना की, जिसकी प्रथम बैठक लखनऊ में हुई। गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए उन्होंने कहा था - '...हमें उस साहित्य की आवश्यकता है, जो हमारी बदलती हुई मान्यताओं, परंपराओं और मूल्यों के अनुरूप हो। ...हमें उस कथन की आवश्यकता है, जिसमें जन का संदेश हो। ...अत: अपने पत्र से अहम्वाद अथवा अपने व्यक्तिगत दृष्टिकोण को प्रधानता देना वह वस्तु है, जो हमें जड़ता और लापरवाही की ओर ले जाती है। हमारे लिए ऐसी कला की आवश्यकता न व्यक्ति रूप में उपयोगी है, न समाज रूप में।'

प्रेमचंद ने कथा जगत को एक नया मोड़ दिया और साहित्य को नये साँचे में ढालने का प्रयास किया। कथावस्तु की परंपरावादी लीक से हटकर बिल्कुल नयी रूपरेखा प्रस्तुत की। 'गोदान' हो या 'गबन', 'सेवासदन' हो या 'कर्मभूमि', सबमें विराट हिंदुस्तान की पीड़ा बोलती है। उनके साहित्य में जहाँ जीवन है, प्रेम है, समर्पण है, वहीं पीड़ा है, खीझ है और प्रगतिशीलता के लिए हाथापाई भी है। देश से विदेश तक पढ़ी जा रही उनकी रचनाएँ कथा-जगत की मानक बन गई हैं। प्रेमचंद अपने जीते जी भले ही न माने गये हों, जैसा कि उनके दाह-संस्कार में मात्र **6-7** लोगों की उपस्थिति से प्रमाणित होता है, पर समय की कसौटी पर कसते-कसते अब वे विश्व कथाकार बन गये हैं, इसमें कोई संदेह नहीं। प्रेमचंद के साहित्य में गांधीदर्शन, मार्क्सदर्शन, लोहियादर्शन, जयप्रकाश नारायण का मिला जुला दर्शन प्रभावी दिखाई देता है। प्रेमचंद विशेष करके समाजवादी धरातल निर्माण की सोच रखनेवाले प्रगतिशील कथाकार हैं। उन्होंने अज्ञेय को एक पत्र लिखा था -

'भाई अज्ञेय,

मुझे तो कविता ऐसी पसंद है जैसा इकबाल का यह शेर-

जिस खेत से दहकाँ को मयस्स न हो रोटी।
उस खेत के हर गोशये गंदुम को जला दो।।

तुम्हारा

प्रेमचंद'

'हंस' नामक पत्रिका का संपादन करते हुए प्रेमचंद ने फिर वही बात संपादकीय लेख में लिखी है - 'इस संघ (प्रलेस) का उद्देश्य, जैसा हम पहले लिख चुके हैं, साहित्य और कला में प्रगति पैदा करना, जीवन की यथार्थताओं का चित्रण करना और जनता के सुख-दुख और कशमकश की पूर्ण रूप से अभिव्यक्ति करके उसे उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाना है, जिसके लिए आज विश्व का मानव समाज कोशिश कर रहा है।'

प्रेमचंद ने हिंदी साहित्य की प्रगति के लिए तत्कालीन परिस्थितियों से दो टूक होने की प्रेरणा दी - 'ऐसे पतन काल में लोग या तो आशिकी करते हैं या अध्यात्म और वैराग में मन रमाते हैं, यह उचित नहीं है। अब प्रगतिशील लेखकों के लिए हमारा देश तैयार हो गया है। हम लोग एक बहुत ही उपयुक्त और शुभ अवसर पर इस असोसिएशन का आरंभ कर रहे हैं। जैसा कि इसके नाम से जाहिर है, संघ उस साहित्य और कला प्रवृत्ति का पोषक है, जो समाज में जागृति और स्फूर्ति लाये, जो जीवन की यथार्थ समस्याओं पर प्रकाश डालें। जो दलित हैं, वंचित हैं - चाहे वह व्यक्ति हो या समूह, उसकी हिमायत और वकालत करना उसका फर्ज है।

प्रेमचंद हिंदी साहित्य में ऐसे प्रखर कलम के सिपाही हैं, जिन्हें आनेवाली पीढ़ियाँ अपना संरक्षक, अभिभावक, शुभचिंतक और अपना मसीहा मानेंगी, ऐसा मेरा विश्वास है। उनकी सोच ने एक बहुत बड़े समाज का पथ-प्रदर्शन किया है। इसके लिए प्रेमचंद युग-युगों तक याद किये जाते रहेंगे।

- ग्राम व पोस्ट-जमखुरी, लंभुआ
जनपद-सुलतानपुर, उत्तर प्रदेश
दूरभाष: 05364-295511
मोबाइल:+91 9621459399

कहानी

बन गया मकान

- श्री रतन राहगीर -

रश्मियाँ बिखरने से पहले ही मैं बिस्तर पर बैठा-बैठा मकान के निर्माण की परिकल्पना में खो गया...। साठ हजार रुपये नगद है। दस हजार जी पी एफ से लोन मिल जाएगा, सात हजार पाँच सौ समर्पित अवकाश के मिल जायेंगे, दो हजार पाँच सौ रुपया बकाया मेडिकल के मिलेंगे। कुल अस्सी हजार रुपये का जुगाड़ हो ही जायेगा। इतने में मकान तो बन ही जाना चाहिए।

लोन और समर्पित अवकाश लेने में बाबू लोग रोड़े अटका सकते हैं। उनकी बदनीयती से सभी वाकिफ हैं। दूसरों को सुखी देखकर जलते रहने की उनकी नियति रही है। किसी न किसी बहाने से परेशान करने की आदत से वे लाचार हैं, बाबू चेथूराम के बारे में लोग तो यही कहते हैं। वे बिना कमीशन काटे मानते ही नहीं। इसीलिए उनसे मनमर्जी का काम करा लेना लोगों के बायें हाथ का खेल होता है। नरेंद्र बाबू भी उससे हल्के नहीं हैं। किसी का काम सहजता से हो जाये, यह उन्हें कभी बर्दाश्त नहीं होता। किसी न किसी तरह जोकरों की तरह हाथ जोड़कर मुस्कुराकर, तरह-तरह के बहाने बनाकर काम को बिगाड़ने में उन्हें महारत हासिल है। शायद हर किसी का काम बिगाड़कर उनकी आत्मा प्रसन्न होती होगी। यही दुनिया है, किसी को सँवारने में सुखानुभूति होती है तो किसी को बिगाड़ने में। पर मुझे तो मकान बनाना है, दूसरे क्या करते हैं, मुझे क्या? मैं पुन: विचार लोक में डूब गया।

सूरज निकल आया था। अंधकार भागकर कहीं दुबक चुका था। पशु-पक्षियों के साथ-साथ सभी लोग अपने-अपने काम में मशगूल हो चुके थे। मैं भी मिस्त्री करीमबक्श के घर मकान का नक्शा बनवाने के लिए आ गया था। मिस्त्री करीमबक्श से मकान का नक्शा बनवाकर खुशी से घर की ओर बढ़ ही रहा था कि रास्ते में मेरा मित्र बसंत मिल गया। मिलते ही उसने उलाहना देने के अंदाज में कहा, 'आजकल तो ईद के चाँद हो गए हो, न घर में, न ही आफिस में मुलाकात होती है। सुबह-सुबह कहाँ से आ रहे हो?' मैंने कहा, 'करीमबक्श के यहाँ मकान का नक्शा बनवाकर आ रहा हूँ यार! सोचता हूँ एक छोटा सा मकान बनवा लूँ।'

बसंत ने मेरे हाथ से नक्शा लेकर उसे कलाकार की भाँति देखने लगा। नक्शे को पाँच-सात मिनट देखने के बाद उसने प्रश्न किया, 'इन पर कितने नोट लगेंगे?' 'मिस्त्री के कहे मुताबिक यही कोई सत्तर-अस्सी हजार तक।' मेरा उत्तर सुनते ही उसने नक्शे पर नजरें गड़ाए हुए ही कहा 'इस... महंगाई में दो कमरे... एक रसोई, ...एक बाथरूम और चार दिवारी पर मात्र सत्तर अस्सी हजार? ... नहीं दोस्त इस भुलावे में नहीं रहना। मिस्त्री लोग तो उंगली पकड़कर पहुँचा पकड़ते नहीं शर्माते। ध्यान रखना! इससे दुगने का इंतजाम हो तो निर्माण में हाथ डालना, वरना मकान अधूरा ही रह जायेगा।'

उसकी सलाह सुनकर मैं सोचने लगा हर चीज के मूल्य बढ़ रहे हैं, ईंट, सिमेंट, पत्थर, पटिया सभी तो महंगे ही हैं। अभी लोहा, लकड़ी और मजदूरी का हिसाब तो जोड़ा ही नहीं। मैंने गंभीर होते हुए कहा, 'तुम ठीक कहते हो। पर तुम जैसे दोस्तों के होते हुए मेरा मकान अधूरा रह जाए, ऐसा मैं नहीं मानता।' मेरी बात सुनकर बसंत थोड़ा मुस्कुराया और कहा, 'जब तुम्हें यकीन है तो आज ही शुभ मुहुर्त समझो।' मैं अपनी दोस्ती पर यकीन करके आगे बढ़ गया और वह भी अपनी राह चला गया।

लोन के लिए आफिस में अफसर से लेकर बाबु तक के आगे मैं आरजू-मिन्नतें करता रहा, फिर भी नाकाम रहा। लगभग पंद्रह दिनों के बाद हारकर मैंने उनको आड़े हाथों लेना शुरू किया। उनकी पोल खोलनी शुरू की, तब जाकर वे कुछ ढीले पड़े और मुझे लोन मिल गया। अब लगने लगा कि मेरा मकान बन जाएगा। शुभ मुहूर्त के अनुसार मकान के निर्माण का श्री गणेश हुआ। कारीगर व मजदूर जुट गए काम पर। पत्नी चाँदनी भी बहुत खुश थी। वह उत्साहित हो उठी और मैं मजदूरों सा खटनी करने लगा।

मकान की ऊँची हो रही दीवारों के साथ ही मैं तंग होने लगा। घड़ी के घंटे की सुई की तरह मजदूर चलते रहे तो मिनट की सुई की तरह कारीगर। बस वे किसी तरह दिन बिता देने में जुटे रहते। तभी ध्यान आता, आफिस का भी तो हाल यही है। सभी लोग दिन ही तो काटते हैं, कौन सा काम पूरा करते हैं? फाइल में कागज लगाने और जवाब देने के अलावा कौन सा नव-निर्माण करते हैं? कम से कम भरी दुपहरी में ये बेचारे तपते तो हैं। कुछ तो सृजन करते हैं। दो महीने तक काम चलते रहने के बाद मालूम हुआ कि माल से ज्यादा मजदूरी लगती है। बसंत की बात 'वरना मकान अधूरा ही रह जाएगा।' रह-रह कर याद आने लगी।

मुझे चिंताग्रस्त देखकर चाँदनी ने अपने सारे गहने उतार कर दे दिये। फिर भी मकान के कुछ शेष बचे काम रुपयों के इंतजाम करने का संकेत कर रहे थे। मैं दिन प्रतिदिन निर्बल होने लगा था। मायूसी ने चारों ओर से घेर लिया था। मुझे चिंतित देख चाँदनी ढाढ़स बंधाती कि 'मर्द होकर निराशा का दामन थामते हो? तुम कोई जुआ तो खेल नहीं रहे हो। यह कोई फालतू खर्च भी तो नहीं है? फिर... चिंता में अपना खून क्यों सुखा रहे हो? मैं तुम्हें चिंता में देख परेशान हो रही हूँ। मैं तुम्हें सदैव प्रफुल्लित देखना चाहती हूँ। रूपयों की जरूरत हो तो मायके से लाकर दूँ?'

मैं कहने लगा, 'भाग्यवान! तुम चिंता क्यों करती हो? तुम्हारे पुरुषार्थ ने ही तो सदैव सत्यमार्ग पर चलकर संघर्ष करना सिखाया है। मैं तो इस संकट की घड़ी में दोस्तों की परीक्षा लेने की सोच रहा हूँ। दोस्ती का फर्ज कौन निभाता है और कौन झूठा नाटक करता है, इसका पता चल जाएगा। संकट की घड़ी में दोस्त पूछने तक न आयें तो फिर दोस्ती किस काम की?'

इस बीच दीवाली का त्यौहार आ गया। काम को दो दिनों के लिए बंद करके दोस्तों के यहाँ चक्कर लगाया। त्यौहार के बावजूद दोस्तों से आशा के अनुरूप सहयोग मिला। एक ने हजार दिए तो दूसरे ने दो हजार और तीसरे ने पाँच हजार...। बसंत को जब इसकी खबर मिली। तो वह सीधा मेरे घर आ पहुँचा। आते ही कहने लगा, 'पहली बार इस गोल-मटोल चेहरे पर देखी हैं दाढ़ी-मूँछें। खूब फब रही हैं। सिर पर शुष्क स्याह बाल, बनियान और पायजामे में सचमुच नाटक मंडली के कलाकार दिखाई दे रहे हो। जगह हो तो मुझे भी अपनी मंडली में शामिल कर लो।'

मैं उसकी बातें सुनकर कुछ कहने की स्थिति में नहीं था। उसने मुझे शांत देखकर फिर कहना शुरू किया, 'क्यों मायूस होते हो, चिंताग्रस्त इंसान का विवेक मर जाता है। उसकी बुनी हुई तमाम योजनाएँ खण्डित हो जाती हैं। तुम तो हमेशा संघर्षशील रहे हो? भूख से लड़-लड़ कर जीना सीखा है। अब कौन सा सिर पर पहाड़ टूट पड़ा है, जो निराशा का दामन थामे चल रहे हो? पशु-पक्षी भी अपने आशियाने में रह कर आनंदित होते हैं। तुम तो इंसान हो, अपना सिर ढँकने के लिए छत का इंतजाम कर रहे हो।'

मैंने इस बार भी कुछ नहीं कहा। उसे निर्माणाधीन मकान पर ले गया। कारीगर छत डालने में लगे थे। मजदूर सामान ढोने में लगे थे। चांदनी उनकी मदद में जुटी थी। निर्माणाधीन मकान को देखकर बसंत ने कहना शुरू किया, 'मकान का नक्शा तो गजब का है। मकान के पूरा होते ही कई मकान मालिकों को ईर्ष्यालु बना देगा। कई इस नक्शे की नकल कर मकान बनाने के इच्छुक होंगे', उसने कहते हुए मेरी पीठ थपथपा दी। इस बार मेरा धैर्य टूट गया। मैंने संयमित होते हुए कहा, 'दोस्त मुझे लगता है लोग मेरी खिल्ली उडायेंगे... कहेंगे, 'चला था बनियों की होड़ करने आ गये न पोत।' थोड़ी सी रकम की कमी से मकान अधूरा रहेगा। लोग तरह तरह की बातें करेंगे। रिश्तेदार फब्तियाँ कसेंगे।'

बसंत ने मेरी आखों में आँखें डालते हुए कहा, 'दोस्त यह चेजा है। बड़े-बड़े लोगों की अक्ल ठिकाने आ जाती है। कभी कभी तो लखपतियों के सामने भी चेजा को बीच में बंद करने की नौबत आ जाती है।' चुटकी बजाते हुए उसने कहा, 'तुम्हारा मकान तो समझो बन गया।' मैंने धीरे से कहा, 'मेरे हाथ खाली हो चुके हैं। मजदूरी चुकाने के लिए भी पैसे नहीं रहे। इससे तो अच्छा रहता मकान ठेके में बनवाता। कम मजदूरी में मकान बन जाता।' उसने तड़ाक से कहा, 'अबकी बार मार्के की बात कही है। ठेकेदार कम लागत में मकान बना देते हैं।'

मुझे तो ऐसा ही आभास होने लगा है। मजदूरों ने तो मेरी सारी योजना खराब कर दी। गृह प्रवेश की खुशी में दोस्तों को पार्टी देने की तमन्ना थी। पर बजाय उसके मुझे सहयोग माँगना पड़ रहा है।' उसने बीच में कहना शुरू किया, 'मुसीबत में मदद करने वाला ही दोस्त होता है। जो वक्त पर सहयोग न करे, वह दोस्त कैसा? हाँ एक बात और, यदि तुम ठेकेदार से मकान बनवाते तो वह तुम्हारी जिंदगी की सबसे बड़ी भूल होती। तुम्हें याद है न पिछले महीने विद्यालय भवन ढह जाने से कई बच्चे मलबे में दबकर मर गए। पिछले साल चिकित्सालय का कमरा ढह गया था, जिससे कुछ रोगी मर गए थे। ये सभी सरकारी काम ठेकेदारे ही तो करते हैं। क्या तुम भी ऐसा ही चाहते हो? यदि नहीं तो तुम अच्छा काम कर रहे हो। घबराओ नहीं, सब ठीक हो जाएगा।' इस बार मैंने बीच में ही कह दिया, 'लगता है मेरा अधूरा मकान पूरा हो जायेगा। घर में छोटा परिवार सानन्द गुजर बसर करने लगेगा। पर मैं अपने दोस्तों के उपकार कैसे चुका पाऊँगा?' बसंत ने मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए कहा- 'जैसे तुम्हारे मित्रों ने तुम पर उपकार किया है। वैसे ही दुख-दर्द ने अपने परिजनों और मित्रों का सहयोग कर इसका बदला चुका सकते हो।'

इस बीच दीपशिखा आ गई और सीधे चांदनी के पास पहुँची। एक दूसरे से अभिवादन करने के साथ वे नवनिर्मित कमरे की चौखट पर खड़ी हो बतियाने लगी। हम भी उनके निकट जाकर खड़े हो गये। दीपशिखा ने चाँदनी के हाथ में नोटों की गड्डी थमाते हुए कहा, 'थोड़ा सहयोग हमारा स्वीकारो।' चाँदनी ने दीपशिखा की आँखों में झाँकते हुए जवाब दिया - 'मैं सदैव तुम्हारी ऋणी रहूँगी।' मेरी नहीं उनकी... उन्होंने ही यह सहयोग दिया है।' दीपशिखा ने बसंत की ओर संकेत करते हुए नजरें झुका लीं।

सबके चेहरों पर एक मुस्कान छलक गई। मैंने बसंत को बाजुओं में भर लिया। चाँदनी गदगद होकर दीपशिखा को मकान दिखाने लगी। मेरे मुँह से निकल पड़ा - 'दोस्तों के सहयोग से दिल के अरमान पूरे हुए।' बसंत ने मेरी पीठ थपथपा दी। चांदनी और दीपशिखा छत पर जा चुकीं थी। उनके आँचल हवा में लहरा रहे थे। हम उन्हें देखकर हम प्रफुल्लित हो उठे। मैंने खुशी के मारे बसंत को झकझोरा - 'मकान बन गया... मेरे दोस्त।'

- सिंधी कॉलोनी
श्रीडूँगरगढ़-331803
जिला-बीकानेर (राजस्थान)
मोबाइल: +91 9461607453

व्यंग्य

तो मेरी ओर से हाँ

- डॉ अशोक गौतम -

खुशी है कि मेरे मुहल्ले के लोग, चाहे वे पढ़े-लिखे हों या अनपढ़ बालिग हों या नाबालिग, सभी यथाशक्ति जहाँ जिसका दाँव लग रहा है, वहाँ गर्व से देशभक्ति प्रमाणित करते हुए अपना हाथ साफ करने में पूरी ईमानदारी से जुटे हैं। उनकी ही तरह मैं भी हाथ साफ करने के फन में माहिर हूँ। बच्चा था तो घर में बाप की जेब पर हाथ साफ कर लिया करता था। स्कूल में साथियों की किताबों पर हाथ साफ करने लगा। हाथ साफ कर ही मैंने हाथ साफ करने में पी एच डी की उपाधि प्राप्त की और अपने नाम के आगे अपने नाम से बड़ा डॉक्टर उकेरवा लिया।

अब तो मैं हाथ साफ करने का आदी हो गया हूँ। जिस रोज हाथ साफ नहीं कर पाता हूँ, उस रात सो नहीं पाता। सारी रात बुरे-बुरे सपने आते रहते हैं। पत्नी ने मेरी इस बीमारी को देख मुझे साफ हिदायत दे दी है कि 'अगर दिन में कहीं हाथ साफ नहीं कर पाते हो तो शाम को घर में हाथ साफ कर लिया करो।'

एक उच्चकोटि का बुद्धिजीवी और बालपेनजीवी होने के नाते मैं कालिदास से लेकर आज के ताजा टटके लेखकों की रचनाओं पर भी मजे से हाथ साफ कर चुका हूँ। पर क्या मजाल जो किसी ने मुझपर मानहानि का दावा किया हो। मानहानि का दावा तो तब हो, जब यहाँ किसी का मान बचा हो। यहाँ तो हमामों की तरह लेखन के हमाम में गोते लगाते हुए जो जिसके हाथ आ गया, उसे अपने नाम से छपवा मारा। क्या है न कि आज अपने देश में हमाम में कूदने के लिए बहुत मारा मारी हो गई है साहब! सरकार को चाहिए कि वह जनहित में देश के कुछ निर्माण कार्यों को बंद करके हमामों हेतु कुछ निर्माण करे।

पर मेरा नेचर है कि मैं दिवंगत लेखकों पर ही अधिकतर हाथ साफ करता हूँ। इसका सबसे बड़ा लाभ यह होता है कि लेखक की ओर से सीधे तौर पर कोई आपत्ति नहीं होती, हाँ! गुप्त रात को सपने में आकर वे नाराजगी जरूर दर्शाते हैं। मैं भी उन्हें साफ कह देता हूँ, 'भैय्या अब तो छोड़ो ये रचना मोह का लफड़ा! अपने आप लिखकर भूखे ही मरे, तो मुझे तो अपने लिखे को अपने नाम से छपवाकर खाने दो। लेखक योनी से मुक्ति मिलेगी। भला करो भला होगा।

कल एक संस्था का फिर फोन आया था। कह रहे थे मुझे साहित्यिक योगदान के लिए सम्मानित करना चाहते हैं, उस वक्त मैं मुक्तिबोध पर हाथ साफ कर रहा था और मुक्तिबोध थे कि पता नहीं कैसे उन्हें अपनी रचना पर हाथ साफ करने की भनक लग गई। वे सामने अपने ट्रंक पर बैठे बीड़ी सुलगाए, खंसियाते हुए विरोध की कुचेष्टा कर रहे थे। मैंने उनसे साफ-साफ कह दिया, 'तो क्या हो गया! नए लेखक के पास आज अपने तो विचार हैं नहीं, जिससे कि कोई मौलिक रचना लिख सके। उसके पास किसी और चीज का संकट हो या न हो पर विचारों का संकट बहुत है। उन्होंने दलील दी, 'यह लेखक कर्म के बिलकुल विरुद्ध है।' मैंने समझाया, 'सुनिए मुक्तिबोध जी! आज का लेखक मुक्ति चाहता भी नहीं। वह तो मरने के दूसरे दिन ही इस मजे वाले संसार में आना चाहता है।'

वे बार-बार फोन पर कह रहे थे कि हम आपको सम्मानित कर अपने आपको गौरवान्वित करना चाहते हैं। आखिर मैंने उस संस्था का मान रखने के लिए उनसे पूछा, 'सम्मान में क्या कर रहे हो?' 'जो आप चाहेंगे! नई नई संस्था है। दिन रात चुराने के बाद भी आपको किसी संस्था ने सम्मानित नहीं किया है। हम भी जरा हिंदी के कल्याणार्थ संस्थाओं के अखाड़े में आकर सरकारी अनुदान खाना चाहते हैं, सो अगर आपकी कृपा हो तो बड़े नामों के मंथन के बाद आपके नाम के बारे में बात फाइनल हो। देखिए अब न मत कीजिएगा प्लीज!' संस्था के आयोजक ने कहा तो मैं फूला पर फिर एकदम अपने को काबू में रख पूछा, 'हालांकि खुद को काबू में रखना मुश्किल हो रहा था तो सम्मान में क्या आयोजन करना चाह रहें है आप लोग?'

'जो आप चाहेंगे। कोई आसपास तो नहीं? नहीं। इस वक्त मैं तुलसी के रामचरित के साथ बिलकुल अकेला हूँ।' 'गुड!' 'तो ऐसा करते हैं कि आप हमें एक लाख हमें दे दीजिए।' 'क्यों?' 'हम उसीका चेक आपको भेंट कर देंगे और हाँ प्रशस्ति पत्र, श्रीफल और शाल आपके चेक के ब्याज के रूप में हमारी ओर से।' और आने जाने का किराया? 'वह तो हम आपको देंगे ही।' 'कैसे?' 'वह सरकार के साहित्य संवर्धन फंड से मिल जाएगा। नहीं तो! एक और आप्शन है।' 'क्या...?' 'हम आपको एक लाख का चेक पुरस्कार में देंगे पर आप आयोजन से बाहर तभी जा सकेंगे, जब आप उसे हमें वापस दे देंगे।' मेरा माथा ठनका, 'फिर ऐसे पुरस्कार से क्या लाभ?'

'अगले दिन सब अखबारों का आधा पेज आपके फोटो से भरा होगा। आपका भी कल्याण और हमारा भी। एक कोने में जा दुबकेगा साहित्य सम्मेलन प्रयाग और हर साहित्यकार को अपनी नजरों के आगे झूलता दिखेगा साहित्य सम्मेलन घाघ। तो सौदा मंजूर समझें?' तभी बाबा तुलसी बोल उठे, 'बेटा मौका हाथ से जाने न दे।' मैं भी रामचरित मानस का गत्ता समेट निकल पड़ा।

- गौतम निवास
अप्पर सेरी रोड
सोलन-173212, हिमाचल प्रदेश

वी एस पी के बढ़ते कदम

स्ट्रक्चरल मिल

नई स्थापित स्ट्रक्चरल मिल द्वारा प्रतिवर्ष 700,000 टन सीधी लंबाई वाले स्ट्रक्चरल का उत्पादन किया जाएगा। इस मिल द्वारा उत्पादित बीम के दोनों ओर की चौड़ाई 100 मिलिमीटर से 175 मिलिमीटर तक होगी। यहाँ टेपर एवं समानांतर फ्लेंज आकार के बीम बनाये जायेंगे। ये बीम यूनिवर्सल स्टैंड में रोल किये जायेंगे। चैनल की चौड़ाई 75 मिलिमीटर से 175 मिलिमीटर तक होगी, जबकि एंगिल की चौड़ाई 55 मिलिमीटर से 100 मिलिमीटर तक होगी। फ्लैट की चौड़ाई 70 मिलिमीटर से 120 मिलिमीटर और मोटाई 8 मिलिमीटर से 20 मिलिमीटर तक होगी।

यह मिल प्रतिदिन तीन पारियों और वर्ष में 300 दिन प्रचालित होगी। इस प्रकार इस मिल में 5,000 घंटों में 700,000 टन के उत्पादन का प्रावधान होगा। इस मिल के निर्विष्ट के रूप में सतत् ढलाई मशीन द्वारा 200 मिलिमीटर वर्ग के 12 मीटर लंबे ब्लूम का उपयोग किया जाएगा। इस मिल में अभिकल्पित

अनुसार औसत 94% उत्पादन प्राप्ति सुनिश्चित होगी।

पुनर्तापन भट्ठी

850,000 टन प्रतिवर्ष के भावी उत्पादन के विचारगत लगभग 200 टन प्रतिघंटे की क्षमता वाली वाकिंग बीम फर्नेस की स्थापना की गई है, जिसकी अन्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

- दो टॉप व बॉटम फायर्ड, साइड चार्जिंग एवं साइड डिस्चार्जिंग वाली वाकिंग बीम फर्नेस।
- हीटिंग कार्बन एवं लो एलॉय कंस्ट्रक्शन स्टील हेतु उपयुक्त।
- भविष्य में पुनर्तापन भट्ठी हेतु मिश्रित गैस व प्राकृतिक गैस (एक साथ) ईंधन के लिए उपयुक्त होंगी।
- भट्ठी में निम्नलिखित सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं :
  - कंबस्टन प्रणाली
  - स्किड प्रणाली व वॉकिंग बीम तंत्र
  - व्यर्थ गैस निकास प्रणाली
  - रीफ्रैक्टरी व इंसुलेटिंग सामग्री

मिल

मिल सतत् प्रचालित होगी। इसमें निम्न प्रकार के 17 'हाउसिंग रहित' रोलिंग स्टैंड्स हैं :

- रफिंग मिल में 7 स्टैंड्स की व्यवस्था की गई है, जो ऊर्ध्वाधर अथवा क्षैतिज हैं।
- इंटरमीडियट मिल में 5 स्टैंड्स की व्यवस्था की गई है, जो क्षैतिज अथवा क्षैतिज/ऊर्ध्वाधर/सार्वजनीन अथवा क्षैतिज/सार्वजनीन अथवा ऊर्ध्वाधर/सार्वजनीन तरीके से लगे हैं।
- फिनिशिंग मिल में 5 स्टैंड्स की व्यवस्था की गई है, जो क्षैतिज अथवा क्षैतिज/ऊर्ध्वाधर/सार्वजनीन अथवा क्षैतिज/सार्वजनीन अथवा ऊर्ध्वाधर/सार्वजनीन तरीके के हैं।
- स्टैंड सं.7 के बाद क्रॉप टाइप स्टार्ट/स्टॉप क्रैंक शियर की स्थापना।
- स्टैंड सं.12 के बाद क्रॉप टाइप स्टार्ट/स्टॉप रोटरी शियर का प्रावधान।
- स्टैंड सं.17 के बाद विभिन्न लंबाइयों में काटने के लिए डिवाइडिंग शियर की सुविधा।

फिनिशिंग सुविधाओं में निम्नलिखित शामिल हैं:

- कन्वेयर के साथ डिवाइडिंग स्विच
- सैंपल कटिंग व कलेक्शन सुविधाएँ
- सेफ्टी इंड स्टॉप्स युक्त कूलिंग बेड रन-इन रोलर टेबल
- आवश्यक शीतलन प्रणाली से लैस दो कूलिंग बेड
- कूलिंग बेड रन-आउट रोलर टेबल
- मल्टी स्ट्रैंड स्ट्रेटनर
- बैचिंग टेबल
- लंबाई मापन गेज युक्त कोल्ड सॉ
- स्टॉप्स सहित कोल्ड सॉ रन-आउट रोलर टेबल
- छोटे उत्पादों की छँटाई और संग्रहण सुविधा
- पाइलिंग व बंडलिंग स्टेशन
- मेटल टैग पंचिंग व एंबॉसिंग मशीन
- अनलोडिंग स्टेशन

रोल शॉप :

नई स्ट्रक्चरल मिल में रोल शॉप को मिल के साथ ही स्थापित किया गया है, ताकि रोल शॉप से तैयार रोल्स, गाइड्स एवं अन्य सामग्री को कम समय में मिल में लगाया जा सके। रोल शॉप की प्रशासनिक और प्रचालन से संबंधित दायित्व को भी मिल के प्रचालन समूह से जोड़ा गया है।

रोल शॉप के प्रमुख उपस्करों की सूची :

क्र.सं.	विवरण	मात्रा
1.	सी एन सी लेथ	1
2.	सी एन सी यूनिवर्सल मिलिंग मशीन	2
3.	ड्रिलिंग मशीन	1
4.	पेडस्टल ग्राइंडर	1
5.	प्रेस	1
6.	सी एन सी रोल टर्निंग लेथ	6
7.	रोल बैंडिंग मशीन	1
8.	शेपिंग मशीन	1
9.	डबल हेड ग्राइंडर	1
10.	सी एन सी वायर कटिंग मशीन	1
11.	गाइड स्टोरेज रैक	1 सेट

मिल परिसर

मिल परिसर में मुख्यत: तीन बे हैं। हर बे की लंबाई व चौड़ाई क्रमश: 900 मीटर व 36 मीटर है। मिल का प्रचालन तल, भूतल जमीनी स्तर से +5.00 मीटर ऊपर है। लूब्रिकेशन, हाइड्रालिक्स, पाइपिंग आदि के लिए सेल्लार की व्यवस्था की गई।

क्रेन व हॉइस्ट :

मिल के सामान्य प्रचालन व अनुरक्षण संबंधी आवश्यकता की पूर्ति हेतु ई ओ टी क्रेन, जिब क्रेन, हॉइस्ट जैसी आवश्यक प्रहस्तन सुविधाओं का प्रावधान किया गया। भंडारण तल में परिसज्जित उत्पादों के प्रहस्तन, लदान हेतु उपयुक्त ई.ओ.टी. क्रेन उपलब्ध कराये गये हैं।

एक्सप्रेस प्रयोगशाला

स्ट्रक्चरल मिल में ऑनलाइन परीक्षण संबंधी आवश्यकता की पूर्ति हेतु एक्सप्रेस प्रयोगशाला का प्रावधान किया गया है। यह प्रयोगशाला प्रक्रिया नियंत्रण एवं शिपमेंट के प्रमाणन हेतु अपेक्षित परीक्षण उपस्करों से लैस है। प्रयोगशाला में विभिन्न प्रकार के परीक्षण की सुविधा हेतु निम्नलिखित उपस्कर रखे गये हैं:

- यूनिवर्सल टेस्टिंग मशीन
- बेंड टेस्टिंग मशीन
- रॉकवेल हार्डनेस टेस्टर
- इलेक्ट्रिकल फर्नेस
- मेटलर्जिकल बेल्ट ग्राइंडर
- ड्रिलिंग मशीन
- एब्रेसिव कट-ऑफ मशीन
- स्टीरियोमाइक्रोस्कोप
- मेटलोग्राफिक ग्राइंडिंग व पॉलिशिंग मशीन
- मेटलर्जिकल माइक्रोस्कोप
- एचिंग सहायक सामग्री
- स्पेसिमेन माउंटिंग प्रेस
- एडी करेंट टेस्टर
- आटोमेटिक सी व एस एनलाइजर
- पी एच मीटर
- सैंपल टर्निंग लेथ
- सब-जीरो तापमान पर इम्पैक्ट टेस्टर
- स्टोरेज व फर्नीचर
- प्रोफाइल मापन प्रणाली
- प्रकाशक सहित आवर्धक लेंस
- एडी करेंट सॉर्टर
- कंप्यूटर टर्मिनल के माध्यम से प्रक्रिया नियंत्रण कंप्यूटर से आंकड़े की प्राप्ति

प्रयोगशाला में सी सी वी एम मॉनिटर और भट्ठी के चार्जिंग साइड के ट्रेकिंग हेतु सी सी वी एम कैमरा। मॉनिटर व कैमरा मिल की सी सी वी एम प्रणाली के अंतर्गत आते हैं।

इस मिल द्वारा उत्पादित स्ट्रक्चरल की गुणवत्ता अंतर्राष्ट्रीय मानकों पर खरे उतरेंगे। सतही गुणवत्ता इस तरह के उत्पाद के लिए अत्यंत आवश्यक होती है, जिसे इस मिल के द्वारा बखूबी प्राप्त किया जा सकता है। देश में प्रस्तावित मूलसंरचनात्मक विकास के दृष्टिगत इस मिल द्वारा उत्पादित स्ट्रक्चरल की माँग अत्यधिक होगी। ज्ञात हो कि आर आई एन एल की 6.3 मिलियन टन प्रतिवर्ष विस्तारण के अंतिम इकाई के रूप में नई स्ट्रक्चरल मिल का प्रवर्तन अप्रैल, 2015 में की गई।

खनन प्रक्रिया के दौरान पर्यावरण संरक्षण के उपाय

(जग्गय्यपेटा खान परिसर में स्कूली बच्चों के लिए आयोजित 'निबंध लेखन प्रतियोगिता' में प्रथम व द्वितीय पुरस्कार प्राप्त लेख)

(प्रथम पुरस्कार प्राप्त लेख)

- मास्टर विजय कुमार पाल -

बिजली उत्पादन और अन्य औद्योगिक उद्देश्यों के लिए कोयला महत्वपूर्ण जीवाश्म ईंधन है। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की अधिक कीमत के कारण कोयले से बिजली बनाना अधिक किफायती होता है। अत: बिजली का अधिकतम उत्पादन कोयले के उपयोग से किया जाता है। कोयला खनन और कोयला आधारित बिजली संयंत्रों को सबसे प्रदूषण वाला उद्योग माना जाता है। इसी संदर्भ में निम्नलिखित मुद्दों पर कुछ विचार प्रस्तुत हैं:

वायु प्रदूषण : कोयला खदानों में वायु प्रदूषण मुख्य रूप से मीथेन सल्फर डाईआक्साइड और नाइट्रोजन आक्साइड के साथ-साथ उत्सर्जित धूलकणों और गैसों के कारण होता है।

जल प्रदूषण : कोयला खदानों में जल प्रदूषण का मुख्य कारण पर्याप्त जलनिकास की अव्यवस्था और वातावरण में उड़ते धूलकणों के कारण होता है।

भूमि क्षरण : मानकों के अनुसार खनन नहीं करने से खनन क्षेत्र की भूमि अस्त-व्यस्त हो जाती है और वहाँ कंटीली झाड़ियों के सिवा कुछ नहीं उगता और जब तेज बारिश होती है, तब जमीन के स्वरूप में बदलाव आने लगती है। इसलिए खनन क्षेत्र में मानकों के अनुसार खनन करने व खनन के बाद उस जमीन पर मानकों के अनुसार ही विकास कार्य करने के प्रावधान का अनुपालन होना चाहिए।

ध्वनि प्रदूषण : खनन क्षेत्रों में ध्वनि प्रदूषण के मुख्य स्रोत भारी मशीनरी, वाहन, ड्रिल्लिंग मशीनें, विस्फोट और खनिज हैंड्लिंग के कन्वेयर आदि होते हैं। उपरोक्त सभी प्रदूषणों पर नियंत्रण हेतु कानून हैं और उन्हें लागू करने के लिए समय-समय पर विशेष जाँच अधिकारियों द्वारा जाँच भी की जाती है। ये जाँच अधिकारी राज्य एवं केंद्र सरकारों के विभिन्न विभागों से जुड़े होते हैं। यदि कोई खनन इकाई सरकारी निर्देशों का अनुपालन नहीं करता है तो इन अधिकारियों को इतना अधिकार दिया गया है कि वे अपने आदेश से प्रदूषण फैलाने वाली खनन कंपनी के प्रचालन को रोक सकते हैं। जाँच अधिकारियों द्वारा प्रदूषण नियंत्रण हेतु निर्धारित हर मापदंड के आंकड़ों का विश्लेषण किया जाता है और उपयुक्त दिशानिर्देश एवं आदेश जारी किये जाते हैं। संयंत्रों के लिए इन अधिकारियों के आदेश को मानना जरूरी होता है। इसी में खनन कंपनी वहाँ काम करने वाले लोग और आम नागरिकों की भलाई है।

- आठवीं कक्षा, जे.डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल
वी एस पी टाउनशिप, जग्गय्यपेटा

(द्वितीय पुरस्कार प्राप्त लेख)

- मास्टर बी वरप्रसाद -

भारत में चूनापत्थर के पर्याप्त भंडार हैं। चूनापत्थर का खनन पूरी तरह से ओपन पिट मेथड से किया जाता है। भारत में कोयले की खदानों को छोड़कर लगभग 70% चूनापत्थर और लौह अयस्क की खदानें खुले प्रकार की हैं। भारत में खुली खदानों में जिस प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल होता है, वह आम तौर पर वही होती है जो दूसरे देशों में इस तरह के निक्षेपों के परिचालनों में प्रयुक्त की जाती है। आम तौर पर खनन से धरती की सतह की मिट्टी हट जाती है, ठोस कचरा उत्पन्न होता है, जल निकास और अन्य कचरों के निपटारे की समस्या उत्पन्न होती है, वायु की गुणता प्रभावित होती है, ध्वनि प्रदूषण और सामाजिक-आर्थिक स्थिति में बदलाव आदि जैसे नुकसान होते हैं।

इसी प्रकार चूनापत्थर की खदानों में पर्यावरण संरक्षण हेतु खनन की उपयोगिता भूमि में सुधार हेतु पेड़-पौधे लगाए जा रहे हैं, भूमि का समतलीकरण किया जा रहा है, खनन क्षेत्र में मृदा-सुधार किया जा रहा है और शीघ्र भूमि सुधार हेतु उपयुक्त वनस्पतियाँ लगाई जा रही हैं।

यद्यपि खनन से बर्बाद हुई जमीन और सुधार की गई जमीन के बीच काफी अंतर होता है। खनन क्षेत्र की भूमि को पुन: उर्वर बनाने के लिए उस इलाके में निकलने वाले जैविक रूप से अपचयित होने वाले कचरे से भरा जाता है। जहाँ तक वायु प्रदूषण का संबंध है, खदान से उत्सर्जित धूल चाहे वह विस्फोट करने अथवा खनिज के आवागमन से निकला हो, उसे दबाने के लिए आम तौर पर पानी के फुहारे का इस्तेमाल किया जाता है। खुली खदानों से उड़ने वाले धूलकणों को एकत्र करने के लिए डस्ट एक्स्ट्रैक्टर भी लगाए जाते हैं।

जल प्रदूषण की रोकथाम नालियों का जाल बिछाकर और चेक डैम आदि बनाकर की जाती है। साथ ही ध्वनि प्रदूषण को स्रोत स्थान पर ही आवाज कम करके, शोर के मार्ग में बाधा खड़ी करके व भूमि के कंपन को नियंत्रित करके किया जाता है। खनन के कारण पर्यावरण को होने वाला नुकसान गंभीर चिंतन का विषय है। पर्यावरण प्रबंध योजना में इस बात पर पर्याप्त ध्यान दिया जाता है कि खनन के कारण पर्यावरण का कम से कम नुक्सान हो और खनन पश्चात पुन: यथास्थिति बन सके।

- दसवीं कक्षा
जे.डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल
वी एस पी टाउनशिप
जग्गय्यपेटा

मेरे जीवन का लक्ष्य

- सुश्री शुभांगी अहिरे -

कक्षा में प्राय: यह चर्चा होती रहती है कि तुम आगे चलकर क्या बनना चाहते हो या फिर क्या करना चाहते हो? तुम्हारा लक्ष्य क्या है? ...सुनकर बड़ा अजीब लगता है। भविष्य की मुट्ठी में क्या है, मैं अभी से कैसे बता दूँ? फिर भी कुछ लोग कहते हैं कि वे डॉक्टर बनना चाहते हैं। तो कुछ कहते हैं इंजीनियर बनना चाहता हूँ। मैं सोचूँ तो अलग क्या सोचूँ? ऐसा सोचकर मैंने अपनी सोच को बदला और फैसला लिया कि मैं बड़ी होकर सैनिक बनना चाहूँगी। यदि मुझे अवसर मिला तो मैं भारत की तीनों सेनाओं में से किसी में भी काम करना चाहूँगी। अब तो सेना में लड़कियों को कमीशन मिलने लगा है, जिससे मैं बहुत उत्साहित हूँ और समझती हूँ कि जिस देश की हवा में हम साँसें ले रहे हैं, जिसकी आबोहवा से हमारा समग्र विकास हो रहा है। जिस मिट्टी में खेलकूद कर पले-बढ़े हैं, उस देश की रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य तो होता ही है।

जब से इस मुद्दे पर मैंने कुछ सोचना शुरू किया है, तब से न जाने क्यों मेरी यह इच्छा और प्रबल होती जा रही है, मतलब यह कि देश के लिए कुर्बान होने की भावना अब मेरे रक्त में घुलमिल सी गई है। मेरे अधिकतर सहपाठी डॉक्टर, अध्यापक, इंजीनियर, वैज्ञानिक आदि बनने में गर्व सा महसूस करते हैं। लेकिन मैं एक अच्छे सैनिक के रूप में अपने देश की सुरक्षा करने में गर्व महसूस करती हूँ एवं इसके प्रति मेरे मन में अनुराग भर गया है। मैं यह मानने लगी हूँ कि भारत की सेना के लिए सेवाएँ देना केवल सम्मान का विषय ही नहीं, बल्कि यह एक राष्ट्र अभिमान का विषय है।

मैं मानती हूँ कि भारत के सारे उद्योग-धंधे, कल-कारखाने तथा अन्य सभी कारोबार सुचारु रूप से तभी चल सकते हैं, जब देश की सीमाएँ सुरक्षित हों। हमारा देश कई बार गुलाम बना है और उस गुलामी के दौर की कथाएँ जब भी मेरे कानों में पड़ती हैं, मेरे रोम-रोम में एक अजीब सी टीस उठती है। संभवत: यही वह कारण है, जिसने मुझे भारत की सेनाओं में जाने के लिए अभिप्रेरित किया है और यही भावना मुझे देश के लिए समर्पित करने में उद्वेलित करती रहती है।

मैं अपने मित्रों और रिश्तेदारों के समक्ष जब भी इस मुद्दे को उठाता हूँ, तब मुझे प्रोत्साहन तो मिलता है। लेकिन अनजाने में वे लोग खतरों की बातें बताकर मुझे हतोत्साहित करने की कोशिश भी कर देते हैं। मुझे यह भी बताया जाता है कि बाकी सेवाएँ भी तो देश सेवा ही हैं। फिर भी मुझे देश सेवा का सबसे उपयुक्त एवं चुनौतीपूर्ण कार्य सेना में भर्ती होकर देश सेवा करना ही लगता है। अब तो जब भी मैं किसी व्यक्ति को थलसेना, नौसेना अथवा वायुसेना की वर्दी में देखती हूँ, मेरा हाथ सम्मान से सैल्यूट करने के लिए उठ जाता है।

सैनिक बनकर अपने देश की रक्षा करना कठिन एवं खतरनाक हो सकता है। हो सकता है यह गौरवपूर्ण कैरियर बलिदान की भी माँग करे, हो सकता है इस कैरियर में कुछ व्यक्तिगत आनंद की कमी रह जाए या फिर पारिवारिक समस्याओं का सामना भी करना पड़े, लेकिन जिस जज्बे और सामाजिक सम्मान का इसमें आश्वासन है, उससे सारे आनंद की कमी समाप्त हो जाती है। मैं जानती हूँ कि जिस तरह भोजन का असली स्वाद वही ले सकता है, जिसने कठिन भूख और प्यास सहा हो। ठीक वही भूख और प्यास की तृष्णा सैनिक बनने में भी है।

अनुशासन मुझे बहुत प्रिय है और भारतीय सेना अपने अनुशासन के लिए विश्व प्रसिद्ध है। सैनिकों की बहादुरी तथा वीरता मुझे प्रेरणा देती है। एक सफल सैनिक बनना आसान नहीं होता, इसके लिए कई कठिन प्रशिक्षणों से गुजरना पड़ता है। सैनिक बनने के लिए स्वास्थ्य और शरीर सौष्ठव ठीक होना चाहिए।

मुझे यह प्रेरणा तब मिली, जब मैंने कई सैनिकों के कारगिल में शहीद होने की कहानियाँ सुनीं। इससे कितनी माताओं की गोद सूनी हो गई, कितने बच्चे अनाथ हो गए और न जाने कितनी नवविवाहिताएँ विधवा हो गईं। यह सचमुच गौरवशाली है। हम सभी को किसी न किसी दिन मौत का सामना तो करना ही होगा। परंतु मैं तो आन-बान-शान से ही मरना पसंद करूँगी। ईश्वर ने इस सुंदर संसार में हमें जरूर किसी उद्देश्य से भेजा होगा और उस उद्देश्य को पूरा करना मैं अपना परम कर्तव्य समझती हूँ।

लक्ष्य के बिना जीवन व्यर्थ होता है। इस संसार में जिस व्यक्ति ने अपने जीवन का लक्ष्य तय कर लिया है, वही अपनी मंजिल तक पहुँच सकता है और संसार में अपना और अपने माता-पिता का मस्तक गर्व से ऊँचा कर सकता है।

- कक्षा 12वीं
केंद्रीय विद्यालय
स्टील प्लांट इकाई, विशाखपट्टणम

बाल कविताएँ

जल जंगल जमीन

- सुश्री सुप्रिया -

जंगल जंगल आग लगी है
जलती देख जमीन।
इंद्रदेव के होश उड़ गए
कैसे करें यकीन
नदी तलैया ताल सूख गए।
तबीयत है गमगीन
जीव जंतु पशु पक्षी प्यासे
तड़पत जल बिन मीन।
उत्तराखंड देवों की भूमि है
जहाँ बाढ़ और भूकंप
आज लगी है आग विपिन में
जल बिन सब बे-दीन।
बिन पानी इतनी परेशानी
कैसे आग बुझाएँ
त्राहि त्राहि मच गई धरा पर
कोई तो राह सुझाए
बसा विशाखा सागर तट पर
जल है जहाँ अगाध।
पीने के जो काम न आये
इसका है अवसाद ।।
कम से कम तो आग बुझा दे
हे! सागर के पानी
जल जंगल और जमीन
के आज खतरे में अमर कहानी।

यकीन का स्वाद

गुण की मिठाई गुण ग्राहक नरेश हो,
धन की मिठाई कुछ दान-पुण्य कीजिए।
विद्या की मिठाई चतुराई संग गुप्त रहे
भोजन की मिठाई कुछ दही दूध लीजिए।।

प्रेम की मिठाई में हिताई अरु मिताई दोनों
नेम की मिठाई कुछ योग्य ध्यान कीजिए।
जीवन की मिठाई में भलाई संग बुराई भी है
सुबह शाम इसीलिए राम रस पीजिए।।

जिंदगी क्षणिक दैनिक मासिक वार्षिक भी है
तन मन धन पर गुरूर मत कीजिए।
बेटा बेटी बहू बीवी भाई और भतीजा पर
भाइयों भरोसा भरपूर मत कीजिए।।
विष पीकर कभी कभी लोग बच सकते हैं
नाहक किसी पर विश्वास मत कीजिए।
आस हो अकेले और अकेले चले जाओगे
झूठ साच झमेल का झांसा मत दीजिए।।

'सुप्रिया' की शुक्रिया इस दुनिया जहान को है
खुद और खुदा पर यकीन यारों कीजिए।।

- 11वीं कक्षा
केंद्रीय विद्यालय,
उक्कुनगरम, विशाखपट्टणम

पिता हैं तो

- सुश्री आकांक्षा कुमारी -

पिता जीवन हैं, संबल हैं, शक्ति हैं
पिता सृष्टि में निर्माण की अभिव्यक्ति हैं
पिता उंगली पकड़े बच्चे के सहारा हैं
पिता कभी कुछ खट्टा, कुछ खारा हैं।

पिता पालक हैं, पोषक हैं, परिवार के अनुशासक हैं
पिता धौंस से चलने वाले प्रेम के प्रशासक हैं
पिता रोटी हैं, कपड़ा हैं और मकान हैं
पिता छोटे से परिंदे के बड़े आसमान हैं।

पिता अप्रदर्शित अनंत प्यार हैं
पिता हैं तो बच्चों को इंतजार है
पिता से ही बच्चों के ढेर सारे सपने हैं
पिता हैं तो बाजार के सब खिलौने अपने हैं।

पिता से परिवार में प्रतिपल अनुराग है
पिता से ही माँ की बिंदी और सुहाग है
पिता सुरक्षा है अगर सिर पर हाथ है
पिता नहीं तो बचपन अनाथ है।

इसलिए पिता से बढ़कर अपना नाम करो
पिता का अपमान नहीं उनपर अभिमान करो
क्योंकि माँ-बाप की जगह कोई ले नहीं सकता
ईश्वर भी इनके आशीषों को काट नहीं सकता।

जीवन में किसी देवता का स्थान दूजा है
माँ-बाप की सेवा ही सबसे बड़ी पूजा है
वे खुशनशीब हैं माँ-बाप जिनके साथ होते हैं
क्योंकि माँ-बाप के आशीषों के हजारों हाथ होते हैं।

- 12वीं कक्षा
केंद्रीय विद्यालय, उक्कुनगरम
विशाखपट्टणम

आत्मसंयम

जैसे घोड़े को नियंत्रित करने के लिए लगाम का सहारा लिया जाता है, वैसे ही मन को नियंत्रित करने के लिए आत्मसंयम का सहारा लिया जाता है। अंतर बस इतना है कि लगाम दृष्टिगोचर है और संयम दृष्टिगोचर नहीं है, अर्थात आत्मसंयम एक अदृश्य बल है, जो मन को नियंत्रित रखता है या फिर यूँ कहें कि मन जैसे चंचल पक्षी को सीमाओं के भीतर ही उड़ान भरने के लिए मजबूर करने वाला बहेलिया आत्मसंयम कहलाता है।

योग में आत्मसंयम को स्वयं को प्यार करने वाली युक्ति की संज्ञा दी गई है। योग के अनुसार मनुष्य में संकल्प और संयम दोनों का होना नितांत आवश्यक है। संयम और संकल्प के अभाव में मनुष्य जीवन भर विचार, भाव और इंद्रियों का गुलाम बना रहता है और क्रोध, भय, हिंसा और व्याकुलता जैसे अनेक मानसिक विकारों का शिकार होकर जीवन जीता है और स्वयं अपने व समाज के विनाश का कारण बनता है। इसी तथ्य को भगवान बुद्ध ने कुछ इस प्रकार कहा है:

'खंती परमं तपो तितिक्खा,
निब्बाणं परमं वदंति बुद्धा।
नहीं पब्बजितो परूपघाती,
समणों होति परं विहठयंतो।।'

अर्थात शांति और संयम परम तप हैं, निर्वाण परम पद है। दूसरों का विनाश करने वाला प्रव्रजित नहीं हो सकता। दूसरों को दुखी करने वाला समण नहीं हो सकता।

वैदिक मंत्रों में भी इंद्रियों पर संयम रखने की बात कही गई है। इंद्रियों को आत्मा का औजार बताया गया है। इंद्रियों को आत्मा का सेवक बताया गया है। परमात्मा ने इन्हें इसलिए प्रदान किया है कि इनके माध्यम से आत्मा की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। सभी इंद्रियों का काम जीव को आनंद और उत्कर्ष प्रदान करना है। हालांकि इंद्रियों पर नियंत्रण रखने की बात भी शास्त्रों में कही गई है। इसका तात्पर्य यह है कि इंद्रियों पर से संयम को बिल्कुल हटाकर स्वेच्छाचारी अथवा चटोरी नहीं बनने देना चाहिए। अन्यथा समाज और धर्म के लिए संकट उत्पन्न हो सकता है।

मनोविज्ञान के अनुसार आत्मसंयम से मनुष्य मानसिक रूप से मजबूत और दृढ़ निश्चयी बनता है और उसके व्यवहार और प्रवृत्तियों में समाज सापेक्ष बदलाव आते हैं। आत्मसंयम को आलंबन देने वाली शक्ति को आत्मबल कहा जाता है। जिस मनुष्य में आत्मबल जितना अधिक होगा वह मनुष्य उतना ही आत्मसंयमित हो सकता है।

योग गुरुओं ने आत्मसंयम को मानसिक संयम, सांसारिक संयम और शारीरिक संयम जैसे तीन भागों में विभक्त कर रखा है। मानसिक संयम के अंतर्गत हमें समाज सापेक्ष रहकर अपने मन के भीतर उत्पन्न होने वाले संवेगों व मनोभावों पर पूर्ण नियंत्रण रखना पड़ता है। मानसिक आत्मसंयम को बनाए रखने के लिए मानव को काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद आदि जैसे मनोविकारों पर निरंतर नियंत्रण रखना होता है। अन्यथा इन मनोविकारों के प्रभाव में मनुष्य समाज की अपेक्षाओं के विपरीत कदम उठा सकता है। मानसिक मनोविकारों पर संयम के अभाव में मनुष्य के लिए शरीरिक और सांसारिक संयम रखना भी कठिन हो जाता है।

इसी प्रकार शास्त्रों में कहा गया है कि यह संसार मिथ्या है और संसार के सारे संबंध झूठे और स्वार्थपूर्ण हैं। अत: संसार में जीवन यापन करते समय मनुष्य को आत्म संयमित होकर संसार की मोहमाया से तटस्थ रहने की सलाह दी गई है, ताकि मनुष्य सांसारिक बंधनों से विमुक्त होकर जीवन जी सके। ऐसे ही शास्त्रों में शारीरिक संयम की बात भी कही गई है। इसके अनुसार हमें संयमित होकर खाने-पीने के साथ-साथ निद्रा और अन्य दैनिक क्रियाओं पर संयम रखने हेतु अपने व्यवहार को शास्त्र सम्मत बनाना चाहिए।

आत्मसंयम और हठ में एक बुनियादी अंतर है। हठ नकारात्मक हो सकता है, लेकिन आत्मसंयम सदैव सकारात्मक ही होता है। जैसे किसी व्यसन के वशीभूत नहीं होना आत्मसंयम है तो वहीं बार-बार मना करने के बावजूद भी किसी व्यसन को न छोड़ना हठ है। इसी प्रकार कभी-कभी आत्मसंयम और इच्छाओं के दमन को भी एक मान लिया जाता है। यह भी गलत अवधारणा है। आत्मसंयम लोक की विकृतियों से बचने का अवलंबन है और दमन लोक की विकृतियों में आसक्त मनोभावों का दमन है।

निष्कर्षत: आत्मसंयम हमें सुसंस्कृत बनाकर ज्ञान और शांति की ओर ले जाने के मार्ग को प्रशस्त करता है और हमें मानवीय मूल्यों की रक्षा हेतु अभिप्रेरित करता है। जो लोग आत्मसंयम नहीं हैं, वे समाज और मानवता को निरंतर कष्ट देते रहते हैं। अत: सांसारिक प्रलोभनों से बचने और वासनाओं को जीतने में आत्मसंयम हमें सहयोग देता है और साथ ही हमारे अंतर्मन में वासनाओं से बचने एवं अध्यात्मिक चिंतन की ओर गमन करने की शक्तियों का संचार करता है।

पहल

- श्रीमती श्वेता रानी -

यूँ तो केवल नवीन के घर में न रहने से ही लगता था, मानो कोई काम ही नहीं है और आज तो बच्चे भी कैंप गए हुए हैं। सवेरे की चाय लेकर विनीता टी.वी. खोलकर बैठ गई। सुबह की चाय वह रोज नवीन के साथ ही पीती थी और साथ में टी.वी. पर समाचार भी देख लेती थी। कुछेक खबरों पर दोनों बात भी करते, विवाद भी करते और हँसी-मजाक भी कर लेते। लेकिन सुबह की भागदौड़ के कारण अक्सर वह टी.वी. की खबरों का पूरा ब्यौरा नहीं देख पाती।

आज अनमने ढंग से चाय लेकर बैठ गई और टी.वी. खोलकर न्यूज चैनल लगा दी। चाय की चुस्कियों के साथ खबरें भी सुन रही थी। 'आज से पेट्रोल के दाम बढ़ेंगे..., फिर एक नया घोटाला?, भीषण सड़क दुर्घटना... आदि जैसी खबरें तो आम थीं। तभी 'चलती टैक्सी में एक नौ साल की बच्ची से बलात्कार और उसे सड़क किनारे फेंकने' की न्यूज ने उसके होश उड़ा दिए। समाचार उदघोषिका बता रही थी, 'बच्ची की हालत बहुत नाजुक है। अभी तक दोषियों का कोई सुराग नहीं मिल पाया है।' विनीता का रूह काँप गया। 'हे भगवान! ये क्या हो रहा है। रोज ऐसी खबरें आ रही हैं। क्या हैवानियत इस कदर बढ़ चुकी है कि नौ साल की बच्ची तक को...।' सोचकर विनीता का मन कसैला हो गया... और सुनना उसे बर्दाश्त नहीं हुआ। वह टी.वी. बंद करके बच्चों के कमरे में चली आई और दीवार पर लगी बच्चों की तस्वीरों को निहारने लगी।

बारह साल का मोहित अभी आठवीं और सात साल का मयंक तीसरी कक्षा में पढ़ रहा है। दोनों ही उसकी आँखों के तारे हैं। वह एक पल भी उनके बिना नहीं रह पाती। वह तो उन्हें इस कैंप के लिए भी नहीं भेजना चाह रही थी। मगर नवीन ने फोन पर कहा था कि 'कब तक उन्हें अपने आँचल से बांधे रखोगी? थोड़ा तो ढील दो, उन्हें। देखने दो..., समझने दो बाहर की दुनिया। जाने दो उन्हें।' और फिर बच्चों की जिद भी थी, जिसके आगे वह हार गई थी। फोन की घंटी से उसका ध्यान भंग हुआ। 'जरूर नवीन का फोन होगा...,' सोचकर वह फोन की तरफ दौड़ पड़ी। 'हैलो, हैलो बिन्नी... मैं सीमा बोल रही हूँ।' 'हाँ दीदी, बोलो। कैसी हो? जीजाजी और शेफाली कैसे हैं?'

'सब ठीक हैं। बिन्नी तूने आज न्यूज देखा क्या?', सीमा ने पूछा। 'हाँ देखा। क्यों, क्या हुआ?' विनीता ने उत्सुकता से पूछा। 'अरे तूने वो खबर देखी क्या, नौ साल की बच्ची के साथ...', सीमा ने फिर पूछा। 'हेडलाइन देखी थी दीदी, मगर बात क्या है, बताओ तो।' विनीता की उत्सुकता बढ़ती जा रही थी। 'तुझे याद है, मेरे पड़ोस में जो मिसेज माथुर रहती हैं..., अरे वही, जो बात-बात में अपनी बड़ाई करती रहती हैं...।' सीमा की बात बीच में काटकर विनीता कुछ याद करते हुए बोली, 'हाँ... हाँ... याद आया तो?'

सीमा आगे बताने लगी, 'सुनने में आया है कि वो नौ साल की बच्ची रिश्ते में उनकी भतीजी लगती है। सब लोग बड़े दुखी हैं, सब गहरे सदमे में हैं। मैं गई थी उनसे मिलने। लेकिन समझ में नहीं आया कि क्या बोलूँ, कैसे उन्हें सांत्वना दूँ...। थोड़ी देर रुककर चली आई।' 'ये तो सचमुच बहुत बुरा हुआ दीदी। इन दिनों इस तरह की घटनाएँ बढ़ने लगी हैं। तुझे तो कोई टेंशन नहीं बिन्नी। भगवान की कृपा से तुझे दोनों बेटे ही हैं। टेंशन की बात तो हम जैसे लोगों के लिए है, जिनकी बेटियाँ हैं।' 'अच्छा, चल फोन रखती हूँ अभी, बाद में बात करूँगी।' कहकर सीमा ने तो फोन रख दिया, मगर विनीता के कानों में सीमा के कहे अंतिम वाक्य गूँजते रहे। वह सोच में पड़ गई, 'क्या वाकई, यह विषय सिर्फ उन्हीं के लिए चिंताजनक है, जिनकी बेटियाँ हैं। क्या बेटों वाले माता-पिता के लिए यह चिंता का विषय नहीं है? आखिर ऐसा कुकर्म करने वाले किसी न किसी के तो बेटे होंगे।' दरवाजे की घंटी बजी। महरी आ गई थी। काम करते हुए जितनी तेजी से उसके हाथ चल रहे थे, उतनी ही तेजी से उसकी जुबान भी चल रही थी। 'क्या घोर कलियुग आ गया है मेमसाब। जवान छोकरी तो जवान छोकरी, आजकल बच्ची को भी नहीं छोड़ता है सब। आपने सुना क्या मेमसाब। एक बच्ची के साथ कुछ दरिंदे लोगों ने...।' विनीता ने सिर्फ 'हूँ' कहकर अपनी स्वीकृति दी। महरी बिना रुके बोलती जा रही थी, 'हमको भी अब डर लगता है मेमसाब। मेरी एक बिटिया भी है। स्कूल से आने के बाद इधर-उधर खेलने चली जाती है। उसका बाप तो एक नंबर का पियक्कड़ है। पीकर धुत्त पड़ा रहता है। मुझे घर पहुँचते-पहुँचते देर शाम हो जाती है। सोचती हूँ कल से उसको घर में बंद करके आऊँ।'

'तुम्हारा तो एक बेटा भी है न, रज्जो?' 'हाँ, मेमसाब, लेकिन उसके लिए हमको कोई चिंता नहीं है। लड़के की तरफ से हम निश्चिंत हैं', रज्जो ने कहा।

'क्यों रज्जो? बेटे की तरफ से निश्चिंत क्यों हो? वो भी तो इधर-उधर खेलने जाता होगा। जाने कैसे लड़कों से उसकी दोस्ती होगी? जाने वह उनकी संगत में अच्छी बातें

सीखता होगा या...।' विनीता के ऐसा कहने पर रज्जो जोर से हँसने लगी और बोली, 'अरे मेमसाब, लेकिन है तो वो लड़का ही न? उसके लिए तो कम से कम वैसा डर नहीं है न, जैसा बेटी के लिए रहता है।' अब मुस्कुराने की बारी विनीता की थी। वह यह सोचकर मुस्कुरा रही थी कि सिक्के के एक पहलू की तरफ ही रज्जो का ध्यान था, जबकि सिक्के के दूसरे पहलू को वह देखना ही नहीं चाहती थी। इसमें रज्जो की भी गलती नहीं है। यदि वह पढ़ी-लिखी होती तो शायद उस दिशा में सोच पाती, जिस दिशा में विनीता सुबह से सोच रही है।

काम खत्म करके रज्जो चली गई। विनीता भी नहा-धोकर तैयार हो चुकी थी। पूजा करते समय आज अनायास ही उसके मुँह से निकल पड़ा, 'हे भगवान मेरे बच्चों को सद्‌बुद्धि देना। उन्हें सही-गलत, अच्छे-बुरे की पहचान वाली सोच देना। अपनी इस प्रार्थना पर विनीता भी हैरान थी। नाश्ता कर चुकी तो अकेला घर उसे काटने को दौड़ रहा था।'

वह अपने अपार्टमेंट की पाँचवीं मंजिल की ओर चल पड़ी। वहाँ रजनी भाभी का घर था। रजनी भाभी उसकी सहेली जैसी थी। दोनों मिलतीं तो घंटों बातें करतीं। घर-परिवार से लेकर स्कूल-कालेज तक की बातें एक-एक कर निकलने लगतीं तो बस निकलती ही जातीं। एक ही अपार्टमेंट में रहने के कारण रोज एक बार दोनों का मिलना हो ही जाता। दरवाजे की घंटी बजाकर विनीता इंतजार करने लगी। रजनी ने दरवाजा खोला और बड़े प्यार से उसे अंदर ले गई। बैठक में ही रजनी के परिवार वाले टी.वी. पर सुबह से आ रही उसी रेप की खबर को देख रहे थे। रजनी की सास ने विनीता की तरफ देखते हुए कहा, 'आओ बेटा आओ। तुमने सुनी ये खबर। बेचारी बच्ची की हालत बहुत खराब है। पता नहीं बच पाएगी या नहीं। डॉक्टर तो पूरी कोशिश में लगे हैं। मगर उन हैवानों ने ऐसी दरिंदगी दिखाई है कि क्या कहें...? हे भगवान किसी दुश्मन को भी ये दिन न देखना पड़े। बेटी का दोष न होते हुए भी बेटी के कारण कितनी शर्मिंदगी उठानी पड़ती है। क्या कोई अपने लिए अब बेटी माँगेगा?' रजनी के ससुर बोल पड़े, 'उन कमीनों को तो सड़क पर खड़ा करके गोली मार देना चाहिए। हैवानियत की सारी हदें पार कर दीं उन्होंने। गिरफ्तार करेंगे, मुकदमा चलायेंगे, सालों-साल लग जायेंगे। जाने किस बात की पड़ताल करते हैं, किसकी गवाही माँगते हैं।'

यहाँ विनीता आई तो थी अपना मन हल्का करने। मगर इन बातों से उसके मन का बोझ बढ़ता जा रहा था। वह रजनी से बाद में आने को कहकर वहाँ से निकल पड़ी। घर पहुँची तो ध्यान आया कि आज सुबह से नवीन का फोन नहीं आया और न ही आज बच्चों से बात हो पाई। पहले उसने बच्चों से बात की। बच्चे काफी खुश लग रहे थे, उन्हें बहुत मजा आ रहा था। बच्चों से बात कर विनीता थोड़ी निश्चिंत हुई। नवीन का फोन नहीं लगा तो उसने 'मैसेज' भेजा नवीन के मोबाइल पर। मैसेज देखकर नवीन जरूर कॉल करेंगे। सुबह से विनीता के दिल में कशमकश चल रही है। कोई बात परेशान कर रही है। बचपन से ही विनीता अकेले में डरती है। इस समय भी उसे यूँ लग रहा था, जैसे कोई पीछे से उसे दबोचने आ रहा है, चौंक कर पीछे घूमती है, किसी को न पाकर चैन की सांस लेती है। क्या करे..., क्या करे..., टी.वी. खोले..., नहीं टी.वी नहीं खोलेगी, वही सब कुछ फिर से नहीं देखेगी, सीरियल में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं है। बिना खाए बेड पर लेट गई। आँख लग गई। 'वह अपने मायके जा पहुँची है, अपने कमरे में अकेले सो रही है...। घर में कोई नहीं है...। मम्मी-पापा गाँव गये हैं...। एक कमरे में भैया सो रहा है...। एक कमरे में चाचा जी...। सीमा दीदी कल आएगी...। उसे कोई पकड़ रहा है। कोई उसे अपनी ओर खींच रहा है..., नहीं...नहीं..., छोड़ दो मुझे..., बचाओ भैया बचाओ... कौन है, छोड़ दो मुझे...।' घबड़ाकर उठ बैठी विनीता। दरवाजे की घंटी लगातार बज रही है। उसे कुछ समझ में नहीं आया। लपककर दरवाजा खोलती है, सामने रजनी भाभी खड़ी है। वह उनसे लिपट जाती है, रोने लगती है। 'रजनी भाभी जानती है कि विन्नी को अकेले डर

लगता है...। रजनी भाभी और भी कुछ जानती है...। वह जानती है कि... कि...। 'क्या हुआ विन्नी, सो रही थी क्या?' 'हाँ भाभी, जरा आँख लग गई थी और कुछ डरावना सपना देख रही थी..., इसलिए डर गई।' अपने आपको संभालते हुए विनीता बोली। 'तूने खाना खा लिया?' 'नहीं।' 'चल हाथ-मुँह धो आ, साथ में खायेंगे।' खाते वक्त दोनों शांत थीं। एक दूसरे से नजरें मिल जातीं तो मुस्कुरा कर रह जातीं। रजनी समझ रही थी विनीता के दिल का हाल। आखिर इतनी लंबी चुप्पी रजनी ने ही तोड़ी, 'विन्नी क्या हुआ? परेशान हो क्या?' विनीता ने 'ना' में सिर हिला दिया। रजनी बोली, 'देख, कहती तो मुझे तू भाभी है, लेकिन मैं तेरी पक्की सहेली हूँ। इतना तो समझती ही हूँ कि तेरे दिल में कब, क्या चल रहा होता है। यह भी समझ रही हूँ कि तू सुबह का न्यूज देखकर परेशान है। मैं भी सुबह से उसी के बारे में सोच रही हूँ। समझ में नहीं आता किसे दोष दें? स्वयं को लड़की होने के लिए, दरिंदगी दिखाने वालों को, पुलिस को, प्रशासन को या फिर समाज को? शास्त्रों में लिखी बातें झूठी प्रतीत होती हैं। आज हमारे देश में नारियों के प्रति बढ़ रही हैवानियत को देखकर तो यही लगता है कि न यहाँ नारी की पूजा होती है और न ही देवताओं का वास होता है। हमारे समाज का लगातार पतन हो रहा है। अपने ही लोगों के बीच जब लड़कियाँ सुरक्षित नहीं हैं, तो कैसे कहें कि हम सभ्य हो रहे हैं? लेकिन भाभी, हम क्या ऐसे ही हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें और समाज, प्रशासन या पुलिस को दोष देते रहें। क्या इस समस्या का कोई समाधान नहीं। नहीं भाभी, ...कुछ तो उपाय जरूर होगा।'

खाना खाने के बाद भी दोनों बातें करती रहीं। रजनी ने टी.वी. खोल दिया। मासूम बच्ची के साथ दरिंदगी करने वाले दो युवक पकड़े जा चुके थे। ड्राइवर अभी भी फरार था। जनता अपना आक्रोश प्रकट करने के लिए जुलूस निकाल रही थी, प्रशासन और पुलिस के खिलाफ नारे लगा रही थी। गुनहगारों को तुरंत फाँसी पर चढ़ाने की माँग की जा रही थी। पुलिस उन्हें तितर-बितर करने के लिए उनपर लाठी चार्ज कर रही थी, आँसू जैसे आग के गोले छोड़े जा रहे थे। इसी बीच नवीन का फोन आ गया। विनीता नवीन से बात करने लगी। रजनी ने टी.वी बंद कर दिया और रसोई में चाय बनाने चली गई। जब तक वह चाय लेकर आई, तब भी विनीता बात ही कर रही थी। उसकी आवाज रुँधी हुई लग रही थी।

रजनी को पिछले महीने की घटना याद आ गई। ऐसी ही एक खबर देखकर विनीता विचलित हो गई थी। रात को अचानक सोते हुए वह चिल्लाने लगी थी, 'पापा बचाओ, भैया बचाओ..., मुझे चाचा पकड़ रहे हैं..., पापा... पापा बचाओ...।' नवीन उसे संभालने की कोशिश कर रहे थे, मगर वह उन्हें भी बार-बार धक्का दे रही थी। आखिर मोहित ने रजनी को फोन किया था, 'हैलो... आंटी, आप जल्दी आ जाइए। मम्मी की तबीयत बहुत खराब है।' रजनी और उसका पति अरुण दौड़े आए थे। विनीता की चीखें सुनकर रजनी सब समझ गई थी। उसने अरुण को इशारा किया कि दोनों बच्चों को वहाँ से हटा लें। विनीता को खींचकर अपने गले से लगा लिया था उसने, 'नहीं बिन्नी, कोई नहीं है। देखो मैं हूँ रजनी, नवीन भी है। चाचा नहीं हैं बिन्नी। देखो। वे नहीं पकड़ेंगे तुझे। हमने उन्हें भगा दिया यहाँ से। वे अब तुम्हें तंग नहीं करेंगे। शांत हो जाओ बिन्नी।' बहुत देर बाद विनीता शांत हो पाई थी। बाद में किसी ने इस घटना का जिक्र नहीं किया, मगर हाँ... सच्चाई सबको समझ में आ गई थी।

विनीता बात कर चुकी। आकर रजनी के पास बैठ गई। रजनी ने उसे अपने से लिपटा लिया। 'उफ, समझ में नहीं आता, आजकल पुरुषों को क्या हो गया है। लड़कियों, बच्चियों को अपनी हवस का शिकार बनाकर क्या साबित करना चाहते हैं। वे यह क्यों नहीं समझते कि ऐसी दरिंदगी करके वे सिर्फ औरत के शरीर को ही नहीं, बल्कि उसकी आत्मा को भी रौंद रहे हैं।'

अचानक विनीता बोलने लगी, 'जानती हैं भाभी। जब मोहित पैदा होने वाला था तो नवीन की बड़ी ख्वाहिश थी कि बेटी हो। मगर मैं भगवान से प्रार्थना करती थी कि मुझे बेटी न दें।' रजनी आश्चर्य से विनीता को देखने लगी। 'क्योंकि लोग लड़कियों को किस गंदी निगाह से देखते हैं, इसे मैंने झेला है भाभी...।' बोलकर विनीता फूट-फूटकर रोने लगी, 'इसलिए नहीं चाहती थी कि मेरी बेटी हो और वह भी लोगों की गंदी नजरों का शिकार बने..., काश आप समझ पातीं भाभी।' रजनी ने दोनों हाथों से विनीता का चेहरा थाम लिया और उसकी आँखों में झाँककर बोली, 'मैं समझ सकती हूँ विन्नी, जरूर समझ सकती हूँ, जिससे तू गुजर चुकी है..., क्योंकि... क्योंकि।' रजनी आगे कुछ नहीं बोल पाई। 'तो क्या आपके साथ भी...', विनीता अपना प्रश्न पूरा नहीं कर पाई। 'हाँ... विन्नी... मेरे साथ भी...।' रजनी अपना उत्तर पूरा नहीं दे पाई। मगर दोनों सहेलियाँ एक-दूसरे के दर्द को समझ गईं, क्योंकि दोनों एक ही दर्द से गुजर चुकी थीं।

रात को रजनी विनीता के घर ही उसके साथ रुक गई। दोनों की आँखों से नींद कोसों दूर थी। विनीता रजनी से कुछ कहना चाहती थी, मगर शायद वह समझ नहीं पा रही थी कि कैसे कहे। अगली सुबह दोनों फिर चाय लेकर टी.वी. के सामने बैठ गईं। आज भी वही, पुरानी खबर चल रही थी। साथ ही इस पर परिचर्चा भी चल रही थी कि लड़कियाँ अपना बचाव कैसे

करें। उन्हें बचाव के नये-नये तरीके बताये जा रहे थे। नये-नये हेल्पलाइन नंबर बताये जा रहे थे, साथ ही लड़कियों को क्या करना चाहिए, कैसे कपड़े पहनना चाहिए..., वगैरह... वगैरह। उफ, विनीता झल्ला गई, 'ये क्या हो गया है इन लोगों को? 'बलात्कार से बचो' की जगह 'बलात्कार मत करो' का संदेश देना चाहिए इन्हें। अभी भी यही बता रहे हैं कि लड़कियों को क्या करना चाहिए। जो लोग ऐसा घृणित काम करते हैं, उनके लिए कोई चेतावनी नहीं। आखिर ऐसा कुकर्म करने वाले किसी न किसी के तो बेटे होंगे। आज सबसे ज्यादा डर तो बेटों के माँ-बाप को होना चाहिए। कोई भी माँ-बाप अपने बच्चों को गलत संस्कार नहीं देते, चाहे लड़का हो या लड़की। पर समस्या यह है कि अब वे माँ-बाप से ज्यादा दोस्तों पर भरोसा करने लगे हैं। दोस्तों की बातें उन्हें 'प्रैक्टिकल' और माँ-बाप की बातें 'आइडियालिस्टिक' लगने लगी हैं। वैसे भी यह वह उम्र होती है, जब दिमाग से ज्यादा दिल की बात सुनने में अच्छा लगता है। दिमाग कितना भी कहे, इसे मत करो, यह उचित नहीं, मगर जब दिल कहता है, कर ले यार, अभी नहीं तो कभी नहीं, जैसी बातें रोमांचित करती हैं और दिल के आगे दिमाग हार जाता है। रजनी ध्यान से विनीता की बातें सुन रही थी। वह उसकी बातों से सहमत होते हुए बोली, 'हाँ, बिन्नी। लड़कों को, बल्कि पुरुषों को भी यह समझना होगा कि जिस प्रकार के व्यवहार की उम्मीद वे अपने परिवार की महिलाओं के लिए करते हैं, उन्हें भी दूसरी महिलाओं के साथ वही व्यवहार करना चाहिए। अपने दोस्तों की बहनों के साथ, अपने क्लास में पढ़ने वाली लड़कियों के साथ, अपने पड़ोस में रहने वाली लड़कियों के साथ शालीनता से पेश आना चाहिए। राह चलती लड़कियों को देखकर सीटी मारने, फब्तियाँ कसने और उनके साथ अभद्र व्यवहार करने से पहले सौ बार सोचें कि अगर यही सब कुछ उनके घर की लड़कियों के साथ हो रहा हो तो...? औरतों को उतनी ही इज्जत, उतना ही सम्मान दें, जितना वे अपने घर की महिलाओं को देते हैं। औरतों को अपनी दरिंदगी का शिकार बनाने से पहले एक बार तो सोचें कि उनके इस कुकृत्य से न सिर्फ उन्हें कठोर सजा मिल सकती है, बल्कि उनका परिवार, उनका गाँव, उनका समाज भी तो पूरी दुनिया के सामने शर्मसार होगा। उन्हें यह भी समझना होगा कि जिस लड़की के शरीर और आत्मा को वे अपनी वासना के लिए रौंद देते हैं, वह फिर कभी एक सामान्य जीवन जीने लायक भी नहीं रह जाती। क्या उनकी आत्मा उन्हें इस पाप के लिए धिक्कारती नहीं? दुनिया की नजरों में बेगुनाह साबित भी हो जाएँ, मगर क्या अपनी नजरों में गिर नहीं जाते? क्या वे चैन से रात को सो पाते हैं? यह सिर्फ पढ़े-लिखे या अनपढ़ लड़कों के समझने की ही बात नहीं, बल्कि यह बात चाचाजी जैसे पुरुषों को भी सोचनी-समझनी होगी, बिन्नी।'

'भाभी अब तक जो जैसा है, हम उसे बदल नहीं सकते। लेकिन अपनी भावी पीढ़ी को तो हम इस दिशा में सकारात्मक सोच-समझ दे ही सकते हैं। शुरुआत हमें पहले अपने घर से करनी होगी। पहले अपने बच्चों को समझाना होगा कि हाड़-माँस की बनी नारी सिर्फ आकर्षण का केंद्र या भोग-विलास की वस्तु नहीं है, बल्कि उन्हीं की तरह एक इंसान है, जिसे चोट भी लगती है और तकलीफ भी होती है। फिर आसपास पड़ोसियों और अपने दोस्तों-रिश्तेदारों के घर तक, अपने आसपास काम करनेवाले अनपढ़ या बेरोजगार लोगों, उनके बच्चों तक, घर में रहने वाले वृद्ध पुरुषों तक, बच्चों के स्कूलों तक... इस भावना को फैलाना होगा। उसके बाद यही लहर हमारे मुहल्ले, हमारे गाँव, हमारे शहर से होते हुए पूरे देश में फैलानी होगी भाभी।'

'लेकिन बिन्नी ये सब कैसे होगा? कौन करेगा?' 'हम करेंगे भाभी। मैं जानती हूँ, रास्ता लंबा है, और मंजिल भी दूर है, मगर बिना उस रास्ते पर चले हम मंजिल तक कैसे पहुँचेंगे। रास्ता तय करते-करते किसी न किसी दिन तो मंजिल हमारे कदम चूमेगी। हम करेंगे ये पहल भाभी और अपने घर से इसकी शुरुआत करेंगे। आज हम सिर्फ दो लोग हैं इसकी पहल करने के लिए, कल दो सौ होंगे..., परसों दो हजार और इस तरह यह पहल फैलेगी पूरे देश में। सोचिए भाभी। अगर हमारी भावी पीढ़ी की लड़कियों को एक भयमुक्त समाज में रहने का मौका मिले, जहाँ उन्हें हवस की दृष्टि से नहीं, सम्मान की दृष्टि से देखा जाए। जहाँ हर अकेली लड़की को रात के अंधेरे में उसके घर तक छोड़ आने के लिए हर अजनबी पुरुष या लड़का यह कहे कि 'डरो नहीं, मैं तुम्हें पूरी हिफाजत के साथ तुम्हारे घर पहुँचा दूँगा' और वास्तव में ऐसा ही हो, तब हमारी ये छोटी सी पहल कामयाब होगी। औरतों के प्रति सकारात्मक सोच रखने वाले समाज का निर्माण करने के लिए यह 'पहल' जरूरी है भाभी। हम समाज को यह समझायेंगे कि 'बलात्कार मत करो', ना कि यह सीख देंगे कि 'बलात्कार से बचो।' समाज की सोच को बदलना होगा, कहकर हर कोई अपना कर्तव्य समाप्त कर देता है। लेकिन इस दिशा में कोई तो पहल होनी चाहिए, किसी को तो यह पहल करनी चाहिए। आइए भाभी, हम करते हैं यह पहल।'

- क्वार्टर नं.503 बी
सेक्टर-6, उक्कुनगरम
विशाखपट्टणम-530032
मोबाइल: 9440448925

भारत में उभरता रक्षा क्षेत्र एवं इस्पात की भूमिका

- श्री चंद्रशेखर प्रसाद -

भारत सरकार द्वारा देश के रक्षा क्षेत्र को विदेशी पूँजी निवेश हेतु खोलने और 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम के माध्यम से भारत में बहुराष्ट्रीय कंपनियों व घरेलू कंपनियों को अपने उत्पादों के निर्माण के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। इन कार्यक्रमों का मुख्य लक्ष्य विदेशी निवेश को बढ़ावा, भारत में रोजगार सृजन और कौशल विकास करना है। इन 25 क्षेत्रों में से अंतरिक्ष के 74% और रक्षा के 49% को छोड़कर शेष सभी क्षेत्रों में 100% एफडीआई निवेश की अनुमति प्रदान की गई है।

इस कार्यक्रम से देश के जीडीपी विकास दर और कर राजस्व में वृद्धि की उम्मीद है। इस पहल का एक लक्ष्य उच्च गुणवत्ता मानकों को स्थापित करना और पर्यावरण पर प्रभाव को न्यूनतम करना भी है। इस कार्यक्रम से भारत में पूँजी और प्रौद्योगिकी निवेश को आकर्षित करने में भी मदद मिलेगी। प्रस्तुत लेख में रक्षा क्षेत्र पर इस नई पहल का प्रभाव और उसमें इस्पात उद्योग की भूमिका पर चर्चा की गई है।

भारतीय अर्थव्यवस्था विकासशील अर्थव्यवस्था से आगे बढ़कर अब विश्व की विकसित अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में अग्रसर है। इस प्रकार रक्षा क्षेत्र देश का काफी महत्वपूर्ण और दूरगामी परिणाम देने वाला क्षेत्र बनने वाला है। भारत को शक्तिशाली बनाने के लिए आवश्यक सुरक्षा उपकरणों का उपलब्ध होना जरूरी है। भारत सरकार की नीति इस क्षेत्र में काफी स्पष्ट है। इससे रक्षा उद्योग का देशीकरण होगा और उसे उन्नत तकनीक की प्राप्ति होगी। भारत के रक्षा उपकरणों में लगभग 50% की तकनीक पुरानी हो गयी है। अभी तक रक्षा उद्योगों में सार्वजनिक उपक्रमों को निजी क्षेत्र की तुलना में कम प्राथमिकता दी गई है। इस क्षेत्र में 'मेक इन इंडिया' जैसी नई पहल के महत्व को निम्न प्रकार से आंका जा सकता है।

1. भारत के पास विश्व की तीसरी सबसे बड़ी सैन्य शक्ति है।
2. 31.5% बजट आयात पर खर्च की जाती है।
3. जरूरत की 60% चीजें आयात की जाती हैं।
4. वर्तमान में देश का रक्षा बजट लगभग 2500 बिलियन है।

इस प्रकार हम देख रहे हैं कि आनेवाले वर्षों में रक्षा क्षेत्र में निम्न प्रकार की बढ़ोत्तरी की संभावना है :

1. रक्षा उत्पादन नीति 2011 के अनुसार विदेश में बने सामान की जगह भारत में बने सामान को प्राथमिकता दी जाती है। विदेशी सामान को भारत में बनाने की नीति भी सरल की गई है और उनका अनुरक्षण भारतीय भागीदारों द्वारा किए जाने का प्रावधान है।
2. जून 2014 में रक्षा उत्पादों के लिए लाइसेंस की नीति को सरल बनाया गया।
3. निजी क्षेत्रों की भागीदारी को बढ़ावा देने के उपाय तलाशे जा रहे हैं।
4. साथ ही इस क्षेत्र में अनुसंधान और विकास को प्राथमिकता दी जा रही है।

भारत में रक्षा क्षेत्र से संबंधित उत्पादों का उत्पादन करनेवाले प्रमुख सार्वजनिक व निजी उपक्रम एवं उन उत्पादों का विवरण निम्न प्रकार से है:

1. हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड - विमान और हेलीकॉप्टर
2. भारत इलेक्ट्रोनिक्स लिमिटेड - रक्षा से जुड़े इलेक्ट्रॉनिक उपकरण।
3. भारत एर्थ मूवर्स लिमिटेड - भारी वाहन
4. मझगांव डॉक लिमिटेड - पनडुब्बी, मिसाइल नौका, विध्वंसक और फ्रिगेट बोट आदि
5. गार्डन रीच शिप बिल्डर्स एंड इंजीनियर्स लिमिटेड - नेवी के लड़ाकू एवं अन्य जहाज
6. भारत डायनामिक्स लिमिटेड - मिसाइल, टारपीडो आदि
7. मिश्र धातु निगम लिमिटेड - वैमानिकी, अंतरिक्ष, परमाणु ऊर्जा आदि में प्रयुक्त होनेवाले धातु
8. गोवा शिपयार्ड लिमिटेड - मध्यम आकार और विशेष उपयोग के जहाज
9. टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स लिमिटेड - रक्षा उपकरणों का डिजाइन और निर्माण
10. लार्सेन एंड ट्युब्रो - मिसाइल प्रणाली आदि
11. किर्लोस्कर ब्रदर्स लिमिटेड - रक्षा क्षेत्र की आधारभूत संरचना
12. महेंद्रा डिफेंस सिस्टम्स - हल्के लड़ाकू वाहन और अन्य हथियार
13. अशोक लीलैंड - सशस्त्र बलों द्वारा प्रयोग में लाए जानेवाले विभिन्न वाहन

भारत में 12 विकास केंद्र बनाए जा रहे हैं, वहाँ आधुनिकतम कैड/कैम सुविधाएँ उपलब्ध रहेंगी। इनसे आयुध फैक्टरियों को अनुसंधान और विकास में काफी सहायता मिलेगी। इनमें यह जोर दिया जाएगा कि तकनीक न केवल आधुनिकतम हो, वरन लड़ाई में अक्सर इस्तेमाल करने लायक हो और सैनिकों को इससे मदद मिले। वर्तमान में भारत के पक्ष में सकारात्मक बात यह है कि ऐसी सुविधाओं का विकास करनेवाली विदेशी कंपनियाँ वैश्विक मंदी के चलते अपने उत्पाद और प्रौद्योगिकी बेचने की लालच में भारत के साथ व्यापार करने के लिए आतुर हैं और सकारात्मक ढंग से सहयोग कर रही हैं। इससे भारत में रक्षा उत्पादों के उत्पादन पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ने की संभावना है।

हालांकि आजादी के पहले भी भारत में सेना थी, लेकिन उस सेना का उपयोग अंग्रेज सरकार अपने नफा-नुकसान के आधार पर करती थी और तत्कालीन सैन्य हथियार बहुत ही पारंपरिक होने के कारण मुख्यत: उनका उत्पादन भारत में ही कर लिया जाता था। लेकिन बारूद, गोला और बंदूकों की तकनीक के ईजाद के बाद से सैन्य सामग्री उत्पादन करने और उसका व्यापार करने में दुनिया के कुछ देश बहुत आगे निकल गए और विवाद वाले देशों को आपस में लड़ाकर अपने हथियारों का खूब व्यापार किया। इस मामले में सोवियत रूस और संयुक्त राज्य अमेरीका का नाम सबसे आगे था। इन दोनों देशों ने रक्षा उपकरणों के उत्पादन से खूब धन कमाया।

आगे, हम यह देखने का प्रयास करेंगे कि बदली हुई नीति के फलस्वरूप देश के रक्षा क्षेत्र में घरेलू इस्पात उद्योग का क्या योगदान हो सकता है और इससे क्या-क्या फायदे हो सकते हैं तथा यह देश की अर्थव्यवस्था को कैसे प्रभावित कर सकता है?

देश की आर्थिक और सामरिक सुरक्षा के लिए घरेलू इस्पात उद्योग का काफी महत्व होता है और अच्छी बात यह है कि देश की सरकार और नीति निर्माताओं ने इस राष्ट्रीय सुरक्षा के मामले के संदर्भ में भारतीय इस्पात उद्योगों की भूमिका को समझा है। साथ ही मामले की संवेदनशीलता को देखते हुए मात्र 49% तक विदेशी निवेश के माध्यम से इस क्षेत्र में साझेदारी की अनुमति प्रदान करने का निर्णय लिया है। इससे इस्पात और रक्षा दोनों परस्पर पूरक बनेंगे और आपसी संवेदनशीलता को ध्यान में रखकर अपने विकास करने के अवसरों का सदुपयोग कर सकेंगे। यह बात भी यहाँ विशेष उल्लेखनीय है कि रक्षा क्षेत्र के लिए एयरक्राफ्ट, पनडुब्बी, मिसाइल, टैंक और विभिन्न प्रकार के हथियार आदि बनाने वाले उपरोक्त सूची के घरेलू उपक्रमों की कार्यक्षमता में विकास हो और इसके लिए इस्पात की आपूर्ति घरेलू उपक्रमों से हो - इसके लिए भी सरकार ने काफी प्रयास किया है।

जैसा कि हम जानते हैं, रक्षा क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं की प्रकृति विशेष प्रकार की होती है। अत: इन क्षेत्रों में अच्छी और विशिष्ट गुणवत्ता वाले इस्पात की जरूरत होती है और विशिष्ट गुणवत्ता वाले इस्पात के लिए भारतीय निर्माताओं को बाहर के देशों पर निर्भर रहना पड़े, यह हमेशा संभव नहीं है। इसीलिए भारतीय इस्पात उद्योगों की प्रौद्योगिकी का संवर्धन होना चाहिए। अच्छी बात यह है कि भारतीय इस्पात उद्योग इस मुहिम से जुड़ने में सक्षम हैं और जहाँ कहीं कमी है, वहाँ उसे पूरा करने का प्रयास भी कर रहे हैं। वर्तमान चुनौतियों का सामना करने हेतु भारतीय इस्पात उद्योग यथासंभव प्रयास कर रहे हैं। इसीलिए कई इस्पात उत्पादक कंपनियाँ अपनी इस्पात उत्पादन की तकनीक और प्रक्रियाओं में बदलाव कर रही हैं। उनका यह कदम इस्पात कंपनियों के साथ-साथ देश की अर्थव्यवस्था को भी मजबूत करने वाला है, क्योंकि विदेश पर निर्भर रहने से देश का इस्पात उद्योग और अर्थव्यवस्था दोनों ही नकारात्मक रूप से प्रभावित होते हैं।

इस्पात के फ्लैट रोल्ड, लंबे उत्पाद, कार्बन पाईप, ट्यूब, तार और अन्य उत्पादों के उपयोग से रक्षा क्षेत्र के बहुत से उपकरण बनाये जाते हैं। इसी प्रकार उच्च कार्बन और मिश्र इस्पात के उपयोग से कई महत्वपूर्ण उपकरण, मोटर वाहन, रक्षा मशीन,

कंटेनर आदि का निर्माण किया जाता है। फाइटर प्लेन, टैंक, लड़ाकू विमान और जमीन पर चलने वाले वाहनों में विशिष्ट श्रेणी के इस्पात का उपयोग बहुत अधिक मात्रा में होता है।

प्रयोग/हिस्सा	विशेष धातु प्रकार
जनरेटर	मैग्नेटिक/इलेक्ट्रोनिक
स्ट्रक्चर	स्टैनलेस इस्पात
ब्लेड	उच्च तापरोधी मिश्रधातु
रिंग	उच्च तापरोधी मिश्रधातु
शॉफ्ट	उच्च शक्ति मिश्रधातु इस्पात
विंग कंट्रोल	उच्च तापरोधी मिश्रधातु
पयलन असेंब्ली	स्टेनलेस इस्पात
गेयर असेंब्ली	उच्च शक्ति मिश्रधातु इस्पात
इंजन के घटक	उच्च तापरोधी मिश्रधातु इस्पात
इंजन पॉवर यूनिट	स्टेनलेस इस्पात
बोल्ट	मिश्रधातु इस्पात
रिवेट	जंगरोधी मिश्रधातु
लैंडिंग गेयर	स्टेनलेस इस्पात
इंजन के बेयरिंग	उच्च तापरोधी बेयरिंग इस्पात
गन बैरेल	मिश्रधातु इस्पात

यदि हम रक्षा उपकरणों के लिए विदेश से लाए गए इस्पात पर निर्भर रहते हैं तो निम्न समस्याएँ आ सकती हैं:

1. इसकी आपूर्ति हमेशा सुनिश्चित नहीं की जा सकती और कीमत निश्चित रूप से ज्यादा होगी।
2. विदेशी राजनीति और अर्थव्यवस्था में परिवर्तन से आपूर्ति बाधित होगी।
3. गुणवत्ता, डिजाइन और निष्पादन की समस्या हमेशा बनी रहेगी और देश की विदेशी मुद्रा के नुकसान के साथ-साथ हम आत्मनिर्भर नहीं हो पाएंगे।
4. इन्वेंटरी की समस्या, माल मिलने में ज्यादा समय लगना और रक्षा उपकरणों के निर्माण की अवधि बढ़ जाएगी।

इसलिए रक्षा क्षेत्र में प्रयुक्त किये जानेवाले इस्पात का उत्पादन देश में होना आवश्यक है और यह इस प्रकार होना चाहिए कि यथासंभव इसकी लागत विदेशों से लाए जानेवाले इस्पात की कुल कीमत से कम हो। अन्यथा देश में रक्षा सामग्रियों के उत्पादन से भी देश को कोई लाभ नहीं होगा। भारत में विदेशी पूँजी निवेश खासकर रक्षा क्षेत्र में पूँजी निवेश का मुख्य रास्ता उत्पादन भी है।

रक्षा और आयुध प्रणाली में किस प्रकार के इस्पात का उपयोग कहाँ-कहाँ होता है, इसे निम्न तालिका में देखा जा सकता है:

इस्पात उत्पाद का विवरण	प्रयोग का क्षेत्र
कोल्ड फिनिष्ड इस्पात बार	मिसाइल प्रणाली, मध्यम श्रेणी के हथियार, तोप के गोले का खोल, बंदूक की गोली का खोल
हॉट रोल्ड राऊंड बार	25 मिमि कारतूस के खोल, लड़ाई और अभ्यास के लिए गोला बारूद जमीनी
प्लेट	वाहन, टैंक, पानी के जहाज
इस्पात के तार	टो मिसाइल
कार्बन इस्पात और अन्य धातुओं के साथ मिश्रधातु	नौसेना के जहाज
विशेष बार 5/16"	टैंक ट्रैक पिन

लड़ाकू विमानों में जिस तरह लड़ाकू विमानों के कल-पुर्जो में इस्पात और अन्य धातुओं का काफी प्रयोग हमने ऊपर की तालिका में देखा है, उसी प्रकार मिसाइल, हेलीकॉप्टर, टैंक, पनडुब्बी, नौसेना के जहाज, जमीनी वाहनों आदि में भी इस्पात का बहुत ज्यादा प्रयोग होता है।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि इस्पात के बिना रक्षा क्षेत्र के उपकरण नहीं बन सकते और देश की रक्षा विश्वसनीय तरीके से करने के लिए रक्षा उपकरणों को देश में बनाना होगा और उनमें देश में ही बने इस्पात को प्रयोग में लाना होगा। इससे इस्पात उद्योग की प्रगति होगी, देश का आर्थिक विकास होगा, विदेशी मुद्रा की बचत होगी, लोगों को रोजगार मिलेगा और हमारी सुरक्षा दूसरों पर निर्भर नहीं होगी। रक्षा क्षेत्र में 'मेक इन इंडिया' के साथ-साथ इस्पात उत्पादन में 'मेक इन इंडिया' देश के व्यापक विकास में सहायक होगा।

- सहायक महाप्रबंधक
डी एन डब्ल्यू विभाग
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम
मोबाइल:+91 8008088116

आओ भाषा सीखें

(हिंदी और तेलुगु साथ-साथ सीखें)

मनुष्य की जिंदगी तनावपूर्ण बनती जा रही है। इससे राहत पाने के लिए अनेकों उपाय किये जा रहे हैं। उन्हीं उपायों में से योग भी एक है। **21** जून को पूरे विश्व ने 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' मनाया और इसकी महत्ता को संचार के सभी माध्यमों से जन-जन तक पहुँचाने की कोशिश की गई। 'सुगंध' परिवार भी इस अभियान से जुड़ते हुए निम्नलिखित संवाद आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा है। आशा है कि पाठक हमारे इस प्रयास से लाभान्वित होंगे।

सोनू : अरे मोनू, जानते हो **21** जून की विशेषता क्या है?

సోనూ : అరే మోనూ, జాన్‌తే హో 21 జూన్ కీ విశేషతా క్యా హై?

సోనూ : మోనూ, 21 జూన్ న విశేషమేంటో తెలుసా?

सोनू : मोनू, **21** जून न विशेषमेंटो तेलुसा?

मोनू : हाँ जानता हूँ, **21** जून वर्ष का सबसे बड़ा दिन होता है।

మోనూ : హాఁ జాన్‌తా హూఁ, 21 జూన్ వర్ష్ కా సబ్‌సే బడా దిన్ హోతా హై.

మోనూ : అవును తెలుసు, 21 జూన్ సంవత్సరంలో అన్ని రోజులకంటే పెద్దరోజు.

मोनू : अवुनु तेलुसु, **21** जून संवत्सरंलो अन्नि रोजुलकंटे पेद्दरोजु।

सोनू : वह कैसे?

సోనూ : వహ్ కైసే?

సోనూ : అదెలాగ?

सोनू : अदेलागा?

मोनू : क्योंकि इस दिन, दिन का समय चौदह घंटे का होता है और रात का समय **10** घंटे का।

మోనూ : క్యోంకి ఇస్ దిన్, దిన్ కా సమయ్ చౌదహ్ ఘంటే కా హోతా హై ఔర్ రాత్ కా సమయ్ 10 ఘంటే కా.

మోనూ : ఎందుకంటే ఈరోజు పగలు 14 గంటల పాటు ఉంటే రాత్రి 10 గంటలు ఉంటుంది.

मोनू : एंदुकंटे ईरोजु पगलु **14** गंटलपाटु उंटे रात्रि **10** गंटलु उंटुंदि।

सोनू : मैं भी एक विशेषता जानता हूँ। इसी दिन पूरे विश्व में 'योग दिवस' भी मनाया जाता है।

సోనూ : మై భీ ఏక్ విశేషతా జాన్‌తా హూఁ. ఇసీ దిన్ పూరే విశ్వ్ మేఁ 'యోగ్ దివస్' భీ మనాయా జాతా హై.

సోనూ : నాకు కూడా ఒక విషయం తెలుసు. ఈరోజునే ప్రపంచమంతటా 'యోగా డే' జరుపుకోబడుతుంది.

सोनू : नाकु कूडा ओक विषयम् तेलुसु। ईरोजुने प्रपंचमंतटा 'योगा डे' जरुपुकोबडुतुंदि।

मोनू : ऐसा कब से यार?

మోనూ : ఐసా కబ్ సే యార్?

మోనూ : అదెప్పటినుంచి?

मोनू : अदेप्पटिनुंचि?

सोनू : संयुक्त राष्ट्र संघ ने प्रत्येक वर्ष **21** जून को पूरे विश्व में 'योग दिवस' मनाने का निर्णय लिया है।

మోనూ : సంయుక్త రాష్ట్ర సంఘ్ నే ప్రత్యేక్ వర్ష్ 21 జూన్ కో పూరే విశ్వ్ మేఁ 'యోగ్ దివస్' మనానే కా నిర్ణయ్ లియా హై.

సోనూ : అమెరికా సంయుక్త రాష్ట్రాలు ప్రతి సంవత్సరం 21 జూన్ న ప్రపంచమంతటా 'యోగా డే' జరపాలని నిర్ణయించాయి.

सोनू : अमेरिका संयुक्त राष्ट्रालु प्रति संवत्सरम् **21** जून न प्रपंचमंतटा 'योगा डे' जरपालनि निर्णयिंचायि।

मोनू : यह तो हमारे देश के लिए गौरव की बात है यार।

మోనూ : యహ్ తో హమారే దేశ్ కే లియే గౌరవ్ కీ బాత్ హై యార్.

మోనూ : ఇది మన దేశానికి గౌరవప్రదమైన విషయం.

मोनू : इदि मन देशानिकि गौरवप्रदमैन विषयम्।

सोनू : हाँ, माननीय प्रधानमंत्री महोदय के प्रयास से यह संभव हो पाया है। लेकिन इसके फायदे क्या हैं?

సోనూ : హాఁ, మాననీయ ప్రధానమంత్రి మహోదయ్ కే ప్రయాస్ సే యహ్ సంభవ్ హో పాయా హై. లేకిన్ ఇస్‌కే ఫాయ్‌దే క్యా హైఁ?

సోనూ : అవును, గౌరవనీయులైన ప్రధానమంత్రి గారి ప్రయత్నం వలన ఇది సాధ్యమైంది. కాని దీనివలన లాభమేంటి?
సోనూ : అవును, గౌరవనీయులైన ప్రధానమంత్రి గారి ప్రయత్నమ్ వలన ఇది సాధ్యమేంది। కాని దీనివలన లాభమేంటి?
मोनू : यार, योग में अनेकों आसन होते हैं।
మోనూ : యార్, యోగ్ మేఁ అనేకోఁ ఆసన్ హోతే హైఁ.
మోనూ : యోగాలో చాలా ఆసనాలు ఉంటాయి.
मोनू : योगालो चाला आसनालु उंटायि।
सोनू : वह तो मैं जानता हूँ और इनके अभ्यास से शरीर और मन स्वस्थ रहते हैं।
సోనూ : వహ్ తో మైఁ జాన్‌తా హూఁ ఔర్ ఇన్‌కే అభ్యాస్ సే శరీర్ ఔర్ మన్ స్వస్థ్ రహ్‌తే హైఁ.
సోనూ : అది నాక్కూడా తెలుసు, ఇంకా వీటిని అభ్యసించడం వలన శరీరం, మనస్సు ఆరోగ్యంగా ఉంటాయి.
सोनू : अदि नाक्कूडा तेलुसु, इंका वीटिनि अभ्यसिंचडम् वलन शरीरम्, मनस्सु आरोग्यंगा उंटायि।
मोनू : ऐसा इसलिए कि योग के अभ्यास में शरीर के अंगों का स्ट्रेचिंग होता है।
మోనూ : ఐసా ఇస్‌లియే కి యోగ్ కే అభ్యాస్ మేఁ శరీర్ కే అంగోఁ కా స్ట్రెచింగ్ హోతా హై.
మోనూ : ఎందుకంటే యోగాభ్యాసం వలన శరీర అవయవాలు సాగుతాయి.
मोनू : एंदुकंटे योगाभ्यासम् वलन शरीर अवयवालु सागुतायि।
सोनू : इतना ही नहीं, इससे पाचन शक्ति बढ़ती है और छोटी-मोटी बीमारियाँ यूँ ही खत्म हो जाती हैं।
సోనూ : ఇత్‌నా హీ నహీఁ, ఇస్‌సే పాచన్ శక్తి బఢ్‌తీ హై ఔర్ ఛోటీ-మోటీ బీమారియాఁ యూఁ హీ ఖత్మ్ హో జాతీ హైఁ.
సోనూ : అంతే కాదు, దీనివలన జీర్ణ వ్యవస్థ బలపడుతుంది, ఇంకా చిన్న-చిన్న రోగాలు ఇట్టే తగ్గిపోతాయి.
सोनू : अंते कादु, दीनिवलन जीर्ण व्यवस्थ बलपडुतुंदि, इंका चिन्न-चिन्न रोगालु इट्टे तग्गिपोतायि।
मोनू : लेकिन यार! एक या दो दिन इनके अभ्यास से फायदा नहीं होता।
మోనూ : లేకిన్ యార్! ఏక్ యా దో దిన్ ఇన్‌కే అభ్యాస్ సే ఫాయిదా నహీఁ హోతా.
మోనూ : కానీ! ఒకటి, రెండు రోజులు యోగాభ్యాసం వలన ఫలితం ఉండదు.
मोनू : कानी! ओकटि, रेंडु रोजुलु योगाभ्यासम् वलन फलितम् उंडदु।
सोनू : यदि तुम इसका फायदा लेना चाहते हो तो, तुम्हें रोज इसके अभ्यास की आदत डालनी पड़ेगी।
సోనూ : యది తుమ్ ఇస్‌కా ఫాయిదా లేనా చాహ్‌తే హో తో, తుమ్హేఁ రోజ్ ఇస్‌కే అభ్యాస్ కీ ఆదత్ డాల్‌నీ పడేగీ.
సోనూ : మంచి ఫలితం కావాలనుకుంటే నువ్వు రోజూ యోగాభ్యాసం చేయడం అలవాటు చేసుకోవాలి.
सोनू : मंचि फलितम् कावालनुकुंटे नुव्वु रोजू योगाभ्यासम् चेयडम् अलवाटु चेसुकोवालि।
मोनू : आजकल बच्चों से लेकर सभी किसी न किसी तनाव से परेशान हैं।
మోనూ : ఆజ్‌కల్ బచ్చోఁ సే లేకర్ సభీ కిసీ న కిసీ తనావ్ సే పరేషాన్ హైఁ.
మోనూ : ఈరోజులలో పిల్లలనుంచి పెద్దవాళ్ళ వరకూ అందరూ ఏదో రకమైన ఒత్తిడితో బాధపడుతూనే ఉన్నారు.
मोनू : ईरोजुललो पिल्ललनुंचि पेद्दवाल्ल वरकू अंदरू एदो रकमैन ओत्तिडितो बाधपडुतूने उन्नारु।
सोनू : मैं तो चाहता हूँ कि स्कूलों में बच्चों को योग भी एक विषय के रूप में पढ़ाया जाय।
సోనూ : మైఁ తో చాహ్‌తా హూఁ కి స్కూలోఁ మేఁ బచ్చోఁ కో యోగ్ భీ ఏక్ విషయ్ కే రూప్ మేఁ పఢాయా జాయ్.
సోనూ : నేనైతే స్కూల్‌లో పిల్లలకు యోగా కూడా ఒక విషయంలా నేర్పించాలని కోరుకుంటున్నాను.
सोनू : नेनैते स्कूललो पिल्ललकु योगा कूडा ओक विषयंला नेर्पिचालनि कोरुकुंटुन्नानु।
मोनू : इससे बच्चे तनाव मुक्त होकर पढ़ सकेंगे।
మోనూ : ఇస్‌సే బచ్చే తనావ్ ముక్త్ హోకర్ పఢ్ సకేంగే.
మోనూ : దీనివలన పిల్లలు ఒత్తిడికి లోను కాకుండా చదువుకోగలుగుతారు.
मोनू : दीनिवलन पिल्ललु ओत्तिडिकि लोनु काकुंडा चदुवुकोगलुगुतारु।
सोनू : और विद्यार्थी जीवन में ही उन्हें योग के अभ्यास की आदत पड़ जाए, तो बेहतर होगा।
సోనూ : ఔర్ విద్యార్థి జీవన్ మేఁ హీ ఉన్హేఁ యోగ్ కే అభ్యాస్ కీ ఆదత్ పడ్ జాయే, తో బెహతర్ హోగా.
సోనూ : ఇంకా విద్యార్థి దశ లోనే వాళ్ళకు యోగాభ్యాసం అలవాటు చేస్తే బాగుంటుంది.

सोनू : इंका विद्यार्थि दश लोने वाल्लकु योगाभ्यासम् अलवाटु चेस्ते बागुंटुंदि।
मोनू : ठीक कहते हो, इससे वे जीवन पर्यंत इसका अभ्यास जारी रख सकेंगे।
మోనూ : ఠీక్ కహ్‌తే హో, ఇస్‌సే వే జీవన్ పర్యంత్ ఇస్‌కా అభ్యాస్ జారీ రఖ్ సకేంగే.
మోనూ : నిజమే, దీనివలన జీవితాంతం వాళ్ళు యోగ సాధన చేయగలుగుతారు.
మోనూ : నిజమే, దీనివలన జీవితాంతమ్ వాల్లు యోగ సాధన చేయగలుగుతారు।
సోనూ : मैंने सुना है कि हमारे मुहल्ले में भी योग सिखाया जा रहा है।
సోనూ : మైఁనే సునా హై కి హమారే ముహల్లే మేఁ భీ యోగ్ సిఖాయా జా రహా హై.
సోనూ : మన పరిసరాలలో కూడా యోగా నేర్పిస్తున్నారని విన్నాను.
సోనూ : మన పరిసరాలలో కూడా యోగా నేర్పిస్తున్నారని విన్నాను।
మోనూ : यार मैं तो नहीं जानता।
మోనూ : యార్ మైఁ తో నహీఁ జాన్‌తా.
మోనూ : అరే నాకు తెలీదే.
మోనూ : అరే నాకు తెలీదే।
సోనూ : कोई योग गुरु आ रहे हैं, जो सवेरे 5 बजे से 6 बजे तक लोगों को प्रशिक्षण देते हैं।
సోనూ : కోయీ యోగ్ గురూ ఆ రహే హైఁ, జో సవేరే 5 బజే సే 6 బజే తక్ లోగోఁ కో ప్రశిక్షణ్ దేతే హైఁ.
సోనూ : ఎవరో యోగా నేర్పే గురువుగారు వస్తున్నారు, ఉదయం 5 గంటలనుండి 6 గంటలవరకు నేర్పుతున్నారు.
సోనూ : ఎవరో యోగా నేర్పే గురువుగారు వస్తున్నారు, ఉదయమ్ 5 గంటలనుండి 6 గంటలవరకు నేర్పుతున్నారు।
మోనూ : तब तो हम भी जायेंगे।
మోనూ : తబ్ తో హమ్ భీ జాయేంగేఁ.
మోనూ : అయితే మనం కూడా వెళ్దాం.
మోనూ : అయితే మనం కూడా వెల్దామ్।
సోనూ : हाँ यार, सवेरे सवेरे योगाभ्यास से शरीर दिन भर चुस्त रहता है।
సోనూ : హాఁ యార్, సవేరే సవేరే యోగాభ్యాస్ సే శరీర్ దిన్ భర్ చుస్త్ రహ్‌తా హై.
సోనూ : అవును, ఉదయాన్నే యోగాభ్యాసం వలన శరీరం రోజంతా చురుగ్గా పనిచేస్తుంది.
సోనూ : అవును, ఉదయాన్నే యోగాభ్యాసమ్ వలన శరీరమ్ రోజంతా చురుగ్గా పనిచేస్తుంది।
మోనూ : यार, यह तो मैं भी मानता हूँ।
మోనూ : యార్, యహ్ తో మైఁ భీ మాన్‌తా హూఁ.
మోనూ : అవును, నేను కూడా ఒప్పుకుంటాను.
మోనూ : అవును, నేను కూడా ఒప్పుకుంటాను।
సోనూ : तो देर किस बात की।
సోనూ : తో దేర్ కిస్ బాత్ కీ.
సోనూ : అయితే ఆలస్యమెందుకు.
సోనూ : అయితే ఆలస్యమేందుకు।
మోనూ : हाँ, हम कल से योग सीखेंगे।
మోనూ : హాఁ, హమ్ కల్ సే యోగ్ సీఖేంగే.
మోనూ : అవును, మనం రేపటినుండి యోగా నేర్చుకుందాం.
మోనూ : అవును, మనమ్ రేపటినుండి యోగా నేర్చుకుందామ్।
సోనూ : जरूर।
సోనూ : జరూర్.
సోనూ : తప్పకుండా.
సోనూ : తప్పకుండా।

- प्रबंधक (राजभाषा), राजभाषा विभाग
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र
मोबाइल: +91 9866321109

हिंदी कार्यशाला व हिंदी दिवस कार्यक्रम

मुख्यालय

संगठन के तकनीकी प्रशिक्षण संस्थान में 16, 17 व 18 मई को तीन एक-दिवसीय हिंदी कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। इनमें विभिन्न विभागों से 56 प्राधिकारियों ने भाग लिया। इन्हें राजभाषा नीति, हिंदी व्याकरण, प्रशासन एवं वित्तीय शब्दावली आदि की जानकारी देते हुए अनुवाद का अभ्यास कराया गया।

बैंगलुरु

बैंगलुरु के शाखा विक्री कार्यालय में 16 जून को हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के सहायक निदेशक श्री एम एम भांडेकर ने अतिथि वक्ता के रूप में प्रतिभागियों को राजभाषा के प्रयोग की आवश्यकता, पत्राचार के विभिन्न रूपों एवं उनमें हिंदी के प्रयोग की जानकारी दी। इस अवसर पर वरिष्ठ शाखा प्रबंधक श्री एस के जेना ने अतिथि वक्ता श्री एम एम भांडेकर का पुष्पगुच्छ से अभिनंदन किया और उनके प्रति आभार व्यक्त किया।

जग्गय्यपेटा

जग्गय्यपेटा खान में 23 से 25 जून तक हिंदी कार्यक्रम आयोजित किये गये। कार्यक्रम में कर्मचारियों को हिंदी के प्रयोग, कंप्यूटर में यूनिकोड का प्रशिक्षण देने के साथ-साथ उनके लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। साथ ही खान कार्यालय में पहली बार स्कूली बच्चों के लिए हिंदी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। सहायक महाप्रबंधक (खान) श्री शिव प्रसाद और उनकी टीम ने कार्यक्रम के सफल आयोजन में भरपूर सहयोग दिया। प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती जे रमादेवी एवं वरिष्ठ सहायक (राजभाषा) श्री जी आर ए नायुडु ने कार्यक्रम का संचालन किया।

कोच्चि

कोच्चि शाखा विक्री कार्यालय में 28 जून को हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। कोच्चि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की सहायक निदेशक श्रीमती एम सी शीला ने प्रतिभागियों को प्रयोजनमूलक हिंदी, हिंदी व्याकरण एवं कार्यालय में प्रयुक्त होनेवाली टिप्पणियों की जानकारी दी। कार्यक्रम में सहायक महाप्रबंधक (विपणन) श्री जी अजीत एवं शाखा कार्यालय के शेष कर्मचारी उपस्थित थे।

फरीदाबाद

फरीदाबाद शाखा विक्री कार्यालय में 30 जून को हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं राजभाषा विभाग के सेवानिवृत्त सहायक निदेशक श्री लेखराज कपूर ने प्रतिभागियों को राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अंतर्गत आनेवाले विभिन्न कागजातों में हिंदी के प्रयोग की अनिवार्यता का उल्लेख किया। इस अवसर पर वरिष्ठ शाखा प्रबंधक श्री संजय गर्ग, उप प्रबंधक (स्टॉफ) श्री धर्मपाल अरोड़ा एवं शेष सभी कर्मचारियों का सहयोग उल्लेखनीय रहा।

जरा गौर करें

वर्ष **1937** जब देश आजाद नहीं था, अविभाजित पंजाब प्रांत के हिसार जिले में एक बालक का जन्म हुआ। बालक बड़ा होकर आजाद भारत की फौज में भर्ती हो गया। लेकिन बचपन से ही उसका मन पहलवानी में रमा हुआ था। उसने फौज में जाकर अपनी पहलवानी को और निखार देना शुरु किया। भारतीय सेना ने भी उस जवान के फन को माँजने में खूब मदद की और एक दिन वह पहलवान सैनिक कुश्ती में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए एशियाई खेल में पहुँच गया।

माँ भारती के वीर जवान ने कुश्ती में उस समय भारत के लिए स्वर्ण पदक जीता, जब भारत को अंतर्राष्ट्रीय खेलों में बहुत ही कम पदक मिलते थे। एशियाई खेलों की प्रतियोगिता से कुश्ती का स्वर्ण पदक लेकर, यह लंबे डीलडौल और आकर्षक रूप रंग वाला जवान वापस जब अपने वतन पहुँचा तो खेल प्रेमियों और सरकार ने उसे सर आँखों पर बिठा लिया और कुश्ती की दुनिया में यह नौजवान चाँदगी राम के नाम से प्रसिद्ध हो गया। बाद में भारत सरकार ने उसे अर्जुन अवार्ड तथा पद्मश्री सम्मान से अलंकृत किया।

सेना से सेवानिवृत्त होने के बाद पद्मश्री चाँदगी राम ने भारतीय कुश्ती जगत में सबको चौंकाने वाला कदम उठाया। कुछ विरोधों के बावजूद उन्होंने महिलाओं को कुश्ती सिखाना आरंभ किया। उन्होंने बकायदा अखाड़ा स्थापित किया और अपनी बेटी सोनिका और कई बार के भारत केसरी संजय कुमार सहित कई नामी गिरामी पहलवानों को कुश्ती सिखाई। बाद में वे मास्टर चाँदगी राम के नाम से विख्यात हुए।

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
RASHTRIYA ISPAT NIGAM LIMITED
VIZAG STEEL
Pride of Steel